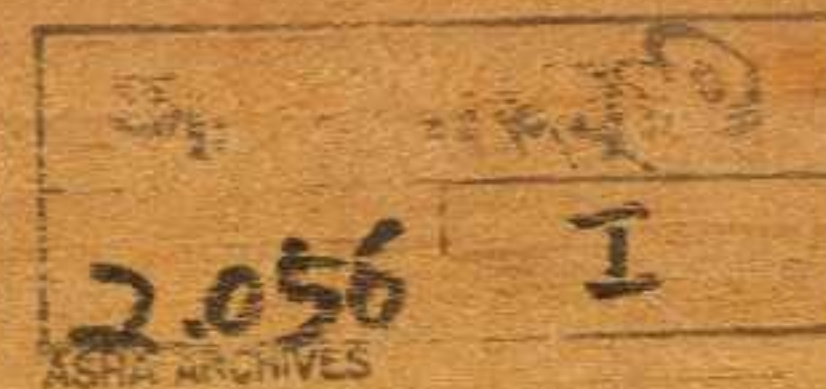




ASHA ARCHIVES



संवेत् ५३ मिनि आव
गशुक्ले ५३३ वारक
दिन मोहर २५) मोहन
मुके वेटा को उधार दि
या ॥ अउर मोहर २॥
दिया आवगाशुक्ले १०

२५ जुल १९७६
२३
१५५५१०१
१५५

मोहन २०५५

आर्य समाज

2056

I

ASHA ARCHIVES

पदशास्त्रं पूजापदानाहं मूलान्यहमववां निहासान्यहं नूतनसर्वदवक्रहं णिवा ॥ सर्वज्ञानान्यहं लक्ष्मणवक्रासाहमहं णिवश्रुहं वक्रासर्वलाकः सर्वदवात्मकाहं ॥
 अहं साक्षात्सदाचारधर्मो हं वैष्णवो हं वल्लभासुखवाहं न हं माहं पूनागनशादमाहं नियमो नूतनवक्रा निवि विविधनिवा अहं सूर्यसुखे चन्द्रामङ्गलादीन्यहं कथा ॥ पू
 नामांगनूतः पक्षीनयः मनाधयदु विहृष्टवृथवर्षे हिमहावववर्षे वि ॥ ॥ गनूतः उवाच ॥ मम मानां विनता नाजे दोषी कृणो हं यथा हं दोनवा जिह्वा वा ४
 मर्तं कनया मित्रं ॥ दास्यादिमां कृषिष्यामि यथा हं वाहनसुवा महावला महावीर्यः सर्वज्ञानागदा नृलक्ष्मणा पूनालसंहिर्गा कर्त्ता यथा हं स्यात्सुखकृत् ॥ ॥ विष्णुवाच ॥
 यथा त्वया कं गनूतः तथा सर्वं कृषिष्यामि ॥ दवादीनूतकलो नृजिह्वा वा मर्तं कानयिष्यामि ॥ नागदास्या मागवर्षा विनर्गा मां कृषिष्यामि महावला वाहनसुखं विष्यामि वि
 मर्दनशा पूनालं मत्स्यसा दो व्रमममा हा स्यात्वाचकमा मद्रुं मत्सु नृपञ्चन ववा विहृष्टविष्यामि ॥ गनूतः न वनामो न लीकस्या निद्रमिष्यामि ॥ यथा हे देवदवातां श्रीश्रवणा
 विनतासु ॥ तथा रक्षा नि पूनालवृ गनूतं गनूतं निहि ॥ यथा हं कीर्त्तनीयार्थं तथा हं गनूतमना ॥ मां ध्यात्वा पद्वि मुरेश्वरं पूनालं कनूतमनूतमां ह्युक्ता गनूतानूतकस्थपा

याहृष्टकृते ॥ काष्ठपागनूतं मुखा वृद्धं दग्धमजीवयता सयश्चेवात्मना रूढा विद्ययान्यानजीवयता पद्विर्लानुर्गहा हाजापीय विद्ययं गनूतीयना गनूतां कं गनूतं हि ॥ १७ ॥
 नूतमहात्मकं ॥ ॥ १८ ॥ त्यादिमहापूनालग्नगनूतं पुंश्चैव श्रयः ॥ ॥ ॥ १९ ॥ उवाच ॥ ॥ ॥ नि नूदो कुजो विष्णुः ॥ १८ ॥ सृष्टववक्रा लभ मुनिशवासा श्वासाद हं वक्ष्ये रुक्मिणीकने
 मिषा ॥ मूर्तीनां १७ ॥ मूर्त्तमूर्त्तं सृज्यते दवपूजनी गीर्त्तुवनकां च ॥ मन्त्रकनेमिहा च ॥ ॥ वल्लभासुखवाहं न हं माहं पूनागनशादमाहं नियमो नूतनवक्रा निवि विविधनिवा अहं सूर्यसुखे चन्द्रामङ्गलादीन्यहं कथा ॥ पू
 न्यनिपुलयाधर्मकामार्थकृतमममममपु पञ्चनिष्पपञ्च ॥ कर्त्तुं विष्णुनिगद्यता ॥ पूनालं गनूतं सर्वं गनूतं गवाहं विषावासुदवपुसादिन सामर्थ्यमिष्ये पुरुषावाक्ता
 हनिवो हनश्च सृज्यते दीनाश्च कानर्त्तं यिवो नृजिह्वा गनूतं अमृताहृत्तल्लुथा ॥ वक्राहं यस्या वक्रा उमदनं हं शयं दृष्ट्वा ॥ १९ ॥ मणिल नागदीनाश्च सद्रयः ॥ कश्चपा
 गनूता वृद्धं दर्शयतीवयद्यतः ॥ गनूतः सह विहृष्टनयार्कं श्रीकृष्णपायनं ॥ नृकीमज्ञानं नूतं पूर्णं सर्वदं पठितं सुवभाहृतीवित् ॥ नूदाय १७ ॥ लोभनकनद्यथा ॥ ॥ १९ ॥ त्यादि
 महापूनालग्नगनूतं ॥ ३ ॥ ॥ ॥ नूतः उवाच ॥ सृज्यते पद्वि सृज्यते सर्वं लभ मन्त्रकनालिवार्त्तमनूतवित् ॥ ॥ ॥ नृद्विहृष्टनादन ॥ ॥ ॥ हनिनूवाच ॥ १७ ॥ नूतः उवाच ॥ मि सृज्यते दी

[illegible]

शेषपथिगः सगर्जः संहगावृद्धिपूर्वकः शास्त्रसर्गः प्रमूखावेष्ठावनाः ३३ इमाः ३४ स्मृताः शान्त्यर्थकः ३५ तस्मै यः ३६ पाकः सैर्ययान् ३७ सडचन ॥ तद्दृष्ट्वा गतां षष्ठादवसर्गः सुसस्मृताः ३८
 गोर्वा ३९ आगमांसर्गः ४० सफः ४१ मः ४२ सतुमान् ४३ षष्ठाः ४४ प्रसमान् ४५ गृहः ४६ सगर्जः ४७ साहिकः ४८ सोमः ४९ सगर्जः ५० यः ५१ पः ५२ छेनः ५३ वे ५४ कृताः ५५ सगर्जः ५६ पाकः ५७ तस्मै ५८ यः ५९ स्मृताः ६० ॥ पाकः ६१ वे ६२ कृताः ६३ वे ६४ को ६५ मा ६६ यामान
 दः ६७ स्मृताः ६८ शास्त्रावनाः ६९ सनायः ७० पुजायुः ७१ दः ७२ विधः ७३ ॥ वक्रः ७४ १३ कृते ७५ १४ स्मृतिः ७६ ज्ञः ७७ क्रियमानः ७८ सा ७९ मुना ८० शतः ८१ दवा ८२ सूत्र ८३ पिह ८४ नान् ८५ षष्ठा ८६ च ८७ वरु ८८ सय ८९ ॥ सि ९० ९१ द्रव ९२ स्थिता ९३ नि
 स्वयमात्मान् ९४ मयू ९५ दः ९६ गः ९७ युका ९८ तन ९९ स १०० मा १०१ गः १०२ उ १०३ दिका १०४ ह १०५ पुजा १०६ पत १०७ ॥ सि १०८ १०९ दः ११० दना १११ पूर्व ११२ म ११३ सूत्रा ११४ ज ११५ ११६ त ११७ ११८ मा ११९ मा १२० गत १२१ सूत्रा १२२ का १२३ १२४ १२५ ह १२६ दि १२७ रा १२८ वरी ॥ सि १२९ १३० दः १३१ द्रव १३२ न्य १३३ दः
 १३४ १३५ पीति १३६ मा १३७ पत १३८ १३९ सूत्रा १४० १४१ सा १४२ दिका १४३ १४४ मुख १४५ १४६ १४७ सा १४८ १४९ सा १५० १५१ दः १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० ॥ त १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० ॥ त १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० ॥ त १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० ॥ त १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० ॥ त २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० ॥ त २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० ॥ त २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० ॥ त २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० ॥ त २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० ॥ त २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० ॥ त २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० ॥ त २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० ॥ त २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० ॥ त २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ॥ त ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ॥ त ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ॥ त ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ॥ त ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ॥ त ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ॥ त ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ॥ त ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ॥ त ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ॥ त ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ॥ त ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ॥ त ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ॥ त ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ॥ त ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ॥ त ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ॥ त ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ॥ त ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ॥ त ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ॥ त ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ॥ त ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ॥ त ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ॥ त ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ॥ त ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ॥ त ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ॥ त ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ॥ त ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९

[illegible]

कौटिल्यः १४७ ॥ राक्षसदोषवत्कृपण्यः १४८ ॥ नूदायदहवान् ॥ नूदः १४९ ॥ वृद्धिः १५० ॥ अर्थात् १५१ ॥ नाम १५२ ॥ हावला १५३ ॥ हाव १५४ ॥ वद १५५ ॥ दो १५६ ॥ त्वानि १५७ ॥ नृप १५८ ॥ पुनिर्मा १५९ ॥ राभा १६० ॥ रु १६१ ॥ र्द्धा १६२ ॥ वि १६३ ॥ धन १६४ ॥
 जनयामास १६५ ॥ राभा १६६ ॥ ग्रिय १६७ ॥ जनेयामास १६८ ॥ पत्नी १६९ ॥ नाया १७० ॥ लस्यया १७१ ॥ न १७२ ॥ त्वानि १७३ ॥ नयामास १७४ ॥ वला १७५ ॥ व्याधौ १७६ ॥ वि १७७ ॥ स्वय १७८ ॥ मा १७९ ॥ आय १८० ॥ नि १८१ ॥ न्निय १८२ ॥ नि १८३ ॥ व १८४ ॥ म १८५ ॥ नू १८६ ॥ क १८७ ॥ न्य १८८ ॥ म १८९ ॥ हा १९० ॥ त्म १९१ ॥ न १९२ ॥ ध १९३ ॥ ना १९४ ॥ वि १९५ ॥ ध १९६ ॥
 स १९७ ॥ रा १९८ ॥ थ १९९ ॥ न २०० ॥ यो २०१ ॥ ऊ २०२ ॥ नि २०३ ॥ म २०४ ॥ गा २०५ ॥ व २०६ ॥ लो २०७ ॥ पा २०८ ॥ ल २०९ ॥ ये २१० ॥ व २११ ॥ म २१२ ॥ क २१३ ॥ ल २१४ ॥ य २१५ ॥ मा २१६ ॥ क २१७ ॥ ल २१८ ॥ य २१९ ॥ म २२० ॥ प २२१ ॥ त्नी २२२ ॥ म २२३ ॥ नी २२४ ॥ वि २२५ ॥ ४ २२६ ॥ स २२७ ॥ म २२८ ॥ नि २२९ ॥ ४ २३० ॥ पू २३१ ॥ ल २३२ ॥ मा २३३ ॥ स २३४ ॥ मे २३५ ॥ म २३६ ॥ सी २३७ ॥ य २३८ ॥ न २३९ ॥ वि २४० ॥ न २४१ ॥ जा २४२ ॥ ४ २४३ ॥ सु २४४ ॥ र्व २४५ ॥ ४ २४६ ॥ व २४७ ॥ न २४८ ॥ स २४९ ॥ य २५० ॥ म २५१ ॥ हो २५२ ॥ त्म २५३ ॥ न २५४ ॥ ४ २५५ ॥ स २५६ ॥ न २५७ ॥ या २५८ ॥ त्ति २५९ ॥
 ने २६० ॥ स २६१ ॥ ये २६२ ॥ व २६३ ॥ प २६४ ॥ स २६५ ॥ न २६६ ॥ ४ २६७ ॥ क २६८ ॥ न्य २६९ ॥ का २७० ॥ रु २७१ ॥ थ २७२ ॥ मि २७३ ॥ नी २७४ ॥ वा २७५ ॥ ली २७६ ॥ क २७७ ॥ दू २७८ ॥ ल २७९ ॥ ये २८० ॥ व २८१ ॥ ना २८२ ॥ का २८३ ॥ वा २८४ ॥ न २८५ ॥ म २८६ ॥ नि २८७ ॥ रु २८८ ॥ थ २८९ ॥ अ २९० ॥ न २९१ ॥ स २९२ ॥ या २९३ ॥ न २९४ ॥ त्थे २९५ ॥ वा २९६ ॥ ऊ २९७ ॥ ऊ २९८ ॥ पू २९९ ॥ न ३०० ॥ क ३०१ ॥ ल ३०२ ॥ य ३०३ ॥ न ३०४ ॥ सा ३०५ ॥ र्ध ३०६ ॥ म ३०७ ॥ स ३०८ ॥ र्व ३०९ ॥ व ३१० ॥ द ३११ ॥ गु ३१२ ॥ र्ण ३१३ ॥ य ३१४ ॥ ४ ३१५ ॥ या ३१६ ॥ गि ३१७ ॥ न ३१८ ॥ मा ३१९ ॥ पो ३२० ॥ त्था ३२१ ॥ पू ३२२ ॥ ले ३२३ ॥ स ३२४ ॥ य ३२५ ॥ रा ३२६ ॥ य ३२७ ॥
 या ३२८ ॥ द ३२९ ॥ लो ३३० ॥ नि ३३१ ॥ रु ३३२ ॥ म ३३३ ॥ न ३३४ ॥ स ३३५ ॥ र्ध ३३६ ॥ का ३३७ ॥ आ ३३८ ॥ र्व ३३९ ॥ नी ३४० ॥ या ३४१ ॥ य ३४२ ॥ स ३४३ ॥ हि ३४४ ॥ व ३४५ ॥ स ३४६ ॥ न ३४७ ॥ य ३४८ ॥ म ३४९ ॥ ४ ३५० ॥ क ३५१ ॥ मा ३५२ ॥ नु ३५३ ॥ स ३५४ ॥ र्व ३५५ ॥ रा ३५६ ॥ यो ३५७ ॥ पू ३५८ ॥ ल ३५९ ॥ ह ३६० ॥ स ३६१ ॥ प ३६२ ॥ जा ३६३ ॥ प ३६४ ॥ न ३६५ ॥ ४ ३६६ ॥ कु ३६७ ॥ म ३६८ ॥ स ३६९ ॥ न ३७० ॥ नि ३७१ ॥ क ३७२ ॥ यो ३७३ ॥ वा ३७४ ॥ लि ३७५ ॥ खि ३७६ ॥ ल्या ३७७ ॥ न ३७८ ॥ स ३७९ ॥ य ३८० ॥ न ३८१ ॥ ४ ३८२ ॥ य ३८३ ॥ नि ३८४ ॥ स ३८५ ॥ ह ३८६ ॥ म ३८७ ॥ ति ३८८ ॥ म ३८९ ॥
 षी ३९० ॥ ल ३९१ ॥ म ३९२ ॥ र्व ३९३ ॥ ने ३९४ ॥ म ३९५ ॥ मा ३९६ ॥ अ ३९७ ॥ नु ३९८ ॥ ४ ३९९ ॥ प ४०० ॥ वे ४०१ ॥ मा ४०२ ॥ ग ४०३ ॥ ल ४०४ ॥ ल ४०५ ॥ ह ४०६ ॥ ल ४०७ ॥ के ४०८ ॥ ने ४०९ ॥ व ४१० ॥ र्व ४११ ॥ म ४१२ ॥ ४ ४१३ ॥ यो ४१४ ॥ नु ४१५ ॥ व ४१६ ॥ लि ४१७ ॥ स ४१८ ॥ य ४१९ ॥ स ४२० ॥ फ ४२१ ॥ जा ४२२ ॥ य ४२३ ॥ न ४२४ ॥ र्व ४२५ ॥ म ४२६ ॥ न ४२७ ॥ श ४२८ ॥ न ४२९ ॥ ड ४३० ॥ मा ४३१ ॥ ४ ४३२ ॥ वा ४३३ ॥ दू ४३४ ॥ य ४३५ ॥ स ४३६ ॥ व ४३७ ॥ ल ४३८ ॥ य ४३९ ॥ न ४४० ॥ य ४४१ ॥ रु ४४२ ॥ थ ४४३ ॥ ४ ४४४ ॥ स ४४५ ॥ न ४४६ ॥ पा ४४७ ॥ ४ ४४८ ॥ क ४४९ ॥ र्व ४५० ॥ यो ४५१ ॥ न ४५२ ॥ स ४५३ ॥ र्व ४५४ ॥ स ४५५ ॥
 फ ४५६ ॥ र्व ४५७ ॥ थ ४५८ ॥ म ४५९ ॥ ल ४६० ॥ ४ ४६१ ॥ हा ४६२ ॥ पा ४६३ ॥ दा ४६४ ॥ त्म ४६५ ॥ द ४६६ ॥ क्षा ४६७ ॥ पि ४६८ ॥ ग ४६९ ॥ श ४७० ॥ नी ४७१ ॥ ना ४७२ ॥ य ४७३ ॥ र्व ४७४ ॥ क ४७५ ॥ न ४७६ ॥ ४ ४७७ ॥ स ४७८ ॥ मा ४७९ ॥ न ४८० ॥ त्वा ४८१ ॥ हा ४८२ ॥ स ४८३ ॥ न ४८४ ॥ ल ४८५ ॥ ले ४८६ ॥ नी ४८७ ॥ र्ध ४८८ ॥ दा ४८९ ॥ न ४९० ॥ ड ४९१ ॥ मा ४९२ ॥ ह ४९३ ॥ या ४९४ ॥ पा ४९५ ॥ व ४९६ ॥ क ४९७ ॥ य ४९८ ॥ न ४९९

नलीगथागड हं वक्रवादिओमनायाकुहिमाचलमागगावक्रनामसमूर्णपूर्वस्वायम्बुर्वहनिश्रमात्मानभवकनवान्पुजापाल्यमनूरुन॥गगनूपाश्रितान्नात्रीनपातिरुनकल्मषामा
 स्वायम्बुवामनूरुव३पत्नीखजगुरुपुरुषागमात्रपूत्रषादवीगगनूपाश्रयायन॥पियवतालानपादोपकृत्याकर्मिर्लोकोदवहूर्निमनस्मासुआकृतिरुचयददो॥पुसुतिश्चेवद
 क्रोयधवदूनिश्चकदभानुरय्यल्लोदकिमहर्देकिमयाकुर्मिर्लोकशाश्रुवन्द्यादगसुतायामानाममहावलाशयुर्विगतिकन्याश्रुश्रवान्देकडरुमशाग्रालक्ष्मीरुगमिद्वि३युक्ति
 भक्षकियागथावृद्धिल्लजावपू३भक्तिर्वृद्धि३कीर्तिमुयादली॥पत्नार्थपुतिजयहधर्मादाकायली३पुरु३गुहाकानिस्तथादर्पनियमंश्चनिनात्मजम्॥सुकोषश्चनेथारुद्वि३लो १
 हंप्रश्चिनसूयगमिभस्मिन्कियादलुनयंविनयभवच॥वार्धवृद्धिल्लथात्मजाविनयवपूनात्मजम्॥अवसायंयुक्तंवेदमांभक्तिरुसूयग॥सुखमृद्विर्यग३कीर्तिरित्यगधर्मसूत
 वेशकामस्यवत्रिक्रियोत्तमग्राहयेडग्रन्॥वृंजकदाविद्यरूनहयमधेनदककशनेत्यजामात३सर्ववृद्धदवीसर्गविना॥अनादूनासर्गीपाफादकनेवापेमानिगा॥त्यक्रोद
 हंप्रनज्जीगोमनायाकुहिमालयाग॥गहोहोयोरुवदोनीनस्यजिऊविनायकशक्रमात्रल्लेखरुङ्गीग३कुक्षारूड३पुनोपवान्॥विध्वंसदक्षयऊनुर्गमपयिताकधृक्काध्वेस्यान

यमंरुगामनूषास्वहविद्यमि॥ ॥००॥यादिमहापूनालगभरु०॥॥॥ ॥हवित्रवाच॥डलानपादादरुवगसूत्रचामरुम३सूग३सूनीयानुधव३पूग३मलरुल्लान
 मूरुमभा॥मृनिपुमीदायानाश्चदवदवजगेत्यनिभाध्ववस्यगनय३लिष्टिमहावलपनाकुमशागस्यपावीनवहिमेपूगसुस्यायदानधी३दिवक्ष्ययसुस्यसूतसुस्यपूगविपू
 ३सूग३विपा३पूगसूग३शीमानवाद्रुष३कीर्तिमनूरु३करुस्यसूग३शीमानरुस्यगथात्मज३अर्जस्यवेल३पूगसूनीकोधर्मवर्जित३अधर्मकात्रीवेल३अमृनि
 लिष्ट्यकृल्लेह३गडवृममकू३यूगोर्थगगासगनयारुवग॥कृलोनिमानरुष्मा॥अनिष्टीयमिगगोक्वव॥निषादरुनवेजाना॥विश्वल्लेलनिवासिक३गगास्यदक्षिणीपा
 लिममकू३सहसाद्विजा३गस्मारुस्यसूग३जाना॥विष्णुमानूषरूपधकायूत्रित्यवनामास्वेल३पूर्वदिर्वययो॥दूदाहपृथिवीराजापुजाजीवनायहिअनद्वानेय
 ॥था३पूग३हविद्वोनरुदात्मज३पावीनवहिस्तुग३पृथिव्यानकनोरु३उपयमसमूडस्यलावलास्यसर्वसूतामा॥गस्मात्सुभावसामूडीदगपावीनवहिष३
 सर्वपथगगा नामधनेर्वदस्यपानगमशाअपथम्वमवत्रल्लेखनयनमहलपाशदगवर्षसहमालिसमूडसलिलेलाया३पुजापनिर्वसूपाग्ररायोगषाश्रमानिषाअ

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

मर्गा॥ संकारपूर्वमद्वयः दूष्कारनगदनकवी। सविमर्गं विनीर्यसा। नृत्त्युदाविद्रामर्दनमा॥ ॐ नमो विन्दुदद्यादिकवर्षसर्वसाधका॥ अमर्गं नमः। शुद्धनैपूजनसमभा। जपनाम्
 लूहीना॥ १॥ सर्वपापविचरिणा॥ १॥ जगज्ज्योतिरुल्लसन् यस्मिन् गीर्धरुल्लसन्। अस्माकं नमो जगज्ज्योतिः। तिस्रस्तु मन्त्रस्तु। वदन्तु। अस्माकं नमो जगज्ज्योतिः।
 ॐ नमो कुरु। विनयदमर्गं नमः। गच्छेत्वा द्वागगान्देवी। मम गाम् गता विनीमा। कलसं दक्षिणहस्तं। वामहस्तं सनातनं। जपद्वयसहस्रमाप्ते। तिस्रस्तु मासभक्तगणनाम
 त्पुमहाद्याधि। एकजिह्विकभक्तिदशमूकानकृपापनैर्वाधसन्निधाननिवर्तनमा॥ पादमाचमनं स्नानं मय्यो मुञ्जधनपुनमादीपासनेन वषट्कारेण वदन्तु। पापजीवनमा॥ मा
 गोमूत्राजपध्वानं दक्षिणहस्तं दक्षिणहस्तं। वाद्यगीतध्वन्युत्पन्नं गच्छेत्वा प्रदक्षिणं। पण्डितमनुश्रुयान् वन्द्यन्तु। विमर्शनमा॥ अथ काव्येण पूजनं कुरुमादितमा॥ प
 रमं गाम्भारिणं याजानातिमयूजकं। अर्घ्यपात्रेन शोभायुक्तं। वस्त्रलेखनं गतमा॥ अभयनकवनेन वन्द्यन्तु। गीतकनकनशापूजावाधनमा॥ द्वापदश्याभयार्थं गतमा॥ पिलु
 शुद्धिर्नमो कुरु। वषट्कारेण नमः। आत्मानन्दवन्द्यन्तु कनकन्याससंश्रितं। आत्मानमपूजयत्यस्याः। तिस्रस्तु पञ्चदशशतं विवाहं। लुलवापि। द्विपत्न्युत्पन्नं।

23

त्रमा॥ आह्वानं दानपूजार्थं पूजावाधनं किञ्चा। मा। विध्वकनलन्दनं पवित्रावस्थपूजनमा॥ अथ षड्विधपूजार्थं कर्तव्यं विपश्चिन्तयन्तु। श्रद्धायाः सायुधाययनि
 वात्रका॥ युगवन्दमद्वयः पूजयन्तु। मूर्ति कुरु। मा। कथागणध्वनौ नन्दिगच्छन्तु पूजयन्तु। महाकाले अमर्गं दहत्यापूजयन्तु। ॐ नमो गन्धर्वे नवाय
 नमः। एवं हं सः सूर्योयनमः। एवं लिवाय कुरुय उक्तं। वागलययन्तु। लुकाय सन्तु। महालक्ष्म्यादिपूजयन्तु॥ ॥ ॐ नमो महापूजागमनं वदन्तु
 ॐ नमो गीतपूजा॥ १॥ ॥ सुन्दराय॥ पार्श्वं वन्दन्तु। शिवार्कं पवदायहं। कालो नदीपुत्राभि नद्यादक्षानेजीवति॥ विगावली कललादी। कूपचविव
 न्तु॥ १॥ दक्षिणं खाययन्तु। लल्लनजीवति॥ षड्विधकर्म मयः मूलाष्टमयादिषु कदा। अलिगले सन्धौ गच्छन्तु दवादिषु॥ दक्षिणं मूर्ति गीत
 नमः। दि१ कालरुतकवर्कं वाही च गीतवायं वकायान् हिजीवति॥ पूर्वं दिनपतिर्कुरु। त्रैलोक्यमानकथयन्तु। अथाग्रहापुनिदिनं स्वस्तिवापुत्रिकीर्तिता॥ ना
 गहागकमारुथा। वागीवाणविवर्तने॥ १॥ धाकृ१ हलिपद्यन्तु। कोहीमहाविनशा। कर्कोटि। गुग्गुलुपद्मा। महापद्मं। राजवशा। अक्षयनीयवाद्रु१ कलि

पाणिन्यन्यवचनमूकवैश्वल्यदिगमात्रनेत्रवास्यैर्यद्वमनेऽगच्छेयन्नपाशमक्रावपदपाशुआदिपूर्वादिकलिखन्नामृवर्जश्रुमृखातमीशानपणकं। उं कावावमृवी
उं स्याद्धीकावाविष्मन्ववा। उं कावस्थानिवःश्ले विमथेकुक्रमात्रसिंहं उं दूंदूगूलगहीवाहमन। उम्यवाकाशसंमुखभागदर्शनानुहानागमदूसावानागमाप्रयुश। धूमावर्कक
नमः। आत्मावैचित्र्यनवशादूसावागमग्रहामयाविनश्चक्रिवाकसाशिलीकावदेयमनु। मर्त्यालाकस्यकाकथा। उं होमं दूंदूखादिवानकीलकानसेकेणसमन्ता विन्यस्य
नग्नवक्रपागस्य। दूंदूकादन्वपदवशागन्तुअकमहामनुकीलकानसेमनुयथा। एकविंशतिवागलि। केकुलखयनिशि। विद्युन्मृषिकवजादि। समुपडवगुवच॥ हनकमलव २५
षट् विन्दूयूकसदाशिवशुद्धं सदाशिवायनमशागुं न्यविन्यस्य गिष्टयतिमीकूमूपरमा। अस्तेवदनीनादूसाभयविद्युद्विषादयशवाकसाहृगणकिनाऽपवदनिदिश
दश॥ दूंदूकागयमनुयसुहनादिचक्रायनमशाउं दूंदूलाकस्यजामनायनमशाहंनवपिण्डमाख्यातं विषयापग्रहापहं॥ दूंदूस्यवक्रलीहंनवाकसाभयमर्दनमाउं नम
शाहं न्यवेर्जकनश्चात्मादूसाभयोदिकावली। विषयगुगलीहगा। नग्नवक्रमूदया। उं दूंदूनमःसमन्त्यागं वामहृविषहृगादिनश्चिनि। उं दूंदूनमःहनेदूशोवलाभानु। विषमय

ग्रहादिकात्राश्चात्माहृगणकान्दूदहंकादकाशुलवेजगता। उं दूंदूनमःश्चात्मारुहंनवकुर्यादूहृगविषापहमाउं लीसपुजिकाकसाहा। केगादोगहृगादि विषयदिनिवान
लमाउं दूंदू नमःनकेनयटहलिख्य। शकुणस्यग्रहादयःउं मेनमवमानयमानयसाहा। दूंदूखाहा। गूलश्रुश्रुगणमोनु। उमलभकृविन्दूकगु। उं दूंदूगकिनिपानन। अषःशकि
निकृश्रयगु। पूनकेपुवितामलाऽकृमृकेनस्यक्तिगाश। पणवनाप्रापिताकुली। वासुनसुदूदीनयन। नवमाप्रापितामनु। हृयवल्हृलदायकाश॥ ॥ दूंदूखादिमहापूनालग्न
कूठमालामनुशा॥ २०॥ ॥ सुतडवाव॥ पञ्चवक्राव्रनमः। यथयमृकिमृकिदं। उं हृविषुवआदि। हृगायसर्वाधवायमूर्त्यसाहा॥ सथाजागस्यवादानंमनेनपथमश्रवणं।
उं स्वाहासथाजागथैव कलाक्रासेपुकीर्तिगाशसिद्धिमद्विर्विर्लेजो। भेषकानिऽसुधोक्तिगिशाउं हां वामदवाथैवकलायैव कलास्यगुयादगा। नजावक्रानिऽपात्या। कानि
सुष्मागिऽकिया॥ कामावृद्धिश्चराशिधुसकीमाहनीतथा। मनामनीदूंदूअथावसेमामोहादूधकला। निदामृत्युमायाच। अस्तेवदनीनादूसाभयविद्युद्विषादयशवाकसाहृगणकिनाऽपवदनिदिश
थेपुनिशचविया। निर्नेकेवलाशुद्धं हं दूंदूगनायनेमा। निश्चलाचनिवज्जना॥ गणिनीवाङ्मनायैवमनीविहोतिनीतथा॥ ॥ दूंदूखादिमहापूनालग्नकूठपञ्चवक्रपूजा॥ २१॥

॥सूक्तवाच॥ शिवार्चनं पुनश्चामिमुक्तिमुक्तिं कर्तव्यमाभनं सर्वगर्भं न्यामात्राद्यादशकं स्मिन् ॥ पञ्चवक्त्रादिद्वानिदीर्यान्त्यद्वानिविन्दना ॥ सविमर्गवददम् शिवदुर्द्ध्वं तथा पुन
१॥ षष्ठेनाक्षमहामनु ॥ होमिथेवनर्थि ॥ हस्ताभ्यां हस्तौ ॥ दृष्ट्वा पादौ मस्तु ॥ महामुद्रा हि सर्वेषां कर्तव्या समाचरन् ॥ गानहस्तनेष्टेष्टं मुमुक्षुः ॥ ध्यायन् ॥
निष्णामादि १४ कृत्वा वाङ्मन्यानि विन्यास ॥ पूजनं संपुनश्चामि कर्तव्यं कायाद्यदम् ॥ धर्मज्ञानं चैव नाशयिष्ये ॥ यद्यदिह दार्ढ्यं ॥ आवाहनं स्थापनं ॥ पादमर्चनं द्वादशैव यथा ॥ आ
चमनं स्नपनं पूजाभकाक्षत्रं ॥ गुह्यं कां अग्निकार्यं विधिं वक्ष्ये ॥ अस्तु ॥ अन्ते खनयन् ॥ वर्मण्यै कर्तव्यं कार्यं ॥ किं न्यासं द्वादशैव ॥ द्वादशदिनां किं गुरुं युक्तिं यज्ञात्तद्वदेहं ॥ २१ ॥
गुरुक्षिणादिकं कृत्वा ॥ निःकृति ॥ अस्यापश्चिमाभा द्वादशैव सर्वकर्मणिर्विशिष्टं ॥ पूजयन् ॥ लङ्कां पद्मगुरुं ॥ नाकिं गुरुं वदुष्यन् ॥ अनुमते ॥ दिवा द्विवा ॥
महोत्तम ॥ स्वादीन्दु सूर्यगंसर्व ॥ स्वादिनं चन्द्रवर्त्तनात् ॥ आग्नेयां कावयेत् ॥ मर्द्धं चन्द्रनिर्हं ॥ अग्नीं मर्द्धं चन्द्रनिर्हं ॥ अग्नीं मर्द्धं चन्द्रनिर्हं ॥ अग्नीं मर्द्धं चन्द्रनिर्हं ॥
यांसदो जिव ॥ दीकविष्टं पञ्चनखं स्मिन् ॥ रूपादिकाम्ये ॥ निवर्त्तितं ॥ यन्निष्ठायै ॥ विद्याग्निं ॥ भक्तिवन्नलं ॥ भस्मग्रीवं ॥ रवेद्योमं ॥ तत्पर्वणं ॥ नमस्य ॥ प्रकैकस्य ॥ गौहाम्य ॥ मिथेव ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

लक्ष्मणुजफ शाययामूलरु लाशनेशा अयुगदयहमिन सर्वकामानवायु यागुडरु वेगिरवुं जागारु म्यापर्वत वासिनि ॥ वरुणसुमनः काना गकुदवियथासुखम् ॥ ॐ ह्यादिमहा
पूनालमनूठं मयही मोहात्मा ॥ १॥ ॥ हवित्रवाच ॥ नवयादीयजदुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा वाक्लि मागमार्गे वेददुर्गा सर्वकामार्थसाधनि ॥ अननवलियाननः सर्वकामानुपय
वृम ॥ जेनी काली उमा रुद्रा दुर्गा कानि ॥ सुत्र सती ॥ मङ्गला विजयालक्ष्मी ॥ शिवाना वायली कुमाता मार्जे रतीया मात्रयः पूजयेन्न विया गला कृ ॥ असाद गुरुजा खट यल्लय यो
गुरुनी ॥ धनू र्वेदं उमनूकः पत्रं पाशमववा ॥ अकिमूत्रयशुला निचकरवर्गा कृ गकुमाता चक्रे गला काना मादा वक्षा देगुरुजा सय ॥ मने ॥ श्रीरुगवत्या श्यपवका मित्रपादि ४०
कमा उं नमामङ्गला दिव्य ॥ उं नमो रुगवति वाम ॥ उं नमो नवासिनि कपालहस्त मेहा पुन समानुदम हा विमानमाला कलकाल नातिवद्रु गलाय विद्रुं महामखवरु रुजय ॥ उमनू
किक्केला अदा दृहस किलिकिलि दूँ दृहाया वा चकानि निनाद गये वकुलगजे र्मया रत गनीय नू धिनमां सदि श्वल लिहाना गजिक महाना कसिने दसं द्वा कना लेही मादा दृहा
महू निगविशून् समपुष्टवलवलकाननं हि लिहिलिललन जिह दूँ जिहू कृदी मूखि उं कानर यगा मुनिके पालमाला वेदि गजामूक दगम के धा विनि अदा दृहासं किलिकि

लिकिलि दूँ दृँ दृहाया वा नू कानि निगविशू विना जिनि ॥ उं दूर्गमा साधय गीर्युं द्रवद्वनक दृक दृजु कृ णानगमयमनूपवं गायवद्रु वद्रु क मयय क मयय वल्यलवालय नू धिनम
यमां सपिय हनहनक दृक दृकि न्ये कि न्ये मानय मानय ॥ अनू वूम अनू वूम वजगनी र्माधय साधय उला कृ गनमपि दूरु मद्रु स्य गृही नमगृही गो ॥ अवे गाय अवे गाय
कामय कामय कामय नू हन हय वल्लवन्नकोठ नादि उद्वेको जिडलू के वदन कलकि निकले कृमाला धाविलि दह दह पवपव गृकृ गृकृ म उलम धा प्रवं गाय प्रवं गाय
किमिलमसि उद्वेक सथेन विषू सथे नू सथे नू सथे नवी धिसथेन ॥ अवे गाय अवे गाय ॥ किलिकिलि खिलिखिलि निमिनि मिलि विनि विरुत नू पध विनि दृह स रुज
दूँ वं शि गनी यमवै गृहा वं शि निपलमो द्वि कृ रुगननासिक विरुत मूखि कपिल उ दिवा दिरु उरु उरु कलकल काल मूखि खल खल पाकयनका द्वि धू लू पय धू लू पय
रुमि पाकय पाकय जिना गृकृ गृकृ वद्रु मील यमीलय रु उरु रु उरु रु रु पादो गृकृ गृकृ मडा ह्री ठय ह्री ठय दूँ दूँ रु ६ विदानय विदानय जिह लन रु दय रु दय वजं न
हनद लुन गाठय गाठय वकुल कृ दय कृ दय गकि नारु दय रु दय दं दूय दं दूय यकी लय कर्हिकया पाठय ॥ अकृ णानगृकृ गृकृ जिना हि कृ नामका हि कं द्या हि कं श्या

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

विवस्वानुविष्वाधिराशमिनाथराजयश्चावजथायथीधनशकुमाताश्रममध्यपरिवर्तनपत्रिगोवक्रलश्रमश्रुतीभनकात्मदात्रयदूर्ध्यावर्तनउद्योगाश्रमयकात्म
दात्रयवर्तनभननिदूहवशश्रुतिनिहिमनकश्रुजयनकश्रुदेवयमा॥नादिकाकालिकानाम॥श्रुदाकृन्धवर्गपुनशवासुदवापूजयित्वा॥गुरुपासादकुरुवे॥सुत्रश्रु
पनश्रुकार्यदिष्वाश्रयामहानसीकपनिर्गमनयनपूर्वश्रुमेलुर्ल॥गन्धपूर्यगुरुकार्यमैश्वर्यामृदसंयुतमाश्रुतागमनश्रुकीवयोकाश्रुगमनश्रुवायवा॥ह
दगमश्रुयश्रुवात्रुत्वावागायनममन्वितासमित्क॥श्रुनक्तानुमायुधनाश्रुभेजे॥श्रुयोगतान्यधन्यासयासेनमपादुका॥गोयाग्निदीपसुरुह्यैर्युक्तयक्षिणारावता॥४९
गुरुहान्तरालिसर्वालिपूजनैकयेलीगुरुश्रुपुश्रुवर्ल॥श्रुकुसुमैश्रुभरिगानिपकल्पय॥पाकावनदहिदेयो॥पुश्रुहसुपमालनश्रुवर्लविशिष्टोद्यमैकत्वावनैश्रुपव
नैर्युतमा॥चतुःषष्टिपदावायुःपासादादिसुपूजितशम॥ध्वजचतुःपदावक्रादिपदास्त्रयमादयश॥क॥श्रुसेवाथगिदाद्या॥सुधदवाश्रुपुकीर्तिगश्रुश्रुश्रुय
गश्रुसाक्षीश्रुअपिदिपदाश्रुसुत्राश्रुचतुःषष्टिपददवा॥५०॥श्रुवर्पनिकीर्तिगश्रुषटकीवविद्यावीचपूतनापापनाक्षसी॥श्रुश्रुनाश्रुसुधवाश्रुदवाश्रुश्रुकोदयश्रु

शुकसिपुत्रानुश्रुअग्निवंगालकायमश्रुअग्निजिह्वाकीलकसुकवालाश्रुकपादकश्रुनेश्रुभन्याहीमनूपमुपातालकननामकश॥श्रुकाश्रुगन्धमालीश्रुश्रुश्रुपालाश्रुसुध
यजनाविसुवादिहिर्गदीर्घवाशिदासुकुकावय॥वसुरिहोगफक्षि॥श्रुषावद्वायमाविश॥पुनरुलिगमश्रुकिर्दृशगुरुजय॥यकेवर्गवर्दृशगदिश
श्रुयैरुवे॥श्रुदचतुर्लुलुत्वा॥नवरिकुगहाविगमा॥श्रुषमैश्रुविज्ञानीया॥देवलेस्यमनयथा॥श्रुसाहिगुलिर्नपिर्लु॥षष्टिरिकुगहाविगमा॥यकेषुनुरुवर्जोवमनर्ल
रुनहोत्रिर्ल॥श्रुषमणविज्ञानीया॥देवलेस्यमनयथा॥श्रुसाहिगुलिर्नपिर्लु॥षष्टिरिकुगहाविगमा॥यकेषुनुरुवर्जोवमनर्लरुनहोत्रिर्ल॥वासुकोश्रुगुरुकुर्यान्न
पृष्ठमानवे॥सदा॥वामपाश्रुनस्यपिनि॥नेत्रेकार्यविवात्रुत्वा॥सिंहकन्याश्रुलायाश्रु॥दार्दृश्रुद॥श्रुथलनेमा॥नर्ववदश्रिकायोश्रुगुपूर्वयक्षिणपश्चिम॥दार्दृदीर्घोद्विद्वोवका
नाथश्रीसुगानिवा॥सुगाल्यपेशनीवर्ल॥सुयानसुगहृषण॥पुनहोनकुशेदलवीर्यद्वि॥श्रुगताव॥श्रुवध्वश्रुअयुर्वृद्धि॥श्रुश्रुलारुसुहृदि॥धनदंनपपीजद॥मनयैराग
दंजल॥नृपहीनिर्ल॥गापत्या॥श्रुनपत्यनवेवदी॥श्रुधर्दवाधुहाश्रुश्रुदायादृपूश्रुमृद॥दवाश्रुनरुनरुति॥पूर्वदवापिनास्माद॥श्रुनिर्हीनिर्दृकन्या॥धनसक्तानकायदीवा

नकेयुहसुमिधवदीष्टकानयनानदीसङ्गमनीवाल्काकानुदापयवसुमंकार्मकारं वरुलमकनाकनिभापूर्वादिगसमावृत्य कर्तुं शक्यं यश्चैकं अथवावतु
न्यालिसर्वोत्थानिकानयनं ॥ अथ कर्मविधानेन सर्वकामार्थसिद्धयः ॥ निवृत्तानेन दुष्टवत्तया वायाहिममावृत्य ॥ ज्येष्ठेन्येकं विदित्वा नि उपायिष्यावर्तिशुभमाद्यनालि
येकचत्वारिंशत्कृत्वावेगनभक्तिके ॥ न्याग्रामधर्ममोक्षकं वेलुपालागवादिनाशानावले ४ यश्च हस्तश्च वसुपूषाद्यलङ्काश ॥ निखनेदुष्टमकेकं श्वरुद्विष्येनुवादिश ॥
पूर्वद्वानेमृग ॥ अहयवाजनुदक्षिणा ॥ पश्चिमरगापतिर्नोमः सुवशदूलमूलना अग्निमीठतिमकुलपुथमं पूर्वतान्यसु ॥ ॐ स्वर्गनिवमकुल दक्षिणा न्दिनीयर्का अग्न ५२
आयाहिमकुल पश्चिमस्यां न नीयर्क ॥ ॥ ननादवीतिमकुल उरुनेत्या अरुथकमा पूर्वन्दायधिनाकार्यो आग्नेयाधूमनूयिणी ॥ याम्यां यां कृषून् पातु याम्यां यां धूमना रुक् ॥
वात्रायां पातु वाक् या वायवां पीनवर्णका ॥ उरुनेरुके वरुणं रुक्मिणी च पतिना किं का विरून् पातु याम्याम ॥ ॐ नु विद्यति पूजिका ॥ अग्निं सुविष्मकुल यमाना रगति दक्षिणा ॥
पूषान् दक्षिणा मति पश्चिम उरुमेति वा ॥ वात ॐ ह्यहिविद्या थ आयायस्व मित्रा रुना गमीभनसुग श्येवा विष्मनेकं निमश्ममा ॥ कलशमेरुतगा दोदो निव ॥ अनावस

निके ॥ वसुयुगसमायुक्ता ॥ अन्धनाथो ४ सवाहनाश ॥ पूषे विननेर्वदूले वादिवर्णमिनिगाश ॥ दिक्कालाध्यग ४ पूषा ४ अमकुल दक्षेन कर्ममा ॥ गाना नमिन्धमकुल अग्निमूर्ध
निवापय ॥ अग्निं नृके ॐ नृश्वेव पावीवीनियुनामगा ॥ कि ॥ अरुसा वरुहिञ्चि ता देवदेवतिसफमी ॥ ॐ मानुद निदिक्कालान पूजयित्वा विवदू ४ ॥ हामदवालिवायवेक
यात्सायस्कवालिवा ॥ अरु नृश्वेव पावीवीनियुनामगा ॥ कि ॥ अरुसा वरुहिञ्चि ता देवदेवतिसफमी ॥ ॐ मानुद निदिक्कालान पूजयित्वा विवदू ४ ॥ हामदवालिवायवेक
वसुमेरुना ॥ न्यासाय सावेकालिक ४ अरु नृश्वेव पावीवीनियुनामगा ॥ कि ॥ अरुसा वरुहिञ्चि ता देवदेवतिसफमी ॥ ॐ मानुद निदिक्कालान पूजयित्वा विवदू ४ ॥ हामदवालिवायवेक
४ ॥ अकीन्दिनामथवन्य यावदीभन गववमा अरु वकी योद्वगानुसर्वान लपथन लुपन ४ ॥ गन्धाद्यैर्व्यमने श्वमकुल ग्रामं न्यसेदु नृशकै नार्यपागनाथन आदुथद्यागम
लुपमा पुनिशायस्य देवस्य नदरव कलशनिमं नृश्वेव पावीवीनियुनामगा ॥ कि ॥ अरुसा वरुहिञ्चि ता देवदेवतिसफमी ॥ ॐ मानुद निदिक्कालान पूजयित्वा विवदू ४ ॥ हामदवालिवायवेक
उपेदु ॥ ॥ सुग्रीवनेन गङ्गा वसुयुगमन वेदिनी ॥ सुवोषधी गन्धर्वा पूजयत्कलशं गुनश देवकु कलश पूषा वरुन्दा वसुमू मभावद्वेन्या लुसमायुर्क कलशनिमथद

था॥ वरुनी न्धनया सिद्धि न गृहीत धनयत्न न शक्यते वरुनी कर्म लानन दवमर्चयत्न दृष्टे वाक्त्रवायवांगलना न्धनिसिद्धि दीवामी भनका लरु यज्ज दामुपनिव
धशा वाक्त्रा घनी निमकुल वाक्त्रा धाया भनका कर्म लानन दवमर्चयत्न दृष्टे वाक्त्रवायवांगलना न्धनिसिद्धि दीवामी भनका लरु यज्ज दामुपनिव
कृष्णेशा आवाप्या मूर्तिके ४ सर्व स्नानपीठि रहस्यथा विविधे वक्त्रा धाया भनका कर्म लानन दवमर्चयत्न दृष्टे वाक्त्रवायवांगलना न्धनिसिद्धि दीवामी भनका लरु यज्ज दामुपनिव
विन्यासं कुनशा रुद्रका नैक थला ता सुवल्कलं ननु सहायल कालद्वारे कर्मा कर्मादि वादनशा मधुसूयि ४ समायुक्त कश्चिवागम रुजने अर्चि वा ४ यतो ह्यसुवल्क ७३
स्य गला कया अर्चि निमकुल ननु द्या ट नु कायथे लक्ष्मी लक्ष्मी यमा लरु नो मे कलायका दद ॥ १० ममेग रुजाम कुल ननु या ४ गी तल किया अर्चि मूर्ध्नि निम
कुल दद्या दूष्मी क मूर्तिका ॥ विष्णु दूष्म नम श्रुते वटपाला नम वया यरु यरु निमकुल दद्या लक्ष्मी क यो यक ॥ पञ्च गयी ४ स्नायथ च सह दद्यादि हि रुद्र ४ सह दवीव
लावे व गान मूली गता वनी ॥ कुमात्री च गुदी वीव सिंहाया यी तथे ववा याता वधी निमकुल स्नानमाध धिमङ्गला याश्रु लिनी निमकुल रुद्र स्नान विधीयते द्रुपदो दिवनिम

कुल कार्य मूर्ध्नि नैव ४ कल गव्य विन्यास उरुवादि धनूक माता तानि वेवधन्या निता वधी न पृथिका ॥ समुद्रा येव विन्यास वरुश्च वरुना दिग ४ क्षी नाद धिक्का नादस्य
द्युगो दस्य निवापुनशा आया य सुद धिका वा याता वधी निगीति वागजो मी निमकुल श्रुते वा निमकुल यानि न नायन य ४ स्नाया १ समुद्रा सर्व पायके ४ अर्चि विवा सह नमुने नय
न्य हो पुन रुद्र गव्य द्या निगध ४ न्य सिवे वदमनु को ४ सुगम मु विहि न पापे विर्ममनु नि वसु की कव हि विनिमकुल आनये मलुये लु ॥ ११ लक्ष्मी वाय निमकुल गयो या विनिव
थ ॥ विन्यासं कुनशा रुद्रका नैक थला ता सुवल्कलं ननु सहायल कालद्वारे कर्मा कर्मादि वादनशा मधुसूयि ४ समायुक्त कश्चिवागम रुजने अर्चि वा ४ यतो ह्यसुवल्क ७३
ग ४ यथ गम रुद्र निव द्या मि पाद मूल कुदापथ ॥ अथ पु वल सयुक्त वसु यरु मे न व द्धि नमा कल ल स हि न श्रुति व ४ स्नाने निव दथ ॥ १२ लक्ष्मी क लु समीपे थ अर्च ४ स्नायन मा
व न ॥ सुगम मु विहि न मनु वं दार्क वीथ वा गु नु ॥ १३ लक्ष्मी पावमान ४ सदा स्य ४ स वाजिन मा वृषा क पि ४ मे ग ४ व ४ व ४ पूर्व गज पे ॥ १४ द ४ पु नृष स क ४ लक्ष्मी को धाय ४
सुकि या वाक्त्रा पिठ मे ग ४ अर्च ४ द ४ कि ॥ १५ जप ॥ द ४ कि ॥ लक्ष्मी पथ द्रुक् पनी ता द्रुक् पथ ॥ १६ साधन लान मनु ल सुगम मु विहि न नवा ॥ दिक्का दिक्का दद्या न्य प्रिये विरु ४ स

[illegible][illegible]

[illegible]

माहूर्तनक्रयोः दायाहिसामयाजुवशाब्दमापश्चवहनीद्यादित्यस्येववागनाहिमनिर्गतायमापाहिसादिमनुकेशाभ्रनर्कलमनाद्याग्नऊपतिनयमर्षलमाद्रूपदांवाथसावि
र्तीनद्विष्णुपत्रमपदे॥आवर्तयदापलावायवदर्वसमद्विमापश्चपालोसमादायजुषाविमाहूर्तनकेन॥विन्यस्यमूर्द्धिगतोयमृचनसर्वपापकेशासन्ध्यामृपोत्यवाग्नसममनि
त्यमीश्वरी॥अथपनिष्ठदादित्यमूर्द्धिपूष्यान्विर्गजलीपक्षिद्यालोकयद्वमययननगस्यन॥उड्डयश्चिगमित्यवगवद्विनिमनुगशहंसशुचिसदनेनसावित्रावविर्गषन॥
अथैश्वरीश्वरीदिकेप्रभयर्गश्वनगजपामनुनिविविधन्यशाखाकुलवकुलसने॥निष्ठथवीश्वमाभर्कजेयक्रयात्समाहिनशास्यटिकाकुलवकुलदके॥पूर्वजीवसमूहेश
कर्तृवाल्कलमालास्यादनुवाग्नसास्यनायदिस्यान्किन्नरासर्वेवाविमक्षगगन्यत्र॥अन्यथावर्गुषीहृम्यादिकृषुसमाहिनशापदेक्षिणीसमाद्यनमश्चुत्यनगक्षिणी॥अ
वमवयथभर्तृगोक्षसाक्षयमावर्गनगसकपयथदवानृषीनृपिहगभंसुथा॥आदावाकुलवमूर्द्धायांनमीनेनर्पयामिवायवानुवक्षसर्षाश्चैवगर्पयदकनीयके॥
पिहृन्धवानूनीरुक्षोसहस्रवाकाधनारुव॥पदद्यात्वाथपूष्यादिसूकेनपूर्यषणु॥दवर्षासूर्ययद्वीमानृदकाश्चलिरि॥पिहृन्नायकापिवीनीदवानानीवीनीअधिनयो॥सा

युक्ताह मिहवेहयेशा सापासङ्गपनाकश्च शुक्रस्यापित्राथमहानाञ्जसाश्चकाश्चनः श्रीमान् रोमस्यापित्राथमहाना पद्मनागान् लेनलेः संयुक्तावदिसं हेः असाहिः पाण्डु
वेः युक्ते बौद्धिहिः काश्चनेनेथः ॥ निवृत्तिश्च निवर्षश्च नात्मेनात्मेदहस्यनिः आकाशसकृदेवत्वेः सबलेः स्यन्दनयुगं ॥ समानुक्तं जनेयानि मन्दगमी जनेयवः सहाना सुवग
झरौ रुद्राधूसर्पनथमासकन्मूकासु रुग्णं वहस्य विवर्गसदा ॥ नथकिं नथस्याश्च अक्षौगं वागवहसशापालालधूमवल्गुहा लादायसुनिहात्रुभः अपनद्याद्वयनैः कुरु
वतानिहन्सुनः ॥ ६६ ॥ आदिमहापूनालमनूतुवनेकायः ॥ ६७ ॥ ॥ सुगडवायाः ॥ निश्चर्कं कुवामान मूकापावाचकं जवशं वातुर्लक्षं निषस्यसर्वं नूदाय सर्वदः ॥ ६८ ॥
॥ हनित्रुवाच ॥ कलिकास्तुनिदेवत्याः नाहिश्चकं जवाः सुगः ॥ ६९ ॥ लाः सामयवत्याः योर्दवाद्दुमदादगमा पुनर्वसुसुथदियः सिषाश्चगुनूदवगः अक्षौगं वागवहसशापालालधूमवल्गुहा लादायसुनिहात्रुभः अपनद्याद्वयनैः कुरु
वतानिहन्सुनः ॥ ७० ॥ रुग्णं मूकासु रुग्णं नथस्याश्च अक्षौगं वागवहसशापालालधूमवल्गुहा लादायसुनिहात्रुभः अपनद्याद्वयनैः कुरु
वतानिहन्सुनः ॥ ७१ ॥ मूलसुः नूदादगमा पुनर्वसुसुथदियः सिषाश्चगुनूदवगः अक्षौगं वागवहसशापालालधूमवल्गुहा लादायसुनिहात्रुभः अपनद्याद्वयनैः कुरु
वतानिहन्सुनः ॥ ७२ ॥

लोवेसुवः सुगः वासवकु नथमर्कं धनिष्ठाया चान्वेषेन थान्तिष्ठाया कं नदुर्गं वातुर्लक्षं निवः ॥ आर्द्रादपदापूर्वः अहिर्वधुसुथारुनापोषः अत्रवर्गमकः मन्थयुक्ताश्चदे
वगमा रुग्णं मूकासु रुग्णं नथस्याश्च अक्षौगं वागवहसशापालालधूमवल्गुहा लादायसुनिहात्रुभः अपनद्याद्वयनैः कुरु
वतानिहन्सुनः ॥ ७३ ॥ नायालीवनेर्जथं चतुर्थोदादगीनिथो पञ्चम्याश्चुयादथवावाहीदुक्तिः लक्ष्मिगा ॥ षष्ठाश्चैवचतुर्दशमिन्धुलीपञ्चिमिक्किगा सुफर्मापोर्लमास्याश्चैवाम
उवायुः जवने ॥ अक्षौगं वागवहसशापालालधूमवल्गुहा लादायसुनिहात्रुभः अपनद्याद्वयनैः कुरु
वतानिहन्सुनः ॥ ७४ ॥ नक्षत्रादिपञ्चमकालि उरुनायमववा अक्षिनीनाहिलीपूषा धनिष्ठाचपुनर्वसु ॥ वसुपावतलः ॥ ७५ ॥ नक्षत्रादिपञ्चमकालि उरुनायमववा अक्षिनीनाहिलीपूषा धनिष्ठाचपुनर्वसु
वतानिहन्सुनः ॥ ७६ ॥ मध्यामूलविभरवथाः ॥ ७७ ॥ लिपूवर्गं थवैव अक्षौगं वागवहसशापालालधूमवल्गुहा लादायसुनिहात्रुभः अपनद्याद्वयनैः कुरु
वतानिहन्सुनः ॥ ७८ ॥ निषावर्गं रवनीविलपवगनमा ॥ ७९ ॥ दक्षिणगगाश्चवज्ज्या निवृत्तिश्च निवर्षश्च नात्मेनात्मेदहस्यनिः आकाशसकृदेवत्वेः सबलेः स्यन्दनयुगं ॥ समानुक्तं जनेयानि मन्दगमी जनेयवः सहाना सुवग
झरौ रुद्राधूसर्पनथमासकन्मूकासु रुग्णं वहस्य विवर्गसदा ॥ नथकिं नथस्याश्च अक्षौगं वागवहसशापालालधूमवल्गुहा लादायसुनिहात्रुभः अपनद्याद्वयनैः कुरु
वतानिहन्सुनः ॥ ८० ॥

कुर्यात्कुरुविषयायाः जातकर्मोदिमानवशविश्रवाचारुनालीलिमयाद्रुनलीनथा॥ अष्टाष्टाहिकानूदपुष्पनिमनलपुदाशा ॥ ॐ ह्यादिमहापुनारलग्नवृत्त ॥
 ॥ अले ॥ ॥ हनिनूवाच ॥ एकपक्षननुपीया॥ द्विषच्चदणद्याककाशलिसुफेकादण्यीनि॥ अष्टुनष्टदोदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥
 क्षत्रकेयववृधसफदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥
 स्यावृधसफदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥
 मोनःसुनगुनारोवगुहकुरुकीर्तिनी॥ नवदशमदुःखदास्या॥ दक्षमगपलागकुन॥ विहृतिदावच्यदण्यीनि॥ सुखमसार्थदातथा॥ दुःखपदाकुरुदण्यीनि॥ नास्यादःस्यादि
 नाजिनी॥ दिव्यसुदावृधदण्यीनि॥ नास्यादःस्यादि॥ गुनार्दशमदुःखदास्या॥ सुखमसार्थदातथा॥ दुःखपदाकुरुदण्यीनि॥ नास्यादःस्यादि॥
 वधकनीरुवृत्तनाहादशमदुःखदास्या॥ नास्यादःस्यादि॥ गुनार्दशमदुःखदास्या॥ सुखमसार्थदातथा॥ दुःखपदाकुरुदण्यीनि॥ नास्यादःस्यादि॥

धनिसकदनंरुगो॥ मगहिकुपिमाऊन॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥
 पो॥ दक्षिणहानिमापुयागनेमय॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥
 दुखनाद्याययाग्यामामके॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥
 मोषधिलक्षपकाकानुरुजुमाशमूकक॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥
 वेकुपदानव्यमकेकैकधन्याम॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥
 बालि॥ नविपादविषाजय॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥
 श्रीनःस्ताननुक्षारवकुज॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥ अष्टादित्येदण्यीनि॥

क्रियुगालिः। हवसुगदिसंयुगशकायमूठनपादीयैर्कुजेधनवर्जिताः। धनवर्जिताः। लयधुनमवव। लाननकरषणविषमार्थवलः। मियामासमार्थद्विगिपः
 पाकः। पुलभनगगायनाउदकायावदु। चायुः। नर्कमलिहिनीश्वराः। पापुवेमलिहिनिः। मलिनेः। सुखरागिनः। खगदनिः। गदसुगः। सुः। दनिः। मनेवाधियाः। एकद्वि
 त्रिवरुः। पः। यदूनादिहिनेवयादकि। भवर्कयलिः। मूगदिः। अनुपासगाः। विकीर्णः। मूगसूगः। प्रदानसुखदायिकाः। एकधनाश्वनिगोः। त्रिः। मलिहिनिः। नर्कः। सामे
 सुनिवतधनिना। मः। निः। निः। कः। काः। शः। केः। निः। सावर्कः। गः। र्कः। मः। प्रकीर्णः। गः। नः। पाः। पुः। गः। मः। शिः। काः। मः। धुः। र्कः। धनवर्कः। पूगः। शः। केः। मः। सुगः। मः। नः। शुकवकनका १३
 शमहागोगामासगः। धयदास्यानदगभिनिः। दविदुः। कावगः। धवः। दीर्घाः। यः। शीः। धुः। मेथुनीः। अनीः। धुः। मेथुन्याः। युः। सुलः। हिः। कः। दः। नाः। किः। नः। मः। मः। लः। हिः। कः। सुखीः। स्याः।
 सिहः। हिः। कः। रूपः। निः। सुः। नः। हवः। सिहः। कः। नीः। राजाः। निः। सुः। कः। पिः। कः। टिः। नः। वः। सः। प्यादिनादविदुः। सुः। पिः। ०। दः। श्वः। यः। दः। समाः। धनिनाः। विकलेः। पाः। श्वेः। निः। सावर्कः। धुः। निः। मः। केः। शम
 समकः। दोः। शः। गः। द्याः। निः। मः। कः। दोः। धनाः। शिः। गः। नः। पाः। श्वः। नः। कः। काः। सुः। हिः। काः। विषमकः। काः। शमः। स्याः। दः। वावः। धुः। धनाः। नाः। हिः। हिः। सुः। खिनः। सुः। गः। शः। विः। मीः। र्कः। हिः। र्कः। रुः। लाः। हिः। निः। मः।

हिथक्रगगागिनः। वलिमधुगगागाहिः। सुलवायांकनानिदि। वामावर्कः। श्वमाधुनेः। भरवांदिः। भः। सुथः। पाः। श्वः। यः। नाः। विनायुः। सुः। दः। पविः। दानधनंश्वनमाः। प्रः। धगवाः। द्यः। कः। यः।
 श्वः। नेः। पः। लः। पः। मः। कः। लिः। कः।। एकवलिः। सुः। यः। कुः। गः। कः। शीः। रागीः। दिवलिः। सुः। नः। शः। वलिः। सुः। पः। मः। वायुः। अरुः। हिः। र्कः। लिः। हिः। सुः। खीः।। अगः। म्याः। गमीः। डिः। कः। वः। निः। र्कः। पाः। श्वेः। श्वमाः। सः। सः। मः। दः। हिः।
 सुसुः। मेः। यः। वः। दकिः। भवर्कः। नामः। हिः।। विपेः। निः। सुः। पः। यः। निदुः। याः। सुनवः। र्कः। गः। श्वः। नः। र्कः। गः। श्वः। विवर्कः। र्कः। वः। निः। सुः। र्कः। गः। नः। शः।। निः। र्कः। नाः। विषमेः। दीर्घः। पीः। नाः। पविः। केः। नः। पाः। शमः। नः। गः।
 ददयः। मः। कः। मीः। मीः। सुलः। यथः।। नः। पाः। लः। मः। धुनाः। नाः। श्वः। रवः। नीः। माः। शिः। बालः। कः। माः। अः। नः। धनः। सः। मः। कः। काः। स्याः। योः। नेः। र्कः। हिः। र्कः। गः। शः। वः। र्कः। हिः। र्कः। विषमेः। निः। साः। गः। मः। लः। निधनः। सुथः। विषमेः। र्कः।
 हिः। निः। साः। श्वः। सुः। निः। र्कः। श्वमाः। नः। वाः। शः।। नः। र्कः। गः। निः। निः। र्कः। साः। पीः। नेः। र्कः। नाः। चिः। नाः। शः।। निः। मः। श्विः। पिः। टः। कः। सुः। यः।। विः। नाः। श्वः। गः। लोः। मः। खीः।। सुनः। सुः। नाः। हिः। र्कः। गीः। वः। गः। मः। काः। मः। गः। कः।
 लः। कः। शः।। कः। म्युः। गीः। वः। धनः। पः। निः। र्कः। सुः। कः। (शः। निः। र्कः। लः। श्वः। अः। नामः। मः। र्कः। गः। यः।। सुः। र्कः। वाः। सुः। र्कः। मः। नः। यः। थः।। कः। काः। दाः। श्वेः। दः। नाः। (श्वः। सुः। गः। निः। र्कः। मः। दः। नाः। मिः। काः।। अः। नः। यः। थः।। अः। र्कः। हीः। नाः। नाः। नः। सोः। निः। सुः।
 स्याः। नामः। लोः।। निः। मीः। सः। यः। वः। र्कः। मः। लोः।। शिः। र्कः। वः। विपुः। लोः।। सुः। र्कः।। अः। जानः। लः। मः। निः। वाः। र्कः। र्कः। पीः। नोः। नः। पः। श्वः।। निः। सुः। नाः। नामः। (श्वः। र्कः। लोः।। श्वः। कः। निः। कः। नः। यः। र्कः।। र्कः।। कुलः। यः। नः। वाः। सुः।

वृकाकादिसन्निहेश। शिवाले विषमेषु चो विरुहीनारुवनिहि॥ समुन्नगे तु वाहीया कलहे मद्रकं जिनी। मीषदावा विनूपाय यगाकात्रा गुल्लरुन॥ नवम्रीलद्रुणपाकं व
 र्द्धुक्तानदयकम्॥ ॥ ॐ त्वादिमहापुत्रा लामनूठ नवम्रीलद्रुणनामा ॥ ६६ ॥ ॥ सुमउवाय ॥ हने ४५५ त्वाहनामेत्री दहर्लू नमववीना कजावदुनवि४५५ थीमी
 विनाप४५कीहि न४॥ वायुसंस्कारि ना मयू द्दकत्रन्ध्रवहासक४॥ गुत्र४५कसुथामोम्य ॥ चन्द्रस्येववधुथक४॥ वामनाश्यानुमथ्रुक्तानकीत्रयदात्मनेरुथायदावा ॥
 न४५५यूक्त सुदाकर्मसमाचन॥ स्नानसवान्ध्रान्नालिर्वाउदशनमाश्रया निगुरुकमालिकात्रयनपयत्नग४५दकनागीपुवाहेनुगानिहोमिष्टसिंहक४५५ ॥
 उल्लेखकथथव पापानामुदयाहवे॥ ॥ ॐ राधुला विवकाहि जाम्यरुत्तवाद्योग ॥ दहमथ्रुक्ताननाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥ नारुवध्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥ नारुवध्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥
 दासफनिसहसालिना हिमथ्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥ नारुवध्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥ नारुवध्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥
 द्दिभनविसन्निहामथ्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥ नारुवध्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥ नारुवध्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥

स्यात् सर्वकार्यविनाशिनी। निर्गमवत्त्वदामा पुवला दक्षिणमृगा॥ कात्रयन कूत्रकर्मालि पालापिङ्गलसंस्तिन ॥ ॐ त्वादिमहापुत्रा लामनूठ नवम्रीलद्रुणनामा ॥ ६६ ॥ ॥ सुमउवाय ॥ हने ४५५ त्वाहनामेत्री दहर्लू नमववीना कजावदुनवि४५५ थीमी
 वृकाकादिसन्निहेश। शिवाले विषमेषु चो विरुहीनारुवनिहि॥ समुन्नगे तु वाहीया कलहे मद्रकं जिनी। मीषदावा विनूपाय यगाकात्रा गुल्लरुन॥ नवम्रीलद्रुणपाकं व
 र्द्धुक्तानदयकम्॥ ॥ ॐ त्वादिमहापुत्रा लामनूठ नवम्रीलद्रुणनामा ॥ ६६ ॥ ॥ सुमउवाय ॥ हने ४५५ त्वाहनामेत्री दहर्लू नमववीना कजावदुनवि४५५ थीमी
 विनाप४५कीहि न४॥ वायुसंस्कारि ना मयू द्दकत्रन्ध्रवहासक४॥ गुत्र४५कसुथामोम्य ॥ चन्द्रस्येववधुथक४॥ वामनाश्यानुमथ्रुक्तानकीत्रयदात्मनेरुथायदावा ॥
 न४५५यूक्त सुदाकर्मसमाचन॥ स्नानसवान्ध्रान्नालिर्वाउदशनमाश्रया निगुरुकमालिकात्रयनपयत्नग४५दकनागीपुवाहेनुगानिहोमिष्टसिंहक४५५ ॥
 उल्लेखकथथव पापानामुदयाहवे॥ ॥ ॐ राधुला विवकाहि जाम्यरुत्तवाद्योग ॥ दहमथ्रुक्ताननाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥ नारुवध्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥ नारुवध्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥
 दासफनिसहसालिना हिमथ्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥ नारुवध्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥ नारुवध्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥
 द्दिभनविसन्निहामथ्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥ नारुवध्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥ नारुवध्रुक्तान्नाश्यावदुनपा४५ सुविस्तना४॥

[illegible][illegible]

अलीतिरागमथगर्गगगगगसहसुहागमसमानयागग॥यकुलेदोदगहि॥रुनस्यवकुसुसुन्यपथमयदिस्सहास्यकुमाह्वानिमूपागतस्यलेकावसानस्यविनिश्चयाय
 मानवापितुलेनववकुलधनलकुमशअहाहि॥मयपीगने॥कुलेनयविकल्याने॥यकुसर्वगुलेयकीवर्जनवनिवात्रिलि॥वतवर्गसमेकपितस्यधनलमिषागे॥अ
 नेनापिहिदाधेलेलअलअस्यदुषितभाअमूल्याद्वगर्महागवर्जहवेनिवानने॥यकठानेकदाषस्यस्यस्यमहतापिवा॥समूल्यावृगर्माहास्यवकुस्यनविधीयगाअ
 सहादाधमलका॥वर्जयद्यपिदृश्यन॥त्रलीनायविकसोथ॥मूल्यानस्यरुवलेपु॥पुथर्मगुलेसम्यदायुपनिवर्द्धसमर्थनियत्रदाधभाअलमारुवलेननस्यजास्ती ८०
 दुलाहीनापिमामन्नदुषलभय॥नायविदुसधयगुलवदपिसुगुसुकिमिदुन्या॥अन्यवेदीयविपिट॥अशत्रुगुलेविमूका॥अयगपूषावाएल॥गथगमभेदकनय
 वेदुयसुटिकाया॥अकावित्रापिपथग्विषेश॥पुनिनूपातिकवेनि॥वकुस्यकुलजाजना॥पनीकागयुकुल्या॥विदुहि॥सुपनीकके॥काभास्त्रखनम॥अहिमका
 कार्यपनीकली॥एथिवायानिन्तानिथवायलाह॥भगवशसुवालिविलिखदेर्दवर्जननेविलिखन॥गुत्रगसर्वनेतानापोत्रवाधनकात्रली॥वर्जनमेपनीलेनसु

त्रयःपत्रिवर्ग॥अतिवडातिविलिखनिजातिविलिखनिवकुसुविन्द्या॥वर्जेवर्जविलिखनि॥नान्यनविलिखनेवर्ज॥वजालिमूकामनया॥यवकचनजागयशयद्यपि
 विशीर्लकादि॥सुविन्दुनरान्वितोविवर्णवा॥नदेपिधनधन्यपूगनकनामिमुन्द्याय॥धवकु॥सादमनीविस्फुगातिवार्म॥नाजाय॥धर्ककुलिगन्धधनश॥पनाकमाकान
 पत्रवगाय॥समरुमासकुरुर्वकुनकि॥॥॥त्यादिमहापूना॥गभूवकुपनीका॥६८॥॥सुगडवीव॥द्विपन्दुजीमूगववाहगह्व॥मस्याहिगुक्रुवववजाति
 मूकाहलानिपुथिगानिलाका॥गया॥क्रुवमवहनि॥नस्येववेकस्यादिमूलमाणा॥निविश्यनत्रपत्रस्यजाकुविधुनु॥क्रुवमवगेषी॥गया॥धवध्वानिव
 दकिगह्व॥लकुसानना॥गन्धमिनिपुसू॥यदे॥वर्जयत्रववाहजागभायाविमूका॥निरुवनिहावा॥लकानिमङ्गलयागथापि॥यामेकि॥कानामिहजागयाशेष
 कीर्तिगानत्रविनिश्चय॥शकम्वरुवने॥धर्मपुदिह॥सुत्ययने॥यत्रगेजुन्दुकुम्भ॥सयातिमध्वकुविदुल्यवकु॥गह्वरुहलामहर्लपुमालभाउत्ययनेवात्रल
 क्रुममध्व॥दापीनवर्लपुहयाविहीनम्॥यकम्वन॥६९॥हिमूखावमधि॥पीनस्य॥गह्वपववस्यगण॥मगह्वजा॥अपि॥विशुद्धवस्था॥कुमोकि॥कानांपुरुवा॥७०॥दिह॥॥

४॥ पाप्मीन एष स्य समानवर्णः मीनात्सवर्णः लघुवानि सुदृग्मा उच्यते वा विवृणान लंघु मत्स्याश्च न मध्यावनाः पश्चादध्यावना रुदं कुप हवंपदिष्टं तस्योवदं कुप
 कुल्यवर्णः कविकुथश्चिन्मुरुवः ४ पुदं लंघु जायते शक्यं नो द्विजिह्वः ॥ वधाय लानी समवर्णः लम्बः लक्ष्मणपर्वपुहवंपदिष्टं मानव लव दिव्यज नायका ॥ ५ ॥ कृति
 पुनो ह किन सावेज्या ॥ होजे झमनी लविशुद्धं दृष्टं संस्क्रानतां कृत्वा लवर्णः ॥ ६ ॥ निगन्तुं धोतुप वि के म्यमान निमिषा धात्रा मेमवर्णः कानि ॥ पाथानि न तानि महा
 युहालि वाई हियं वामहणदूनापभा पार्थहिना पूष्य कृता रुवनि मूका रुल स्या हि ॥ ७ ॥ गारा वस्य ॥ ८ ॥ स्या यान्त धर्न विधिः ८ ॥ गुरु मूदुरु पयः ८ ॥ पुयत्नो ८२
 गानका विधानं समहद्विधाय रुमार्थय विष्टं क्रियते यदा न ॥ यदाम हादुन्दु हेमकु धाधि विधुन्ना विदु पिना नाले ॥ ९ ॥ पथाधना कानि विलम्बि विष्टे यने यने वीजियने
 के वीक म् ॥ ननं कुज झान रुया रुधना नद्याध्या नय पसर्जया ॥ १० ॥ हे सति यस्या हि नि ४ समूर्त मूका रुलं निष्टु कि पूष्य मान म् ॥ नारुति भयपुहवंध निष्टु विय
 रुतक द्विधु हन कि ॥ ११ ॥ श्रुति श्रुता वन दिष्टि रार्ग मादि सवद्व ४ ख विहाय विष्ट म् ॥ १२ ॥ ज सिन ह्म ल्य दू गान नन्द ने कृता वपुहवंध समर्ग ॥ दिवाय थादी कि कन कथे वन

भापिगडा स्वपि नन्निगस ॥ विविन नल्युनिसात्रगाय वरु ४ समुद्रा रुव लपयन्ता ॥ रुग स्रान वास्यादि निनिश्रयाम मूलं महीनस्य सुवर्णं पूर्णं ॥ हीनापि यरुन्न रुगे
 कदापि द्विपाक यागमह ४ ॥ १३ ॥ रुस्य सयत्न हीना समहीन मर्ग रुन किं गति रु नि यावद वान कवर्णं रु रुन्त पस्य ॥ १४ ॥ जाना म पिगस्य ज मा गश्रुज ताना म्यपि ४ स
 रुर्ग सर्वो ननं वा विमूखी क भानि ॥ न रुग मोल वन मा विगी लू द का वेली न स्य मे हा मून स्या विविन व लूष विशुद्ध व लूष पय ४ स प स्य ४ पय सां पयोग ॥ समूर्ण च द्य ॥ १५ ॥ कलापको
 के मलिपुव कस्य महा गुल स्या रु क कि मपू रुग मा पवीऊ मा स न्यु राय न्य रु वानि यानि ॥ यस्मिन् पुदं लामु नि रक्षेप पाग स्या वान मूका मलि नल वीज माग सिन्य ये साय
 धवावकी लू ॥ १६ ॥ कोलि न मो कि क गाम वाया ॥ १७ ॥ हन क पा व लो कि के मो ना डि क गाम क लू प व स ग शो व र पा शि क वा रु ह म क ४ ॥ १८ ॥ क ना ल ख ॥ १९ ॥ रु रु न ना नि रु रु व लू
 यमाल संस्क्रान गुल पुहा हि ४ उच्यते वरु न पा व सी क पा व ग ला को रु व सि ह न व ॥ विद्या न ग स्य क रू जा वि लया नृ य पु मा ल वे य न ग वि दान न व य व ल्हा हि गु ल गु ल
 पू सर्वं रु सर्वं रु ग या रु व नि ॥ २० ॥ के स्य १३ कि पु रु व स्य मूका रु ल स्य वा य न स म नि ग स्या मूल्यं सह सा लि रु नृ य काना ति हि ४ ॥ २१ ॥ न न स्य धिका नि ये ४ ॥ यमा स को र्ध न ग ना

विहीनं तस्यैतद्गद्यहीनमूल्यमायमासकमुविधूयान्तरसेधं तस्यमूल्यं पत्रमपु दिष्टं ॥ अर्द्धधिको दो वहास्यमूल्यं ॥ ६८ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ दिमासका मापिगणेन
 वस्य ॥ नानातिवाको कथनानिमूल्यं ॥ अर्द्धधिकं मासकमूल्यं तस्य सपञ्चविंशतिर्यनानामागुञ्ज्यस्य द्वावयनं ॥ ६९ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ मूल्यं पत्रकस्य विदितं ॥ ७० ॥ अर्द्धधिकं मासकमूल्यं पत्र
 नंगं तस्या ॥ मूल्यं गुलेस्य समेनितस्या यदि धाउण हिरेदनेन धनं लं न पुवदनि दारि कोरवी ॥ अधिकं न्य ॥ ७१ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ समवाप्राप्य पिवालिगस्य हस्तानां दिगुलेदं ॥
 हिरेदनेन धनं लं न पुवदनि ॥ ७२ ॥ नवसफ निमाप्राप्य तस्य मूल्यं यदि न स्याद्गुल समदा विहीनं ॥ ७३ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥
 मूल्यं विनिश्चयशब्दा विज्ञातं वक्तुं ॥ ७४ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥
 वक्तुं तथामूल्यमनु कमाग ॥ अदाय तस्य कलमेव नाना लं ॥ ७५ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥
 ॥ मूल्यं फलं पटमं अगते सु कला ॥ पञ्चात्पत्रं नूतनं विज्ञातं पञ्चात्पत्रं ॥ मूल्यं तस्य ॥ ७६ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥

नियर्षलन स्यामोकि कविमलसङ्गल कानियुक्तं ॥ अर्द्धिकं गद्यगर्हा हिमहापुलासि वसिष्ठा विदयश्चिह्नं न्यपत्रया दयालु ॥ ७७ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥
 अथ धार्थ्यं मोकि कंदहृषलं ॥ ७८ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥
 दनीयासु ॥ ७९ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥
 वक्तुं विनिश्चययुक्तं ॥ ८० ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥
 तस्य हस्तं नमनं ज्ञातं ॥ ८१ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥
 मूल्यं हस्तं नमनं ज्ञातं ॥ ८२ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥
 मूल्यं हस्तं नमनं ज्ञातं ॥ ८३ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥
 वेपथुं हस्तं नमनं ज्ञातं ॥ ८४ ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥ अनेत्रयधिकं सहस्रं ॥

पायापिनत्राः कनकां सुजातिः लक्ष्म्युत्तरेन गुणैर्न विद्वान् ॥ अपलं च तिसृषु हः शलायां पत्रिणु खयं ॥ स्वजातकसमूहान् लिखन्नापि यत्र स्य नमः ॥ वज्रमाकूटवि
 न्दम्बा विमं चान्येन केन चिन्ना नो ज्ञात्वा लेखनं कुरु ॥ पद्मनाभं तु नीलयाशां जातस्य सर्वमं लङ्कितं विज्ञातं यः सन्निमानवत् ॥ शतं अपि नानाकं नथार्थमवैयत्र
 मं रुदयकोत्रं पुदिष्टं ॥ गुल्मपयनेन महाववक्षा मलिमुक्षये विगुल्मपि जात्यशने को मुरु नापि सहाववक्षे विद्वान् विज्ञाति विरुयान् कदाचिन् ॥ वल्लु
 लुकोपियथादिजातीनः समस्य रूनी लपि ह न्येयत्ता गान्धामली नरु विगुल्मपयनान् नकोपि विज्ञावयिहं विज्ञाति ॥ सयत्नमश्च पिकुताधिवारं समोदवर्त्ता ८४
 वेपिवर्त्तमानमानयद्वा नोगस्य महागलस्य रूपावेमायस्य गीरीह काचिन् ॥ दायापे सन्ने सुरुवाञ्चयन् नापदवार्त्तं समहिदुवन्ति ॥ गुरोः समूहं जितवान् नो
 गं यः पद्मनागेऽप्यगं विरुहि ॥ वज्रस्य यत्तु लर्मस्वाभार्त्तं मूल्यं समूहोदिनं जेन वस्यात्पद्मनागस्य महागुलीस्य तन्मासकञ्चापकलिनस्य मूल्यं ॥ वल्लुदी
 प्यपयन्तं हि मलिनवर्त्तपुलस्य गं ॥ आस्यामीषदेपि कुर्त्तं मलिमूल्यं गृह्ययन् ॥ ॥ १० ॥ आदिमहापुत्राणां मूर्त्तं पद्मनागपत्रीका ॥ १० ॥ ॥ सुगुडवावादा

नवाधिपतः पिरुमादाय रुजगमधिपशदि धाकूर्त्तं निवशामः सत्वरं वासुकिर्यथो ॥ सुतदस्य सिवान्न पहादीफेनहा मूर्त्तौ ॥ राजगः समहानिकः खलु मुरुत्रावहो ॥ तगः प
 अनिरागनः सहवन्ति वनादमी ॥ गन्तुमानपन्नं लुस्य पुद्गु मूपवकेम ॥ सहस्रैवममो वनं रुली न्युमूनसाकृत् वनलिकावनगं श्वेतासिनाय विनमालिकृतिनयत्य
 कायाम् ॥ तस्य पुपात समनके कवाले भवेत्तद्दूनालयमगीत्य नूमा समीपि ॥ कान्तिदिने नृपयथो निधीतीवलेखं तस्य ल्यया स्मात्रकवर्त्तजगम ॥ मूर्त्तवकिश्चिन्त्य निगम्ये
 लादूत्य ल्यजगमहगगी गन्तुमान् ॥ मूर्त्तपत्रीनः सहस्रैवया लः तस्य दयवपूमभावमर्त्तं ॥ गुराकः लवणुकेकं ॥ जिवीषयुषा खद्यानपुष्टवन् लक्ष्मल्लोवलानामाक
 क्ता न सम्यक् कुरुजं कुरुजा ॥ पत्रं पाकं द्विषाम न केनो ॥ गुरुदाहवन्ति ॥ यद्येव गमगी न्युजुजा विमूर्त्तं पापागपि हं दिज्जाधिपस्य ॥ स्याकनस्यो हिननी सदेक्ष
 दूःखापलस्य गुरोः ल्ययुक्तं ॥ तस्मिन् नवकं कान्तिः यत्किश्चिद्पजायन् ॥ तस्यैव विषवैगमनां पुनमायुषकी ल्येन ॥ सर्वममोषधिगुरोः यन्नेनार्त्तं विविकिन्ति
 कुं ॥ महाहिदं दूपापहर्वं विषं गहनं जेम्यनि ॥ अन्यदथा कथं न यद्येव नृपवर्त्तं नमः ॥ अत्यन्तं हरिणं वल्लुः कामलमस्त्रिर्विहदज्जटिलं ॥ काश्चिन् नरुत्तं स्यात्तः पूरुमि

वल्लभं यच्च ॥ यत्कर्मसंस्तुतगुणोऽसमवाप्तनोदवलविहीनभासविरुद्धकर्मसंस्तुतं ॥ कुत्रयनिर्मुक्तं यदीत्याह ताव ॥ हृदि न्युपहारं यस्यानं विनिर्दिष्टा न वदी
 किं ॥ अविच्छेदपुण्यं ॥ हृत्तवत्तमद्वैतसन्निहाता ॥ यत्तममनसं पृथग् ॥ विदधति निर्वाहमनिमोहं ॥ तन्मन्त्रकर्ममहागुणं ॥ मित्रं नृविदामनां वृत्तिशिवं स्यात् ॥
 वदुता यस्यानं ॥ सुकुर्वन्त्येव विधेयं ॥ सांख्यसिद्धविद्युच्चकामैर्लह्युतायिसमकानि भावलोका लयाकांक्षा सांख्यकांक्षा विहासुयाहानि ॥ नयपिपुलवत्सं
 क्रोमां प्रातिहियादुतिपूर्वभाषणलक ॥ भेदमलिर्न त्रयं पाषाणककोशोपेन ॥ दिग्गोष्ठिलयितुता मन्त्रकर्मवैविध्यं विगुलभायसंविद्युच्चित्तमन्त्रमन्त्रनाकत्र
 गार्हपत्यं ॥ अथैकांशं नैव द्वैतं ॥ कुत्रार्थवाक्यं ॥ नैव ज्ञानकपूजिकावत्तद्वत् ॥ समयागतं ॥ मन्त्रकर्मवैविध्यं नैव क्लीयो विज्ञानयशोमनवाप्तसाध्यसादी
 किं त्वज्जिपुत्रिको ॥ लाद्यवनेव कावसा ॥ अथाकलं विहावना ॥ कस्यविदने कश्चिन्मन्त्रकर्ममनुगच्छतां विगुलवत् ॥ शृङ्गा नैव कस्यानां कुर्वेद्यमर्थेति वदुता
 ॥ वदो लिमूको सन्त्यन्यथैव विद्विजने यशसि नान्यपतिवद्वानां ॥ तावद्वत्तममिनी ॥ अहं तावद्वत्तममिनी ॥ कथं विद्वज्जायते ॥ नित्यं मलाकमानानां सुद

८७

अथैव लक्ष्मि ॥ स्तानां च मनज्ज्यं ॥ वदुता मन्त्रिकिया विधेयं ॥ ददति ॥ ज्योतिर्वत्तमि ॥ द्यूतिश्च साधनानि वाद्येव पिता ॥ इत्यथ ॥ गुत्रं पूजनेन वा वाक्षमानं विषमैर्दो
 षज्जनि विधादुवेष्टा ॥ दास्येहीनं गुणैर्युक्तं ॥ काश्चनपुत्रियाजिनां ॥ मन्त्रमन्त्रविवेचि ॥ धर्मं मन्त्रकर्मवैविध्यं ॥ अलयापद्मनागस्य यन्मूल्यमप्यजायते ॥ लहर्गस्यधिकं न सा
 नुलोमन्त्रकर्मयुक्तं ॥ यथावपद्मनागमर्त्यं दास्ये मूल्यं पदीयते ॥ नानासायाधिको हानिर्दास्ये मन्त्रकर्मवैविध्यं ॥ ॥ अथादिमहायुत्रोत्तममन्त्रकर्मवैविध्यं ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ सुगुणवाच ॥ नैव वत्तममिनी ॥ वदुता मन्त्रिकिया विधेयं ॥ ददति ॥ ज्योतिर्वत्तमि ॥ द्यूतिश्च साधनानि वाद्येव पिता ॥ इत्यथ ॥ गुत्रं पूजनेन वा वाक्षमानं विषमैर्दो
 षज्जनि विधादुवेष्टा ॥ दास्येहीनं गुणैर्युक्तं ॥ काश्चनपुत्रियाजिनां ॥ मन्त्रमन्त्रविवेचि ॥ धर्मं मन्त्रकर्मवैविध्यं ॥ अलयापद्मनागस्य यन्मूल्यमप्यजायते ॥ लहर्गस्यधिकं न सा
 नुलोमन्त्रकर्मयुक्तं ॥ यथावपद्मनागमर्त्यं दास्ये मूल्यं पदीयते ॥ नानासायाधिको हानिर्दास्ये मन्त्रकर्मवैविध्यं ॥ ॥ अथादिमहायुत्रोत्तममन्त्रकर्मवैविध्यं ॥ ॥ ॥
 ॥ सुगुणवाच ॥ नैव वत्तममिनी ॥ वदुता मन्त्रिकिया विधेयं ॥ ददति ॥ ज्योतिर्वत्तमि ॥ द्यूतिश्च साधनानि वाद्येव पिता ॥ इत्यथ ॥ गुत्रं पूजनेन वा वाक्षमानं विषमैर्दो
 षज्जनि विधादुवेष्टा ॥ दास्येहीनं गुणैर्युक्तं ॥ काश्चनपुत्रियाजिनां ॥ मन्त्रमन्त्रविवेचि ॥ धर्मं मन्त्रकर्मवैविध्यं ॥ अलयापद्मनागस्य यन्मूल्यमप्यजायते ॥ लहर्गस्यधिकं न सा
 नुलोमन्त्रकर्मयुक्तं ॥ यथावपद्मनागमर्त्यं दास्ये मूल्यं पदीयते ॥ नानासायाधिको हानिर्दास्ये मन्त्रकर्मवैविध्यं ॥ ॥ अथादिमहायुत्रोत्तममन्त्रकर्मवैविध्यं ॥ ॥ ॥

मिनशजायकमनयसुमिन ॐ न्यनीलामहागुलम ॥ मरु पाषाणि नावत्य कर्कनासमयगाश अत्रिकापटल क्वाया वल्लुयधेयदधिता ॥ ननवदिजायक
मलयसुगहयशमसुमेवाधिनधियः नानपुर्णमनिःशून्ययः ॥ धर्ममालस्ययदृष्टा पद्मनागमालजुलमधमल दित्यनीलस्य नानवोप्रातिमानवश ॥ यथावपद्म
नागमलजाककणिमयहवता ॐ न्यनीलस्यधिनथा दृष्टव्यमविशयन ॥ पद्मनागपत्न्ययः पद्मनागपत्नी ॥ ननुवपत्न्ययदृष्टा ॐ न्यनीलमनावपि ॥ याव
कश्चकुमदग्नि पद्मनागपत्न्ययगता ॐ न्यनीलमलि सुस्मान कुमनसुमहुरुवमा ॥ तथापिनपरीकार्यगुलनामनिवृद्धय ॥ मुनिनागोसमाधयः कथं दधिकथन ॥ ८४
अग्निमागपत्निकान दाहयधेयदधिता ॥ मोनभयेरुवकुं ॥ केरुकावयिहसुथा ॥ कावात्यलकनवीन सृष्टिकाय ॐ हवेषः सर्वदूर्याः कथिनाविजानय ॐ म सुदलम
लिनन्यनीलना ॥ पुनुरावकावतहा वा वेनेषान्तिहवावमविरुथो कावना सुथावदुवविवर्द्धमाना विषय ॥ ॐ न्यनीलो यथा कश्चिद्विहर्हिनामवर्द्धनामावर्द्धनी
योगथागमो कवतीनात्यलाव ॥ यस्यामधगताहोति नीलस्यद्ययधपरागदित्यनीलमित्याह मर्हायतु विदुर्ज्ञेय ॥ यस्तुवर्द्धलयत्नाकदीपनागुललिनगनीलना

ननयसुर्वमहानीलसुडयन ॥ यत्पद्मनागस्यमहागुलस्य मूल्यं रुधमासमसुल्लिगस्य गदित्यनीलस्यमहागुलस्य सवर्द्धसखागुलिनस्यमूल्यं ॥ ॐ त्यादिमहापुना
॥ गमत्रु ॐ न्यनीलपत्नीका ॥ १२ ॥ ॥ सुगडवाचोविदूर्यपुष्पोनागमलीकक्केनेहीककवदुपत्नीकाविदुर्लपिका बोधनकथिनादिज ॥ कल्यानेकालद्रुहिनाम्वनागिनिद्रो
दकल्यादिनिजस्यनोदागविदूर्यमस्यनमनेकवर्द्ध ॥ मरुहोतिनामधुनिवर्द्धवीजमा ॥ अविदुर्नवेदूर्यस्य गिन्नुकुं नोधसः कामरुनिकसीमानननूगस्योकाहव ॥ गस्यदान
स्यमूर्त्तत्वा दाकोवःसुमेहागुलम ॥ अरुद्धरुनिगलाके लोकयविरुषल ॥ नस्येवदानवयने नितनदानरूपया विदुषयाधनवदजितो नूत्रपाशवेदूर्यवत्तमलयाविविध
वेहासा सुस्मानसुलिङ्गनिवहा ॐ वसुमहवृशा पद्मनागमपादाय मलिवर्द्धादिथदिगी ॥ सुर्वोस्मानवर्द्ध ॥ मरुहोति वेदूर्यमनूगकुनि ॥ गस्यपुष्पान्तिखिकलनीलं यदाह
वेदुर्लदलेपकोगीमा वाखापद्रुपुतिमागुयाथ ननपुष्पामलिगसुविदि ॥ गुलवानवेदूर्यमलि योजयतिस्वामिनेकवहा ॥ यद्येदधेयकादधिसुसा यत्नागपत्नीकन ॥
गिविकावगिगुपालो कावसृष्टिकाधधूमनिर्हन्ताशवेदूर्यमलनन विदुर्लनयः सन्निहोः सन्ति ॥ लिखाहावाकोच लघूहावाचुषकविद्या ॥ गिपिकावमेदीफित्वा

मूलादिकवर्णकलखन॥यदिच्युनीलस्यमहागुणस्य॥सुवर्णसंख्याकलितस्यमूर्त्या॥नदवेदूर्यमलशुद्धिर्ह॥पलद्वयान्मापिनगोत्रवस्य॥आद्यस्यसर्वपिमागसुयादकविजा
नय॥सकिममानवर्णशगथपिनानाववभर्थभय॥रुदपुका३४पत्रम॥यदि६॥सदापलेष्टुमयाविवायार्थयुहदाविद्वाननलाभहपरेदाभदुगालयुर्व॥विजोगिलि
रुंखलेसावर्जनी॥कृणलाकृणले॥पयुष्टमाना॥पुनिवद्वा॥पुनिसुयथा॥ने॥गुणदायसमूहवर्तनक॥मलयार्थनवमूल्यनहिनाश॥क्रमश॥समगीनवर्णमल॥पुनिवद्वा॥म
लिकेनयत्तागायदिनामहवनिदाषहीन॥मलय॥षड्गुणमात्रवनिमूर्त्या॥आकाशानुसमगीनाना॥मृदधस्तीवसन्निष्ठा॥मूल्यभनमलीनानुनसर्वमदीनला॥सुवर्णमर्थ ६१
नायसु॥प्राक्केषा॥उगमाषक॥गस्यसफनिगमाराग॥सुहृन्पुष्टपिष्टाणि॥मूल्यरुमासमाना॥माषक॥प॥रुष्टु॥क॥पलस्यदशमा॥रा॥म॥धन॥१॥पत्रिकीर्ति॥१॥००॥
मानविधि॥प्राक्का॥नताता॥मूल्यनिश्चय॥॥००॥यादिमहापूना॥गम॥रु॥वेदूर्यपवी॥॥१॥३॥॥सु॥रु॥डवा॥य॥पत्रिगोयाहिमा॥डो॥रु॥वसु॥सु॥नदि॥ष॥१॥पाद॥रु॥व
किगा॥य॥य॥पू॥ष्य॥वा॥ग॥महा॥गु॥भ॥१॥आपी॥न॥पा॥पु॥न॥वि॥न॥पा॥या॥लि॥पू॥ष्या॥वा॥ग॥सं॥रु॥मु॥को॥रु॥का॥ना॥मा॥न्या॥स॥व॥ये॥दि॥ला॥हि॥गा॥पी॥न॥१॥अ॥लो॥हि॥न॥मु॥पी॥न॥१॥सु॥व॥१॥का॥षा॥य॥क॥१॥स॥नु॥वो॥क॥१॥

अनीलवर्णसिन्धु॥सामलिक॥सुगुण॥१॥अ॥त्य॥न॥ला॥हि॥गा॥य॥१॥स॥न॥व॥ख॥ल॥प॥द्व॥वा॥ग॥म॥लि॥१॥स्या॥अ॥पि॥व॥च्यु॥नी॥ल॥सं॥रु॥१॥स॥नु॥व॥क॥थि॥न॥१॥सु॥नी॥ल॥१॥स॥न॥म॥ल्य॥वे॥दूर्य॥म॥ल॥वि॥व॥ग॥दि॥न॥
क॥न॥ले॥भ॥सु॥वि॥दा॥॥ध॥न॥रु॥ल॥१॥रु॥द्व॥न॥कि॥रु॥मु॥ली॥सं॥रु॥य॥दा॥रु॥व॥नि॥॥॥००॥यादिमहापूना॥गम॥रु॥पू॥ष्य॥वा॥ग॥प॥वी॥का॥॥१॥४॥॥सु॥रु॥डवा॥य॥वा॥य॥ने॥खा॥न॥दे॥त्य॥पा॥गे॥रु॥ही
ला॥वि॥रु॥प॥सं॥प॥न॥त्य॥व॥ले॥षु॥दे॥रु॥श॥न॥१॥य॥सु॥न॥य॥व॥ना॥प॥प॥न॥॥क॥र्क॥न॥न॥पू॥ष्य॥न॥म॥प॥थि॥वा॥भा॥॥व॥र्ण॥न॥रु॥द्वि॥व॥स॥म॥म॥धू॥य॥का॥श॥मा॥गा॥मु॥पी॥न॥दे॥रु॥नो॥रु॥लि॥न॥वि॥रु॥नि॥नी॥ल॥पू॥न॥भ॥व॥
ले॥सि॥न॥पू॥न॥रु॥ष॥वि॥हि॥न॥॥वा॥॥आ॥दि॥दा॥ष॥क॥ने॥न॥न॥रु॥दि॥रु॥नि॥॥सि॥न्धु॥वि॥रु॥द्व॥१॥स॥म॥वा॥गि॥ले॥॥आ॥पी॥न॥व॥र्ण॥गु॥न॥वा॥वि॥वि॥ग॥श॥गा॥सु॥द्व॥या॥ल॥वि॥व॥र्जि॥न॥॥॥क॥र्क॥न॥ना॥रु॥प॥व॥न॥वि॥
वि॥ग॥श॥पा॥ने॥ल॥का॥१॥न॥म॥थ॥न॥रु॥व॥रु॥यि॥त्वा॥न॥रु॥य॥दा॥रु॥न॥व॥रु॥ह॥रु॥व॥नि॥प॥का॥श॥भा॥॥वा॥ग॥प॥न॥१॥न॥क॥न॥क॥लि॥ना॥न॥न॥॥दा॥रु॥ष॥न॥क॥ल॥क॥न॥व॥सु॥ख॥प॥द॥१॥॥व॥वि॥ध॥व॥दु॥गु॥नी
म॥लि॥मा॥व॥ह॥नि॥॥क॥र्क॥न॥न॥रु॥क॥ल॥रु॥न॥य॥न॥वा॥य॥॥ने॥पू॥जि॥न॥व॥रु॥ध॥ना॥व॥रु॥वो॥ध॥वा॥॥नि॥त्या॥रु॥ला॥१॥प॥मू॥दि॥गा॥अ॥पि॥न॥रु॥व॥नि॥॥न॥क॥प॥ल॥या॥वि॥रु॥ना॥क॥ल॥नी॥ल॥रा॥स॥१॥पू॥
षु॥न॥वा॥ग॥ल॥लि॥गा॥१॥क॥ल॥रु॥वा॥वि॥रु॥पो॥श॥॥न॥॥जा॥नि॥दी॥पि॥क॥ल॥रु॥वि॥हि॥न॥व॥र्ण॥१॥क॥र्क॥न॥न॥स्य॥स॥द॥र्ग॥व॥पू॥न॥द॥रु॥नि॥॥क॥र्क॥न॥न॥य॥दि॥प॥नि॥न॥व॥र्ण॥रु॥प॥॥प॥त्य॥ग॥रु॥रु॥व॥दि॥वो॥क॥न॥

सुपु काशभा गत्ये रुमस्यमलिभक्तु विदाम हि मा रुत्यानु मूल्यमतिरनु लितस्य कार्यमा ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लग्नभूत कर्कतनपनीका ॥ १५ ॥ ॥ सुगडवाचा ॥
हिमवत्युत्तरेदरावीर्य पतिर्ग सुत्रदिष्यमा संपाकि मूलमाना मा कर्ण हीषा नृतेना पुक्रा कुशक कुनिहा ॥ १६ ॥ ॥ सुगडवाचा ॥
कुनिहा हीषा पाषाणमशुमादियुक्तिवद्धा सु एवमपि पुद्ध याविधलय ॥ १७ ॥ ॥ सुगडवाचा ॥
समीपयि ॥ द्वीपिकुशत्रुके ॥ १८ ॥ ॥ सुगडवाचा ॥
हे नर्या लपि रु ल क फिर्वदू वार्धिका रुवति ॥ १९ ॥ ॥ सुगडवाचा ॥
पूत्रुषपीनपुहपरा हीन मा मलिनयुक्तिविवर्ण दूना ये विवर्णय नपा रुश ॥ २० ॥ ॥ सुगडवाचा ॥
सूतानी ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लग्नभूत वेदूयोदिपनीका ॥ १६ ॥ ॥ सुगडवाचा ॥
पूत्रुषपीनपुहपरा हीन मा मलिनयुक्तिविवर्ण दूना ये विवर्णय नपा रुश ॥ २० ॥ ॥ सुगडवाचा ॥

सुपिनाश्वनखनारुजग ॥ १ ॥ सुपुकाशं सुपुयानवपतिपथिगपय ॥ २ ॥ दाशभर्तु वागद नमकल काल कायो ॥ ३ ॥ सुगडवाचा ॥
सा जगयगला ॥ ४ ॥ पुलका ॥ ५ ॥ सुगडवाचा ॥
मेरुग मलवका ॥ ६ ॥ सुगडवाचा ॥
७ ॥ सुगडवाचा ॥
८ ॥ सुगडवाचा ॥
९ ॥ सुगडवाचा ॥
१० ॥ सुगडवाचा ॥
११ ॥ सुगडवाचा ॥
१२ ॥ सुगडवाचा ॥
१३ ॥ सुगडवाचा ॥
१४ ॥ सुगडवाचा ॥
१५ ॥ सुगडवाचा ॥
१६ ॥ सुगडवाचा ॥
१७ ॥ सुगडवाचा ॥
१८ ॥ सुगडवाचा ॥
१९ ॥ सुगडवाचा ॥
२० ॥ सुगडवाचा ॥

नमो नरु ल्यं हि नत्ता नमथवापापनाशनमासु र्गलित्यनामद्या मूल्यकिं प्रिन्नरुग ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठसू निकपनीका ॥ १७॥ ॥ सुतडवाच ॥
आदाय गवसु स्या ॥ यमा स्या कमला दिव्य विदुषः पण्डिताय न विदुमा ॥ सुमहागु ॥ १८ ॥ नृपक्षर्तनलिलादिगर्ग गुप्ते वापूष्य निरुपविष्ट माससीमर्कदव
कवापमश्नो नो निरुपुसरुं सुवागे मा ॥ अन्यजुजागश्च नरुपुक्षर्तन मूल्यं रुद्वि लि विरुषया गता ॥ यसु नैका मली सिद्ध सुनाग विदुर्म हिन गधने क्षत्रो के न लोके
विषा कि रुयनाशनमा ॥ पनी कायूल काश्चा का ॥ ३ ॥ धिना र्वा स्या वे म ॥ १९ ॥ टिक स्य विदुम स्य तत्तु नाना य ॥ २० ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठ वत्तपनी ८९
का समाफ ॥ ६० ॥ ॥ सुतडवाच ॥ सर्वगीर्धनि वञ्चामि गङ्गागीर्धनि मा रुमा ॥ सर्वगुल हा गङ्गा विष्णु कानं वृद्ध लहा ॥ गङ्गा द्वा प्रयागं गङ्गा सागुत्र सङ्गम
पुयागं पनर्म तीर्थ मृगानी रुकि मुकि दं ॥ सेवना रु गपि पुनर्पाप हि कामदं नृ लभ मो वा नाल सी पननी र्थ वि ॥ २१ ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठ वत्तपनी ९०
रुकि मुकि दं मापु रासं पनर्म तीर्थ मम ना र्था हि नृ व ॥ दान कावपूनी नम्या रुकि मुकि पेदा यिका पात्री सन सती पू ॥ सफ सा न सनं पन म ॥ के दानं सर्व पापघ्नं

सर्वेषामपि उरुम ॥ नननावाय लं तीर्थ मर्त्य वदत्रिका शुभमा ॥ २२ ॥ नदी पं पनी माया ने मिषं पुष्करं पन मा ॥ अथा ध्या वा र्थ तीर्थ ॥ विगु कू ट ॥ २३ ॥ गम मती ॥ वे नाय कं महा तीर्थ
नाम गिर्या शुभं पन मा का कि १ ॥ पूनी रुद्र रुद्रा जी लो लं न ल सु रु वे ॥ नाम श्व रं पन तीर्थ रु कि मु कि पेदा यक मा रु गु रुद्र काम तीर्थ तीर्थ शुभ मत्र क ॥ २४ ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठ वत्तपनी ९१
शीध नो रुद्रि ॥ कृष्ण मुर्क महा तीर्थ काल सपि श्व काम दमा ॥ महा के शी व का वनी वन्द हा ग विपा ग या ॥ ने वा मुश्च महा तीर्थ वृक्ष लं दि वि का ट न मा ॥ मथु ना व पूनी नम्या ॥ २५ ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठ वत्तपनी ९२
व महान द ॥ २६ ॥ ॥ सुतडवाच ॥ सर्वगीर्धनि वञ्चामि गङ्गागीर्धनि मा रुमा ॥ सर्वगुल हा गङ्गा विष्णु कानं वृद्ध लहा ॥ गङ्गा द्वा प्रयागं गङ्गा सागुत्र सङ्गम
वा द्वा र्थ ॥ २७ ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठ वत्तपनी ९३
रुकि रु कि ॥ पू ॥ वृद्ध न क तीर्थ कार्त्तिक य ॥ य ॥ वि नृ ज नृ मु हा तीर्थ तीर्थ श्री पू नृ धा रु मी ॥ रु ग लो र्थ रु कि द ॥ २८ ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठ वत्तपनी ९४
दान दी ॥ विरुषा पाप रु रं तीर्थ नमो दा रु द रु म ॥ २९ ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठ वत्तपनी ९५
॥ १ ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठ वत्तपनी ९६
॥ २ ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठ वत्तपनी ९७
॥ ३ ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठ वत्तपनी ९८
॥ ४ ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठ वत्तपनी ९९
॥ ५ ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना लगभूठ वत्तपनी १००

[illegible][illegible]

गीर्थ्यासया निनसंयश उक्त ह्यासनापानं कर्यं गुर्वेक्षनागमः॥ पापं तत्संज्ञं सर्वं गयाश्रद्धादिनश्यति। अस्मिन्कृतं मन्त्रं यत्र पशुवोनहनाश्रयः॥ सूर्यदह्याद्वयाश्रद्धा मूलाः॥
 सूर्यवृक्षकिर्णः। गयायां पिलुदानेन यत्कृत्वा लंलेहनेन वशातन कृत्वा मया वक्तुं वर्षकोटिगतिरपि॥ ॥ १०॥ **ह्यादिमहापूजा** गयामाहात्म्यं॥ ८२॥ ॥ वृक्षावाचः॥ कीकट
 षू गयापूजाः पूज्यं वा ऊर्ध्वं वनमाविषये श्रद्धा वनः पूज्यं नदीनां पूज्यं पूना॥ मूलं पृथक् पूज्यं मित्रं पश्चिमं दक्षिणं रुद्रं साक्षं कोशद्वयं मानं गयायां पत्रिकीर्तनमाप
 षुको गगयाक्षं कुंकोशमर्कं गयोनिनशातं पिपिलुदानेन नृपि कुरु वनिः श्रद्धा गी॥ नाम कुरु नोर्देनाञ्चैव कूपाञ्चालनमानसात्। पत्रं दया शिवः पार्कं हृत्पुत्रीर्थं नद्वयं॥ ॥ ११॥ ॥
 पिलुपदानेन यत्कृत्वा लंलेहनेन वशातन कृत्वा मया वक्तुं वर्षकोटिगतिरपि॥ ॥ १०॥ **ह्यादिमहापूजा** गयामाहात्म्यं॥ ८२॥ ॥ वृक्षावाचः॥ कीकट
 षू गयापूजाः पूज्यं वा ऊर्ध्वं वनमाविषये श्रद्धा वनः पूज्यं नदीनां पूज्यं पूना॥ मूलं पृथक् पूज्यं मित्रं पश्चिमं दक्षिणं रुद्रं साक्षं कोशद्वयं मानं गयायां पत्रिकीर्तनमाप
 षुको गगयाक्षं कुंकोशमर्कं गयोनिनशातं पिपिलुदानेन नृपि कुरु वनिः श्रद्धा गी॥ नाम कुरु नोर्देनाञ्चैव कूपाञ्चालनमानसात्। पत्रं दया शिवः पार्कं हृत्पुत्रीर्थं नद्वयं॥ ॥ ११॥ ॥
 पिलुपदानेन यत्कृत्वा लंलेहनेन वशातन कृत्वा मया वक्तुं वर्षकोटिगतिरपि॥ ॥ १०॥ **ह्यादिमहापूजा** गयामाहात्म्यं॥ ८२॥ ॥ वृक्षावाचः॥ कीकट
 षू गयापूजाः पूज्यं वा ऊर्ध्वं वनमाविषये श्रद्धा वनः पूज्यं नदीनां पूज्यं पूना॥ मूलं पृथक् पूज्यं मित्रं पश्चिमं दक्षिणं रुद्रं साक्षं कोशद्वयं मानं गयायां पत्रिकीर्तनमाप
 षुको गगयाक्षं कुंकोशमर्कं गयोनिनशातं पिपिलुदानेन नृपि कुरु वनिः श्रद्धा गी॥ नाम कुरु नोर्देनाञ्चैव कूपाञ्चालनमानसात्। पत्रं दया शिवः पार्कं हृत्पुत्रीर्थं नद्वयं॥ ॥ ११॥ ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

दिनिधुनाह विशाधर्मसंनद्धमर्थयः अथमादिविनिश्चयादेत्यत्राकसनामर्थमस्यः पूर्वयथावत्तु कर्माववाहिनरु वि. वामनावामदुर्जिनशायथादागनथानामः
 धावृद्धोथकेल्लपि। नथवर्कः। यकनूपीआसीदादिगदाधनशः। दिनादीपूजिगेदेवैवकादिरियेनशापाद्याधनेधपूषाधे. वनशादिगदाधनशः। गदाधनसूत्रेऽसाध्व
 मर्द्धगत्वाददोनियशाअर्थपाद्यशपाद्यश. गन्धपूषाधेधूपकेसादीपेनैवयमलेह. मात्यानिविविधनिवावका। लिमूकटदोर्ध. वाद्यशपाद्यलीयक. अलकानादिकपि
 मन्त्रदानादिकनथा। गेयांरुवधनधन्या. मायूनावाग्यसमायशयूगादिसनक्तिः। एथा. विद्याथः कामः। यिमतशा। रायोसर्गमदिवसस्य. स्वर्गदागत्यत्राजकमाकूलीनः
 त्वसमन्तात्रणमद्विग. शत्रुवशावधवन्धविनिर्मक. शान्तभाकमवाप्रयाग. श्रद्धापिपु। दिकरुवि. पिह. रिउक्तलाकमशावलहृदयैयनि. सुरेद्रावलहृदकीकान
 पायाप्रथपूगान्. उक्तनिपूत्राहमभा. पूत्राहमनाजस्यसूर्यस्यत्रगलस्यवोपत्राहमपिपु। दि. पिह. लोविक्तलाकद। नत्वाकपदि विद्युर्गसर्वविद्येऽपेयन। कार्ति
 कयपूजयित्वाउक्तलाकमवाप्रयाग. द्वादशमदिवसस्य. सर्वशागेऽपमृचागविश्वनरसमस्य. उरुमपिनिमाप्रयाग. नमनपूजयित्वाथअश्वनाम्नात्यनरुमान्

अथचोदमहेश्वर्यो। लोवीसोराग्रमाप्रयाग. विद्यामनस्वगीत्यर्चो. लक्ष्मीसंपूजयित्वा। गन्तुं समस्य. विषयन्त्यापुमृचाग. कृत्वापार्त्तसमस्य. गुरुदन्धेऽपमृचाग. मूलपु
 षोसमस्य. सर्वकामानवाप्रयाग. नागनेकसमस्य. नागदक्षेविमृचाग. उक्तलाकमवाप्रयाग. वलहृदसमस्य. वलागमवाप्रयाग. मूलपु
 पूजयित्वा। लोवीसोराग्रमाप्रयाग. सर्वकामानवाप्रयाग. सम्यक्संपूत्राहमभा. नागोयल्लेसंपूज. नेवात्ममधियोरुवेन। स्य. द्वातेनत्वातेनसिंह. संपूजमविजयातेव
 ना. वनाहपूजयित्वाथरुमिग्राहमवाप्रयाग. मीनविद्याधरोह्य. द्वा. विद्याधनपदैहव. सर्वकामानवाप्रयाग. संपूज. दिगदोषत्रमा. सामनार्थसमस्य. सामलाकमवाप्र
 याग. नृदेववर्नमस्तुत्य. नृदलाकमहीयन. वामेश्वरवर्नमानत्वा. वामवस्तुपियाहव. उक्त. श्वरवर्ननशस्त्रा. उक्त. लाकायकल्याण. कालेश्वरसमस्य. नेत्रकालश्वरा
 व. कदापूजयित्वा. शिवलाकमहीयन. सिद्धेश्वरवर्नसंपूज. सिद्धिवृक्तपर्ववृज. आद्येनृदादिहिः। द्वा. द्वा. दिगदाधनमा. कूलानांनमस्तुत्य. नथदुक्तपू
 वनवश. धर्माथोमाप्रयाग. धर्ममर्थथार्थमाप्रयाग. कामानवाप्रयाग. लोमीभाकाथोभाकमाप्रयाग. सर्वथोसर्वमाप्रयाग. संपूज. दिगदाधनमा. पूगान् पूजयितीमुच्यते।

सूनाहाथाश्लोखाष्टपृथकारुथाश्रुतकस्यगलषष्टः नथप्राकृदिवोकसामां न्यामनाजवशकुर्महाभलामहासुवशाश्रुवन्नूपलमहमाहृतिमलाकषाविलामनाश्रुवसु
नश्रुतः पूनाविष्णुपनायलभः॥॥ कृत्तनथनोहागमः दृष्टिः॥॥ योनिवचननिष्कनसुथापांशु नैलोनदिष्टुवव॥ कद्रुषथपूषधुः सुश्रुमन्मनाः॥ सुगाश्रुतिर्विनिष्ठाहगवा
नजुमदनिश्चकश्चपः॥ गममश्रुवदजाविश्वमिनाथसफमश्रुतथककोनपञ्चमः नम्रगपविकीर्तिगशाश्रुदियावसवः साध्यागलदादशकास्त्रियश्रुकादशगथावृद्धोवसु
वोक्षीयकीर्तिगशा॥ द्वावश्विनोविनिर्दिष्टो विष्णुदेवास्तथादश॥ दलेनाश्रुवसायुवा नवदवगलनिचागजसुतीनामवेगको हिनथ्याको विपुः॥ सुगशाहगावनाहृन्नूपल हिनथ्याकोथ
विष्णुना॥ वश्रुमनाहृ विष्णुस्यसावर्ण्यवैसुगास्यो विजयाश्रुवैनीयाश्रु निर्देहः॥ सुवराकृतिशावत्रिष्टुगविष्टुश्च वाचः॥ सगतिवचनश्रुवत्कामाठपायाभा गलवादीकिमा
मथा॥ सश्रुष्टकृत्तनामः सषयः॥ सफकीर्तिगशा॥ सुगपाश्रुमनाहाश्रु मर्याश्रुपिगदासुना॥ गशां गलकुदवानां भक्तीकाविश्वकः॥ सुगशाविश्वचनसुगलकावलितिश्रुहृवि
श्रुति॥ दत्तमांयावमानाय विष्णुवैयः॥ पदगुयमासिद्धिमिन्द्रपदहिला गगः॥ सिद्धिमवाप्स्यति॥ वात्रुलदकसावर्ण्य नवमस्यसुगान्श्रुत्वा धनिककुदीयककु वध्रहृलानिना

कृतिः॥ पृथुगंवावहृद्यमजवीकावहृगायुलशमधनिथिदुनिश्रुवमवलावसुवच॥॥ निष्कानहृवकयोचमषयाविश्ववीश्वनाशपनामनीविगर्कः॥ सुधर्मालश्रुगुयः॥
देवाः॥ सुकालकाके सुदनापदनाहृकशधर्मपूगस्यपूना सुदगमस्यमनाः॥ सुकृगः॥ श्रुमोहाश्रुविश्वश्रुवीर्यवानागतानीकानिभमिनी विषमनाजयदथः॥ सु
विश्वमन्ः॥ सुनृश्रुश्रुजानि विन्दुः॥ सगपवोनाश्रुया मूर्तिहृविष्णुः॥ सुकृतिश्रुवयसुथा॥ नाहागमपनिमः॥ श्रुवः॥ श्रुवः॥ सषयसुथापांलखाः॥ गगमरवास्तु देवगानाः॥ सु
सुदो॥ वालिश्रुसुहृविष्णु गदयाद्यागयिष्ठातिविदुः॥ सुगस्यगंयुगा वद्वामकादशस्यगु॥ सुवृगः॥ सुगमाव देवानीकः॥ पूनृगुः॥ सुगवन्धदृष्टीयुः॥ आदकः॥ पूनृकः
सुथा॥ हृविष्णुः॥ हृविष्णुः॥ सुनृलविश्वविष्णुवशविष्णुः॥ श्रुवः॥ श्रुवः॥ सषयः॥ सफकीर्तिगशा॥ विहृमाः॥ कामगमा निमोलनूचयसुथा॥ एककृतिगककृषां ग
लश्रुन्दुश्रुवैरुषा॥ दगपीवासषयस्य सुनृपीद्यागयिष्ठातिमना सुदकपूगस्य दादशस्यामजानः॥ दववानूपदवश्रु दवश्रुश्रुविदुवथः॥ मिगवानमिगुदव
श्रु मिगुविन्दुश्रुवीर्यवान्॥ मिगवाः॥ सुवद्वोश्रु दकपूगमनाः॥ सुगाश्रुतपस्वी सुगपाश्रुवगपा मूर्तिसेपात्रेतिशा गपा धनिकुदीयककु वध्रहृलानिना सुधर्मालः॥

सुखपसा, हविनाप्रहिनासुखा॥ सुखावयागलाष्टेव प्रत्येकं दशकागलः॥ अगधमावर्णन्यु, सावका नाम नदियुशा हविर्नैर्युसको हृत्वा, यागयिष्यति न क्वचः॥ यथा दशस्य
त्रोचस्य मनाः पूर्यनिवाधम॥ त्रिगुमना विविगुश्र, तपोधर्मसु नाधु, निः॥ सुनेत्रः के, रुचि, श्रमनया धर्मपादः ८॥ धु, निमान श्रयः श्रेव, निभनूपा निवृत्तकः॥ निमल
सुखदशीव, सवेयः सफकीर्तिनाः॥ सुनामलः सुकर्माः सुधम्मालि सुधमनाः॥ सुयसि, इति हृदने, दवानाक, गवंगमाः॥ इन्द्रादिव स्य निः॥ क, सिद्धि, इति नामदान
वः॥ राद्यवेलव रूपल, यागयिष्यति मोधवः॥ वरु, दशस्य हो, ह्यस्य, १२ लूयुगानना मम॥ दुर्ग, हीवधु, श्र, तपसी ग्रहनेव वा, अहिमानीयवी नय, जिष्णु, ईक, नदनसुध
॥ गजसी दुर्ल, ह, श्रेव हो, ह्यस्य मनाः॥ सुगाः॥ अग्नीधु, अग्निवा, श्र, मागध, श्र, तपः॥ विशा, अग्निनायक, श्र, की, व, अय्यः सफकीर्तिनाः॥ वा, दूषाः॥ कर्मनिष्ठा, श्र, पविग, श्र, उ
नसुधो॥ वा, दूषा, दव, गेलाः॥ प, श्र, उ, का, सु, सफकाः॥ श्र, वि, श्र, सयु, द, श्र, अयु, ह, सा, सु, य, ह, वि, श्र, प्रकादिव, श्र, उ, द, श्र, श्र, स, नू, प, ल, वि, श्र, न, अ, न, स, न, ४ पू, न, ल, नि, वि, श्र, श्र, अ, ह, अ
दले वरु॥ अ, अ, नि, व, श्र, ना, व, दा, मी, मा, सा, ना, य, वि, स, न, ४ धर्म, अ, ह, पू, न, ल, ४ अ, य, र्वे, द, श्र, म, श्र, व, वि, श्र, श्र, अ, ह, अ, द, श्र, व, नाः॥ ॥ १२० ॥ यादिमहापूना, लग

[illegible]

माहिगशा. आदू. अथधीयीत सर्वे. अस्मिनिवदयत. हिगशा. स्यरुवनिर्त्यमन्तावाकायकर्महिशा. दलु. जिभापवीतानिभषला. आवधायत. दिज. वचवभदे. अमनिन्यवात्मरुथ. आदिमध्यावसानेय. रुवक. न्योपेलकिगशा. वी. दू. क. रियविर्भ. रु. चर्यायथाक्रम. रु. नाग्निकाया. रु. श्री. न. विनी. ना. गुर्व. नू. रू. या. आ. पो. भ. ना. रु. या. पूर्व. स. रु. त्या. न. म. रु. त. य. न. व. रु. च. र्या. लि. ने. ने. क. म. न. म. या. द. ना. प. दि. वा. रु. ल. ४. काम. म. ग्री. या. रु. रु. व. न. म. पी. उ. य. ने. म. धू. मा. म. न. थ. ग्री. न. मि. त्या. दि. वि. न. व. रु. थ. गु. नू. र्य. श्र. वि. र्या. रु. ला. व. द. मे. मे. पु. य. रु. नि. ४. प. नी. य. द. द. द. द. मो. च. र्य. ४. स. पु. की. हि. ग. शा. न. क. द. म. ड. पा. श्र. य. अ. लि. श्र. रु. रु. दू. थ. न. ॥ ५. न. मा. न्या. य. थ. पूर्व. म. र्या. मा. ना. ग. वी. य. सी. पु. नि. व. द. व. रु. च. र्य. दा. द. म. द्या. नि. प. श्र. वो. ॥ ग्र. ह. ल. नि. क. मि. त्य. के. क. म. न. रु. व. धो. उ. ॥ आ. धा. रु. म. दि. वि. म. श्र. व. रु. वि. म. श्र. व. त. स. ना. नू. व. रु. रु. वि. म. क. ल. सो. य. ना. यि. नि. क. ४. प. वे. ४. अ. रु. दु. प. न. रु. न. सर्व. ध. मे. वि. व. रु. नि. ४. सा. वि. नी. य. नि. व. रु. वा. त्या. वा. त्या. म. म. व. रु. कु. ना. श. मा. रु. य. द. ग. रु. या. न. दि. नी. र्य. मो. श्रि. व. ध. न. मा. वा. रु. ल. रु. रिय. वि. र्या. रु. ला. द. न. दि. जा. ग. य. श. य. रु. ना. न. प. सा. श्रि. व. रु. ला. ना. श्रि. व. क. र्म. ली. ॥ व. द. नू. व. दि. जा. नी. ना. नि. ४. य. स. क. व. ४. प. र. मू. म. धू. ना. प. य. स. र्वे. व. व. द. स. रु. र्ये. थ. दि. ज. शा. दि. ह. न. मू. ध. न. र्या. व. म. ल्या. वी. धी. य. थ. न. रु. मा. य. यू. ४. साम. प. १०. रु. रु. द. थ. वी. नि. व. र्म. दि. ज. शा. स. न. र्ये. थ.

नैर्यल्लिमनि॥ अकृद्वपत्रिदुष्ट्यः समस्तस्य वनस्य च॥ ॥०२॥ ॥याद्वल्लुडवा॥ हिंसा र्द्धर्मपवद्यामिनिवाधमरुमाशवनाहृहा
 दाकृत्तुसिः सर्ववदसदक्षिणभा॥ पाजापय नुदकं नु अग्निमानायासनि। सर्वरुगहिगं ॥०३॥ नु दलुीकाकमलुल॥ सर्वार्मपवित्यसः हिंसा र्द्धममाश्रयं नु अपमरुष्ट
 भर्द्धु सायाकृनाहेलक्षिगं॥ वहिगं हिंसा र्द्धममाश्रयं नु अपमरुष्ट ॥०४॥ सिद्धयागस्य उदं हममरुष्टमिहा प्रयागायागमस्यस्यन
 रुकपत्रासिद्धिमवाप्नुयात्॥ दानागिथिपिथो क्लानी गृहीष्टाद्यापिमुद्रात्॥ ॥०५॥ ॥याद्वल्लुडवा॥ नत्रकात्यागकाहृत्वापोपस्य ॥०६॥
 कामेगं द्रयागावुक्तहाश्रयनासुस्याः कृकायूकासुनायपि॥ स्वर्णवात्रीकृमिः खलु कीटहृत्वादिगुत्रगत्यागं द्रयागागीष्टावदुक्तं कृनखीगिविपिस्त्रकं॥ द्रहायाकमा
 स्यस्य उ सुवावालिः ॥०७॥ अन्त्यायदलेमायावीसूकावागयहावकं॥ धान्यहायं निनिका ॥०८॥ पिण्डनं पूनिनागनं गं लहृत्तुलनूयीस्यापूनिवकुष्ठसूत्रकं॥ वक्रसू
 केन्यादलाथः वनेनेकाहृवद्वष्टावत्तद्वीनजातिः स्यात्पुंशकेहृवः ॥०९॥ गिरी॥ गंधकूचं चिह्नं त्वा धान्यद्वन्मूषिकाहृवः ॥१०॥ हृत्कपिपण्डित्वा अजाकाकपयसुथा॥ मांसं

गृध्रः पटं टिगीः वात्रीलवणहानकं॥ यथाकर्मनिष्ठेऽथेकत्वं कालययया॥ जायनेलद्वल्लुडवादिदाः पूरुषाधमाश्रयानिः कलुषीहृत्वा कलं महानियागिनः ॥११॥ जायनेलद्वल्लुडवा
 पनाधनधन्यसमन्विताः॥ ॥०१॥ ॥याद्वल्लुडवा॥ विदितं स्यान्नूखानाः निन्दितं स्यात्सवनं नु अग्निगृहाञ्चन्द्रियाभनत्रं पत्रनमृक्त
 नि॥ गमाः द्रवनेन कर्तुं पायश्चित्तं विगुह्यथं॥ एवमस्याननासाचलाकल्लेवपसीदति॥ लाकश्चसीधदामेवपायश्चित्तं वयद्वयं पायश्चित्तं मकुर्वीत ॥१२॥ पश्चात्तु पविवर्द्धिगाः नत्र
 कान्यानिपापं वेमहागोत्रवगोत्रवानागामिर्मुलाहृगं कृष्टं पूनिगंधं कृष्टं फलं॥ हंसार्हं लाहिनादं कृष्टं मूर्ध्निवननदीपथं॥ महानिलयकाकालः सन्ध्यामिमुवापलमा॥ अवीर्षिकं कृ
 मकं॥ यानिपापाकृष्टं कृष्टं वक्रं हामद्वपस्यी॥ स्यागीगुत्रगत्यागं॥ गुत्रनिन्द्यादिनिन्द्यावक्रं त्यसमस्युहं॥ निषिद्धं हृत्तुलं जिह्वं क्रियावत्रं नमवत्रं॥ नृसेनामूखासादं
 सूनापानसमानि॥ अष्टनत्तादिहृवर्णं सुवर्णं सुयसेसिगं॥ सुखीरुयाकृमावीवस्यानिष्यन्त्यासुवा॥ सगं गं सुगंधं सुगुत्रगत्यागं सुगंधं॥ पिण्डं सुगंधं माहुष्टं माहुलानी
 सुसामपिमाहुष्टं सुपत्नीरुगिनी॥ माचार्यननयान्ता॥ आचार्यपत्नीसुसुतां गच्छन्तु गुत्रगत्यागं॥ किलालिङ्गवधस्य सकामायासि यासुथा॥ गवधवायनस्य मृभलाश्चपि

[illegible][illegible]

लविष्णुविद्यावाजा नदीसाधुश्च पञ्चमशा सर्वशर्वेन जानाति सर्वज्ञानाति कृष्णविद्याने कणपनि निष्ठा सिद्धान्त्या किल मोनका ॥ न सर्वविगकश्चिदिहा मिलि नात्यर्थम्
स्वाकुविद्यासिकश्चिन्ता क्लान्तनीधालुममध्यात्म नथाज विज्ञानाति सगन विद्वान् ॥ १०० ॥ यादिमहायुगलमभूत् नानि साय ॥ १०१ ॥ सुत उवाच ॥ पाथिवस्य तु वञ्च
मिह ह्याना रेव न के लमा सवीलियो महीपाल सम्यक् विरूप वीर्ययुत ॥ वाञ्छयालय गीनि र्ममय धर्मपरायण ॥ निरुत्तमपुत्रमिदानीं द्विजधर्मलयालयतः पूष्यविधि
नयोनम्रमर्क मूलकुन्दनको वयं ॥ मालाकावाञ्छ वाचस्पत्य नयथ भद्रिका वकश दृष्टवान् द्वीवेने रुक्मीन विकी तान्तरु रूक्म ॥ पत्रवाञ्छमहीपाल कोले वाञ्छाञ्छु
वयं गोलाधश्चिन्ता कुलाधश्चिन्ता द्वीवान्तरु पयश ॥ एवं वस्तुमथा एतान् पीडयामास न वदन् ॥ तस्मात्सर्वपुत्र्यत्नेन पृथिवीमनुपालयत ॥ पालकस्य हवदु मिश्रीकिना
युर्यलभवलमाञ्छुश्च विष्णुधर्मोत्सा ॥ मवाञ्छे लहित वरुणा पञ्चापालयिषु रूक्म ॥ पाथिवीयाजिनेन्द्रियशान्तिमधुर्वपाया वाजोधर्ममिच्छन् ॥ क्लान्त विरुवा न
॥ १०२ ॥ नालाय ह धनादिकं सत्यमनोवमा ॥ कामा ॥ सत्यम्या विरु नयशा किं लुप्येवनितापाङ्ग रुक्मिलाल हिजी विगमा वाद्यु विरिष्ठ गिज न अपि न ऊय नो वागम ॥ १०३ ॥ व

१२१

१०० वपुर्वनिगम ॥ आयुश्च पत्रिसुमवतिरि नयटादिवाङ्माला केन वा तस्मिन् मायवती रुक्मिणी ॥ निष्ठाङ्ग किं मनश्चा ॥ कृतपविहिर्न यूकमह हिर्न न नादधुं कामि
नीहिर्मदनविनहितामन्दमन्दानिदृष्टो ॥ मायापसं कृन्ध द्विजहविपत्रमा ॥ सुरुजधर्मसदेव ओयुर्निष्ठा वमन कुलनिलसूटी मत्पुद्गल लन ॥ माह वरुस सुवञ्चिव नि
र्यदुहिरुवद्वय ॥ आत्मवत्सर्वरुग्म यः पश्यति स पश्यति ॥ माह वरु वदार्थं पत्रदुवालि लोखवगा आत्मो वत्सर्वरुगानि यः पश्यति स पश्यति ॥ एतदर्थं हि विष्णु
न्या वाञ्छ मिच्छुनिरु रुग्म यदर्थं सर्वकार्येषु वयानपुनिहन्त ॥ एतदर्थं पुकृषीन् वाजान धने सञ्चर्य ॥ नक्षत्रिवाच योत्मानं यद्वर्तय द्विजान यशा उकात्र गद्या विपा
ला यस्या नालानुपवदन् ॥ स वाजा वदन् यागम द्याधिरिष्ट न वदन् ॥ असमर्थश्च कर्षेन्नि मूनया दुष्टमञ्जय मा किं पुनरु महीपाल ॥ पुत्रवत्पालयत्युजाशा यस्यार्थस्य
मिगालि यस्यार्थस्य वाच्यवा ॥ यस्यार्थस्य ॥ स पूमान् लोकं यस्यार्थस्य ॥ स पालिगशा ॥ यज निमिगालि धने वीहीनं पूगश्च दानाश्च सुदुर्ज्ञाना ॥ नार्थवर्क पुनराश्रय नि ॥ अ
॥ १०४ ॥ लोकं पुनरुषस्य वधूशा ॥ अर्थहि वाजा रुवति यमुष्म सुविवर्जि नशा ॥ अर्थः पश्यति वाचल ॥ अमुहीनान पश्यति ॥ यस्यापुगश्च रुत्याश्च मन्त्रिणश्च पुत्रागमा ॥ १०५ ॥ दिना

[illegible]

षोडशतमः ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूजा लीला नृत्तं तीर्त्ति सा ॥ ११ ॥ ॥ सुन्दरा ॥ ॥ ह्यावद्विभक्त्या उरुमाधममध्यामाशानिथा कथायथार्थयुक्तिविधिवत्कर्मसु ॥ ॥ ह्या
 स्यापनीके लविके यस्यायस्याहिया गुलभगदहसंपुवद्वा मि यद्या कथितानिवा ॥ यथायुक्तिं कनकं पवीश्रुतं गुलायुषलङ्कनपागनन ॥ यथायुक्तिं कनकं पवित्रयुक्तं
 नेशालेन कुलेन कर्मलम ॥ कलशालगुलपेन ॥ सत्यधर्मपरायणशत्रुपेन सुपुसनेन ॥ राजाश्रितेन ॥ विधीयते ॥ मूल्यनूपपरीक्षा रुद्रवदन्तपरीक्षकशिवलावलपत्रिज्ञानमना
 श्रद्धा विधीयते ॥ ॐ ह्निनाकोनगत्वा वलवान्मि यदर्शनशायु ॥ १ ॥ गुलपेन ॥ धर्माश्रितेन ॥ अप्रमादीपमादीवपुगीहाय ॥ सडयने ॥ भिक्षावीवाकदूपा ॥ सत्यवादी
 जिनेन्द्रिय ॥ सुर्वभक्तु समालोकी ॥ श्रवसाध ॥ सलेखकशवृद्धिमाननिर्माश्रितेन ॥ पत्रविष्णुपलङ्कक ॥ शूराय ॥ अक्रवादीव ॥ नृषदूत ॥ विधीयते ॥ समस्तकर्मभक्तु ॥ पल्लिगोथ
 जिनेन्द्रिय ॥ शौर्यवीर्यगुलपेन ॥ धर्माश्रितेन ॥ विधीयते ॥ पितृपेतामहादक ॥ भक्तु ॥ भक्तु वाचक ॥ शोचयुक्त ॥ सदाज्ञात ॥ सुपकान ॥ सडयने ॥ आयुर्वेदकृत् ॥ गत्यास ॥ स
 वे ॥ १ ॥ पियदर्शन ॥ आयु ॥ १ ॥ गुलपेन ॥ वेद्य ॥ नृषविधीयते ॥ विदवेदाङ्गनत्वज्ञा ॥ उपहामपरायण ॥ आशीर्वादपरा नित्य ॥ नृषना ॥ १ ॥ पूजादिन ॥ लेखक ॥ पा० क ॥ लेख ॥ गलक ॥

पुनितोधकशाग्रहग्रामपयवाः ४८ कर्मोर्लवर्ज्यत्तदा॥ दिडिद्वमृद्वेगकर्तुं नृमकान्कदात्रिणमा॥ खलस्याहं श्ववदनमपकावायकवलमा॥ दूर्जनपविहर्तुं विद्यायालक्ष्मी
यदिमलिनाहृषितसर्पः ४८ किममोनहृषकः ४८ अकानमविष्टगमापधात्रिणमा॥ खलारायकस्येननामजायगे॥ विषमहाहं निवयस्यदूर्ववः ४८ सूर्यसहस्रनिपतेतदामरवो॥ पुत्र्या
र्थहृत्यसामर्थ्यधर्मः ४८ यवसायिनमाश्रहर्षनाश्रहर्षरु॥ यानहृत्तयासहृत्तये॥ सोटीर्थमृकासुदमन्दवाक्का॥ डिर्नद्विवाः ४८ सत्यपनाश्रमृगप्रीत्यवपश्रमद्विपरीतद्रुपा॥ यगे
तुल्यरे॥ यानहृत्तये॥ निनालेस्याः ४८ सुसन्तुष्टाः ४८ मृगप्राः ४८ पुनितोधकाः ४८ सुखदूषवसमाधीनारुत्यालोकसुदूर्जेराः ४८ दानिसुयेनिधयानि॥ मजियाकृत्रवर्कः ४८ ॥ १२८
०० निश्चयगथाभिर्नपूजयेदलनिन्देकी॥ दामृकपनिकैलिवः ०० अश्वपवर्हिगः ४८ मृगकीरुयही॥ गन्धः ४८ वाक्का॥ यके॥ शेषवसः ४८ सायश्चनादिवा॥ न्यानि॥ अस्त्रालिविविध
निवा॥ दूर्जेपर्वणिगोनि॥ निर्वैगन्धनिपाये॥ मृगमथवर्षमा॥ सुमिक्कयोन्नाधिषः ४८ पश्वन्सुश्रिगमात्मान॥ पुनः ४८ निपायग॥ मूर्खान्निपाजयद्रु॥ यथा
येनमहीपनिः ४८ अयः ४८ अर्थनो॥ अन्ननकयेवपातनमायगुकिश्चिन्कृन्कर्म॥ गुरुमायदिवा॥ गुरुमा॥ गिनसावर्द्धनराजा॥ सुदूर्जेवदूरः ४८ अर्गमा॥ सुमो॥ श्वनः ४८

पार्ककर्मकामार्थसाधन॥ निपाजयनिसर्गं॥ गमवाक्कलहिगायवे॥ ॥ ०० ह्यादिमहापूना॥ गमवर्द्धनीतिसात्र॥ ॥ १२९ ॥ ॥ सुगडवाया॥ गुणवर्द्धनियुक्ती॥ गुलहीर्ननवर्द्धय
०० यलितुगस्यगुल॥ सूर्यसूर्योदायाश्चकेवलमा॥ सूरिवासीगसर्गं॥ सूरिः ४८ कूर्वीगसर्गं॥ सूरिः ४८ विधानं॥ मेही॥ नसूरिः ४८ किश्चिदोयवगा॥ यलितुगस्यविहीने॥ धर्मः ४८ सूर्यवादिहि
४८ वन्धनः ४८ पिनिष्टे॥ नेनुवाः ४८ खलेः ४८ सहो॥ सावे॥ अलो॥ कर्मोर्लवर्ज्यत्तदा॥ दिडिद्वमृद्वेगकर्तुं नृमकान्कदात्रिणमा॥ खलारायकस्येननामजायगे॥ विषमहाहं निवयस्यदूर्ववः ४८ सूर्यसहस्रनिपतेतदामरवो॥ पुत्र्या
र्थहृत्यसामर्थ्यधर्मः ४८ यवसायिनमाश्रहर्षनाश्रहर्षरु॥ यानहृत्तयासहृत्तये॥ सोटीर्थमृकासुदमन्दवाक्का॥ डिर्नद्विवाः ४८ सत्यपनाश्रमृगप्रीत्यवपश्रमद्विपरीतद्रुपा॥ यगे
तुल्यरे॥ यानहृत्तये॥ निनालेस्याः ४८ सुसन्तुष्टाः ४८ मृगप्राः ४८ पुनितोधकाः ४८ सुखदूषवसमाधीनारुत्यालोकसुदूर्जेराः ४८ दानिसुयेनिधयानि॥ मजियाकृत्रवर्कः ४८ ॥ १२८
०० निश्चयगथाभिर्नपूजयेदलनिन्देकी॥ दामृकपनिकैलिवः ०० अश्वपवर्हिगः ४८ मृगकीरुयही॥ गन्धः ४८ वाक्का॥ यके॥ शेषवसः ४८ सायश्चनादिवा॥ न्यानि॥ अस्त्रालिविविध
निवा॥ दूर्जेपर्वणिगोनि॥ निर्वैगन्धनिपाये॥ मृगमथवर्षमा॥ सुमिक्कयोन्नाधिषः ४८ पश्वन्सुश्रिगमात्मान॥ पुनः ४८ निपायग॥ मूर्खान्निपाजयद्रु॥ यथा
येनमहीपनिः ४८ अयः ४८ अर्थनो॥ अन्ननकयेवपातनमायगुकिश्चिन्कृन्कर्म॥ गुरुमायदिवा॥ गुरुमा॥ गिनसावर्द्धनराजा॥ सुदूर्जेवदूरः ४८ अर्गमा॥ सुमो॥ श्वनः ४८

ननु कश्चित्कृतं कार्यं कर्तुमनवर्तते ॥ सर्वथा वर्तमाना पितृभ्यो वृद्धिर्न कृतवर्तना ॥ इति या नवमर्त्यं ॥ शुक्लमांसांश्च मूलकं ॥ त्रयोदशदिवा स्वर्गं विद्वान्पुत्रं पुत्रं विवर्ज्य
 त्रिपुण्ड्रं गच्छेदपि दुष्टं ॥ वृद्धस्य नृणां विषमा विषं कृतिं किं विद्या ॥ अजिह्वं हज्जने विषं ॥ पियन्दा नमस्कृत्य नीचस्यो वत्सासनं पियं ॥ पियन्दा नमस्कृत्य विदुष्यं वृद्धं स्यात् ॥ नृणां पियं
 या ॥ अथ मृगपानं कर्तुं नाशनं ॥ धातुद्वयं वै गतिं धातुं ॥ दिवा जयाजं गन्तव्यं रात्रौ चरितुं नृणां पुत्रं वनिनाम ॥ वालागपथा यमिमेधूनं ॥ समभनधूमं ॥ कलगा
 पनं ॥ अजस्रलाचकं निरीकलं ॥ सुदीर्घमायुस्त्वमपि स्मर्त्तव्यं ॥ शुक्लमांसं मिथ्या वृद्धा ॥ वालाकं सुतुल्यं दधि ॥ पुत्रा नमो धूमं निद्रां सद्यः ॥ पालं हवा लिखं ॥ सद्यः पक्कं
 घृतं दोक्षा ॥ वालां सुदीर्घा जनमा ॥ दुष्पदकं नृणां ॥ सुद्यः पालं हवा लिखं ॥ कृपादकं नृणां ॥ नारीभ्यः पयोधरं ॥ शोककालं हवदुष्पदं ॥ दुष्पदं कालं वशीलमा ॥
 सद्यः वनकं नारीलि ॥ नारीकं नमो पयः ॥ सद्यः वलं हवा सुलि ॥ अर्धमं धूमं धूमं ॥ शुक्लमांसं पयानं ॥ धार्या विरुक्तं ॥ नृणां नृणां कर्तुं नृणां साधं ॥ विद्यां गच्छं नृणां
 लोकां ॥ कृत्वा लिखं दनमलापं धातुं ॥ वृद्धा जितं निद्रं वाक् ॥ रात्रिं लोमा ॥ सूर्यो दयं यस्मै पितृभ्यः ॥ विमृशं निद्रां पियं वक्तुं पालिनी ॥ निहं कृदं सुभनां रुविनखलि

122

खनं पादथा वल्गुयुजा ॥ दन्तानां मूल्यं ॥ भोज्यं वसनं मूलितं ॥ नो कृता मूर्द्धनानां मादं ॥ सन्ध्यां वापि निद्रां निवसन् ॥ शयनं गुह्यं सहासातिवक्तं ॥ स्वा ॥ इपी ॥ ० च वा द्यं हनति धनपणं
 ॥ कंठवस्यापिलक्ष्मी ॥ शिवं सुखं वरं लोभं मा ॥ इति वनां नमो वने मलयजिनं ॥ अन्नं नमो यितुमपवर्धनी ॥ विप्रं नमो ॥ श्रियमानं यति ॥ यस्यानस्यं पुण्या ॥ पालं
 बस्यं वि ॥ लोषकं शालिनं साधयं मा ॥ लस्यं ॥ अलक्ष्मीं पतिहन्त्रं ॥ दीपस्य पश्चिमोक्तं ॥ श्रिया या अन्नस्य वा ॥ वज्रं कस्य ॥ रुयहीधं मलक्ष्मीं सुरुनिष्ठं ॥ वालागपथा यमिमेधूनं ॥ समभनधूमं ॥ कलगा
 पनं ॥ अजस्रलाचकं निरीकलं ॥ सुदीर्घमायुस्त्वमपि स्मर्त्तव्यं ॥ शुक्लमांसं मिथ्या वृद्धा ॥ वालाकं सुतुल्यं दधि ॥ पुत्रा नमो धूमं निद्रां सद्यः ॥ पालं हवा लिखं ॥ सद्यः पक्कं
 घृतं दोक्षा ॥ वालां सुदीर्घा जनमा ॥ दुष्पदकं नृणां ॥ सुद्यः पालं हवा लिखं ॥ कृपादकं नृणां ॥ नारीभ्यः पयोधरं ॥ शोककालं हवदुष्पदं ॥ दुष्पदं कालं वशीलमा ॥
 सद्यः वनकं नारीलि ॥ नारीकं नमो पयः ॥ सद्यः वलं हवा सुलि ॥ अर्धमं धूमं धूमं ॥ शुक्लमांसं पयानं ॥ धार्या विरुक्तं ॥ नृणां नृणां कर्तुं नृणां साधं ॥ विद्यां गच्छं नृणां
 लोकां ॥ कृत्वा लिखं दनमलापं धातुं ॥ वृद्धा जितं निद्रं वाक् ॥ रात्रिं लोमा ॥ सूर्यो दयं यस्मै पितृभ्यः ॥ विमृशं निद्रां पियं वक्तुं पालिनी ॥ निहं कृदं सुभनां रुविनखलि

नीचस्य सुकर्म यथा॥ द्रवस्त्वपि समीपस्त्वपि॥ यायस्य द्रवस्य स्विग्नशब्दयादपि निःकान् ४ समीपस्त्वपि द्रवः ॥ मूखरुद्धः स्वभादीनां गणकृत्यामहर्कृत्यामत्रलयदि विज्ञानि
तानि विज्ञानिन्या विज्ञानि॥ कुरु स्य कीटव्यागस्य यातानि स्काग्निस्य च॥ निखनं लसकस्य वेनजं मनया विनमा॥ जगत् ४ पुनित्यागित्वा विष्णुर्वीमनगा रुद्रशक्त्या धिकान्वक्तुमया
थो यागिन द्यात्रमा॥ मानवे नीपिना ४ कुरु वीलोपिननपा ४ ग्नान ४ भरणं सहाम ४ धर्मसम ४ धवकायथा॥ विद्यानाम कुरुष्वमधिकं पुनरुपयधनं विद्यासाधजनपियके नीवि
द्यागुरुत्वा ४ गुरुत्वा विद्यावन्धुना कुरुना न कनी विद्यापर्वदेवर्ग विद्यावजसु पूडिगावधनिनी विद्याविहीन ४ पण्डित ४ गृहवात्यनत्रयव नर्तयेव रुद्रेश्वर ॥ अष्टाध्याय १३१
लाय ४ विद्यानादि यर्ग पत्र ४ लोभनकार्य नीति सात्र विष्णु ४ सर्ववृत्तानि च विधिगृहवा दशहवाद्या सा कुरु ४ स्मृ ४ ॥ १००॥ द्योदिमहापूना लग्नमत्रु नीति सात्र ४
माफ ४ १२५॥ ॥ उक्ता वाच॥ उक्तानि शास्त्राणि दुविथ ४ सर्वता र्वता सर्वमासुर्क निथिषू वाचवृह विन विन ४ प्रकरक नन कुरु न उपवास रु लादिना ददा निध
न धन्यादिपूना दयादिकमा वेधनत्र ४ पुनियदि कुरु व ४ पूडिगा र्वद ४ उपायवक्ता पुनिय द्यविन ४ श्रीन था विनी॥ द्वितीयायायि मालक्षी नोनायल हिगार्थद ४ दगम्या

प्रयम ॥ अत्र न काद ॥ अमृषी नृज ॥ हनीयायां हि दवा ॥ अनेनी विष्णु ॥ १००॥ द्योदिमहापूना लग्नमत्रु नीति सात्र ४
विन ४ द्रवस्त्वपि समीपस्त्वपि॥ यायस्य द्रवस्य स्विग्नशब्दयादपि निःकान् ४ समीपस्त्वपि द्रवः ॥ मूखरुद्धः स्वभादीनां गणकृत्यामहर्कृत्यामत्रलयदि विज्ञानि
तानि विज्ञानिन्या विज्ञानि॥ कुरु स्य कीटव्यागस्य यातानि स्काग्निस्य च॥ निखनं लसकस्य वेनजं मनया विनमा॥ जगत् ४ पुनित्यागित्वा विष्णुर्वीमनगा रुद्रशक्त्या धिकान्वक्तुमया
थो यागिन द्यात्रमा॥ मानवे नीपिना ४ कुरु वीलोपिननपा ४ ग्नान ४ भरणं सहाम ४ धर्मसम ४ धवकायथा॥ विद्यानाम कुरुष्वमधिकं पुनरुपयधनं विद्यासाधजनपियके नीवि
द्यागुरुत्वा ४ गुरुत्वा विद्यावन्धुना कुरुना न कनी विद्यापर्वदेवर्ग विद्यावजसु पूडिगावधनिनी विद्याविहीन ४ पण्डित ४ गृहवात्यनत्रयव नर्तयेव रुद्रेश्वर ॥ अष्टाध्याय १३१
लाय ४ विद्यानादि यर्ग पत्र ४ लोभनकार्य नीति सात्र विष्णु ४ सर्ववृत्तानि च विधिगृहवा दशहवाद्या सा कुरु ४ स्मृ ४ ॥ १००॥ द्योदिमहापूना लग्नमत्रु नीति सात्र ४
माफ ४ १२५॥ ॥ उक्ता वाच॥ उक्तानि शास्त्राणि दुविथ ४ सर्वता र्वता सर्वमासुर्क निथिषू वाचवृह विन विन ४ प्रकरक नन कुरु न उपवास रु लादिना ददा निध
न धन्यादिपूना दयादिकमा वेधनत्र ४ पुनियदि कुरु व ४ पूडिगा र्वद ४ उपायवक्ता पुनिय द्यविन ४ श्रीन था विनी॥ द्वितीयायायि मालक्षी नोनायल हिगार्थद ४ दगम्या

[illegible][illegible]

मामहं धनं सर्वं लवणं गुणं क्लृप्तं वस्तु कुरु सुवर्णं नो वरुह जागव मा गीत वाद्ये ददत पात गर्ज वाद्यं सर्व मा प्रया ॥ ॥ ॐ ह्यादि महा पूना लंगम नूठ न का रणी या वन मा ॥ १२० ॥
 ॥ ॥ वृक्षा वाचा ॥ वातु मा स्य वग नो न का द श्म समा च न ॥ आषा द्या यो र्मा स्या मा स वो लिह विम द्य वि ॥ ॐ देव र्ग मया द व र्ग र्ही र्ग पुन र्ग रु व ॥ निर्वि द्य सिद्धि मा या रु से मुने
 त्रयिक सुवशा गृहीत सिन वुगे द व य द्य पास्तु मिया मे ह ॥ न भ र व रु स पू र्ण ॥ त्व ग्प सा द रू ना द न ॥ ए व म र्थ गृही या ॥ नृ ना च न ऊ पा दि क ॥ सर्वो यो र्ग र्ग य या नि वि की र्ष
 या ह न व न ॥ रु ला य श्च नृ ना मा सा ने क रु के न पू ज य न ॥ विष्णु स या नि विष्णु र्लो के म ल वि व र्जु न ॥ म त्स्या मा स न र्म त्स्या गी व द वि द्ध नि पू ज ना ॥ गे ल व र्जु विष्णु लो क ॥ विष्णु रा ॥ ३९
 कुरु कु पा द रु ग ॥ ए क ना रा य वा स ध्या य वा र्मा नि का रु वे न ॥ श्व न दी पं ति ना ग रु व र्ज र्खे स्था न रु न न श ॥ वा न्द्रा य ल द्ध र्द्री म न र्ग म कि म या वि न मा पा जा प त्या दिष्णु लो क म ना
 क व न रु द्ध निष्ठा सु कृ या व क रि द्वा णी प था द धि रु ना ने न श ॥ न क मूल रु ला द्या णी प था द धि रु ना ने न श ॥ य ॥ ग म धू म या व का हा न ॥ प ष्ठ ग व रु ना ने न श ॥ न क मूल रु ला द्या
 णी ॥ स व र्जु विष्णु रा क ॥ ॥ ॐ ह्यादि महा पूना लंगम नूठ न रु मा स्य वग नि ॥ १२१ ॥ ॥ वृक्षा वाचा ॥ ए व मा सा पे वा सा र्था सर्वो र्खे र्खे व द मि न ॥ वा ण प रु णा य नि नो री क

यो मा सा पे वा स क मा ॥ श्व न स्य मि न प रु न का द श्म म्पा वि न श व न म न रु गृही या द्या व रि णा दि ना नि रु ॥ अ द्य प रु था रु नि वि द्धा या व द रु त्प न क न व ॥ अ र्च य त्वा म न श्र न हि या व
 रि णा दि ना नि रु ॥ को र्ति का श्व न यो वि द्धा द्वा दि ॥ १२२ ॥ कृ या न र्द ॥ अ र्थ यो न व न रु व न रु द्वा न म र्ख ॥ रु नि य य वि ष व ल स्ता यी ग न्धा दि रि व र्गी ॥ ग म रा य श्र ग न्ध ले र्प द व ना य
 न न रु ज ॥ दू श्म दि पा न र्क र्ग यो दु न रु प रु ति ना न न श दू श्म अ ने व न रु न्ध रु कि म कि म वा प्र या ना ॥ ॥ ॐ ह्यादि महा पूना लंगम नूठ न मा सा पे वा स व न मा ॥ १२३ ॥ ॥ वृक्षा वाचा ॥
 वृ ना नि का रि क व रु स्ता वा विष्णु प पू ज य न ॥ ए क रु के न रु के न मा र्म र्थ द्या वि न न व ॥ दू श्म न क रु ला द्या उ प वा स न वा ज न श ॥ स र्व पा पे वि नि र्म क ॥ पा पे का ला रु वि व र्जु ना स दा
 रु न र्खे र्गी ॥ न रु न श द्वा द क्रि षा य न ॥ व रु मा स न रु रु मा के ॥ रु क र्ही म प ष्ठ क मा ॥ न रु न श द्वा व र्ग रु कृ न का द श्म समा च न ॥ स्ता या रि का र्त्त पि रु दी न्य व द्य न द्य र्थ द्वा वि मा य र्ज
 लो नी य ना द्य श्व प ष्ठ ग व न वा नि रि श स्ता प यि ता थ क र्पू न मू र्खे र्खे वा नू ल प र्थ न ॥ दू ना क रु नू ल धू र्प दि रु ॥ प ष्ठ दि नू द ह ग नि व र्ग प न मा र्थ नू उ प द र्श रु र्ग न मा ॥ रु न
 मा वा स द वा य दू न वू हि नि ला द क ॥ य रु क र्प ल स्ता हा न न रु रु मा हा ॥ प थ म दि रु र्ग पा दो व र्जु रु द्वा दि नी य क ॥ वि ल्व प र्ग रु नू द र्श ना र्ही रु रु ल वा प न ॥ क र्खे वि र्खे र्जु ना

[illegible][illegible]

गुह्यादहं पीयकान्कनयिपुरुषा इति क्रमाद्य वायनीन कुर्याद्वाद्यं वर्षकम् ॥ कीर्तिं श्रीपूजनाद्यादि प्राप्य जेवंपूर्ववत् ॥ द्वादशीस्वपिमासं षष्ठ्यकुर्यदिह जागर्तांशुव
नीनद्वादशीहोत्रदीपदशस्वर्तमायुयोग ॥ ॥ ॐ ह्यदिमहापूजां लीतिवनाधिकथे समाधा ॥ १२४ ॥ ॥ पिनामहउवाच ॥ सन्ध्यावाचकपद्यासी मूपाथीकादशीनृपा नका
दशैतन्नरुद्धैतमक्षयानूत्यावपि ॥ दशैमकादशीमिश्रा मन्ध्यासमूपाथिना गत्या ४ पूजना नैव न नगाम्य निवर्तयतां ॥ द्वादशैकादशीयशे नृमन्ति हिनाहविश
दशैमकादशीयशे नृमन्ति हिना सुनशा वद्वोक्क विनाधन सन्ध्यायशे नृजायशे ॥ द्वादशीहिनदा गमका जयादशैमिपात्रे लमा ॥ नकादशीकलानस्या द्वापाथीद्वादशी २४१
नदा ॥ नकादशीद्वादशीच विनाधनयादशी ॥ मिमिश्रासागिथि ४ पाका ४ सर्वपापहना ४ शुभा ४ नकादशीमूपाथीव द्वादशीमथेवादिजा ॥ मिमिश्रा ४ चिकुर्वीत नादशी
म्याकदावन ॥ नलीजागर्तकूटनृव लानृयगीतयो ॥ गदाधनं पूजयिष्ये उपाथीकादशीमयं नृकागदायथोमाद्रु मन्ध्याकादशीनृपा ॥ ॥ ॐ ह्यदिमहापूजां लीति
नृउ नकादशीमाहात्म्या ॥ १२५ ॥ ॥ वक्रावाच ॥ यथा ज्वेननवैर्यशो जगमयनमाद्रु निम्नमन्ध्यापवद्वामि रुकिमूकि कर्तव्यम् ॥ सामान्यमल्लेन्यासां ॥ अगर्वदाव

[illegible]

पान्द्रुभक्तं जयदीर्घवतीनवश ॥ १०० ॥ यादिमहापूनालमनूठवीननवमी ॥ १४१ ॥ ॥ वक्रवाच ॥ ॥ वल्लभाद्यादशीवक्रुकिमुकिसदायिनी ॥ नकादशीद्यादशीवक्रुवाण
नवसंयुगा ॥ विजयासागिथिषुका ॥ हविपूजादिवाक्यमासंश्रवना ॥ एकहकननकन ॥ गयेवायाविननवा ॥ उपवासनहाअननेवाद्यादशिकाहवगाकास्यमास्यगथक्रोदलो
हविगथरुषली ॥ ग्रायामश्रुवायश्रु ॥ दिवोसुप्रमथश्रुनमोलिलापदमसूत्रश्रु ॥ द्यादश्यावक्रुयन्नवश ॥ मासिरादयदशुक्रा ॥ द्यादशीवक्रुवाणचिनामहरीद्यादशीक्रुया ॥ उये
वासमहोरुला ॥ कुरुसत्रयेसजल ॥ यजगुसल्लवामनमासिगवसुयुगकन ॥ कुरुपापानयुगानिगश ॥ उनुमावासुदवाय ॥ गिवशसंपूजयगुगश ॥ धीधनोयमुखकुरुक ॥ कर्षी ॥ १४८
रुषु ॥ यवेनमश ॥ नमश्रीपगथवक्रु ॥ रुजीसुवोसुधवि ॥ लो ॥ ग्रायकायनमशकक्रु ॥ केशव ॥ अदर्ववधश ॥ उला ॥ अयगथन ॥ उं ॥ यंसर्वपगनधश ॥ सर्वोत्तननमश ॥ पोदी ॥ नेवडीछ
गपायसमा ॥ कुरुधमादनन्यडा ॥ गनक्रुवयनिनि ॥ म्हालापी ॥ लाड्विपि ॥ ला ॥ रुगपूष्या ॥ लि ॥ विदग ॥ न ॥ द्या ॥ रु ॥ यथवाक्य ॥ १ ॥ सर्वकामानवाप्नुया ॥ ॥ १०० ॥ यादिमहा
पूनालमनूठवीननवमी ॥ १४२ ॥ ॥ वक्रवाच ॥ ॥ कोमदवसुयादश्या ॥ पूष्यादमनकादिहिश ॥ ननिषी ॥ नि ॥ समायुक्ता ॥ अ ॥ भ ॥ कमलि ॥ रुषिग ॥ ॥ १०० ॥ यादिमहापूनाल

[illegible]

अथ यदसुदृशं यदाहं रूपास्तदावर्तुगगनपुत्रसंज्ञा निरुस्य वात्मजशवद्वजा निश्चसंज्ञा नोदाय्य श्रवदात्मजशामनयुक्त लि लेयुश्च कक्षयुश्च दनयुगशजलयुसंरुय
युश्च नोदाय्यसुगवनाशावेतिनावासां यश्च गुस्यपनिवथसुगशानस्यमिधनिधिपुत्रसु मयुविलिननसुगशा निलिनस्यतुदुष्मना रवगसुस्यवात्मजशानकनलायसिंजुं वि
नथाहं नगादहं विनथस्यमन्युपुशा मन्थाश्चिवनवसुगशानवस्यसंज्ञा निपुशा गुत्रुमिष्टसंज्ञां सुगशागन्तोदमेन्युपुशादि शिनिपुशा दजायगा ननपुशानाहावीयो दूत्रु
यसुगशानवगा उत्रेकगस्यपुत्रलि वृहदगत्रमन्यजाशसुहायसुस्यहाणी वज्जमीटदिमीधको हस्तिनपुत्रमीटश्च कलाहदजमीटगशकला मधनिधिपुशा यनका 108
अथ नादिजाशा अजीमीटाद्वहदिय सुस्युश्चवहद्वनशवहलकमोनस्यपुत्रगस्यपुशा जयदथशा जयदथादि श्रुतिगमन जिज्ञादात्मजशानविनाश्वसंज्ञां एथमनसु
दात्मजशा पात्रसु एथमनसु पात्राक्षीपात्रवन्तपशानीपस्यसयवपुशा सुक निरुपथासुगशा विनाजसुसुगशपुशा विनाजादनुहाहवगाद्वगगसमादुसुदहा विषय
नसुदात्मजशा यवीनवदिमीटस्य धनिमाश्चयवीनगा धनिमगसस्य धनिद्वेनमिसुदात्मजशा दृढनमसुपाश्चहं सुपाश्चसन्निगिरुथा कनसु सन्नगपुत्र

कृत्वा दग्धयुष्मद्वेगा उग्रयुष्मद्वेगा माहं सुवीनश्चदात्मजशानसंज्ञा पुत्रजाज्ञागा चर्कसुस्यसुहाहवगा अर्कस्यिवहयश्च हयश्चामकनारवगायवीनगावहदियु
कमिल्लसुसुयसुथा पाशालान्मकलाज्ञां शनदा नवेयुवा मिहाना दिवादासादिनीयस्य अहल्या कुलीनलेगशागानन्याहवसुगशानस्यसुस्य निष्टसुगशकयश कपीसुस्य
धनं उर्वश्चविर्वाहलिगशा जालपत्नीरुपीजुं अश्वेकमानमरुमं दिवादासानिग्रयुश्च मिथ्याश्चवनाहवगा सुदासश्चवनाज्ञां सोदाससुस्यवात्मजशानसुदव
सुस्यपुत्रसुसुदवाकुसामकशाजनुसुसामकाज्ञां एषगश्चपुत्रोमहाना एषगाद्वपदाज्ञां धृष्टद्युम्नसुगशानवगा धृष्टद्युम्नाद्वसुसुगशानमकोहदजमीटगशमकोह
मन्त्रालाज्ञां कनूसमन्त्रालादहं सुधनश्चपत्रीक्षि जज्ञाश्चवकुना सुगशा सुधनषसुहागा हं श्रवनाहं सुहायगशा जवनाहं कनकाज्ञां दूतापनिवनासुगश
वृहदथश्चपुत्रगश कन्याद्याश्चवसो सुगशा वृहदथावकुसामगश कन्याग्रद्वेषहाहवगा मयहात्युष्यार्वाकस्यज्ञां सुस्यदिगानं पशामस्यदिगा सुधयोहं सुदु
श्चवसुधनगश वृहदथाज्ञां नासन्धसुदवसुदात्मजशा सुदववात्रसामापि सामापि सुगवा सुगशा हीमसेनाग्रसेनोव श्रुतसेनापना जिगशा जनेमजयश्चान्याह

वसु॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अविनीर्णह विष्णुशुभादेत्याधर्मस्य नाशार्थं देवाधर्मोर्दिगु फथ॥ मत्स्यादिकस्वतृपल अवनान्कनायजशमत्स्याहृत्वाहृयग्रीर्वदेत्यहृत्वाडि
कलक॥ वेदानां नीयमत्वादीन् पालयामासुर्केन वशमन्दर्धनयामासुः कुर्माहृत्वाहिनायच॥ क्षीमायमथनादेवोवेद्याधनं नितिलेख॥ विष्णुके मल्लं पूर्णं ममनेन समु
ह्निगशा अयुर्वेदमथ साङ्ग सुगुणाय नडकू वाना अमर्ण पाययामासुः क्षीनू पानसूत्रो हे विष्णु अरुणीर्णवनाहाथ हि न आखाजयानेहाय धिवी आनयामासुः पालयामासुद
वनाशा ननसिहावनीर्णथ हि न अकणियु प्रियुर्दिद्यादीन् हनवान् वेदधर्मादीनेत्य पालय॥ गन॥ गन॥ यत्रेणुनामाहृत्तुमदयनृङ्गगपुरुषाणि सफरुत्तुष्टुधिवीव ॥ ६
ऊं निःश्रुतिर्याह विष्णुः कारु वीर्येजयानो जीः कथ्य पायमह न्यदो॥ यागरुत्तामहावाद्रुः मर्ह न्ये पर्वने ह्निगशा गनामाहृवदिष्टुः श्वरुवोदु सुमर्दनश पृथोदगत्रथाऊ
ऊं नामश्चरुगानूज॥ लक्ष्मि अथ सर्वज्ञा नामहाया वज्रानकी॥ नामश्चपिह सत्यार्थं माहृत्यो हि न मोचनना॥ १८ ऊं वरं विष्णुकुटं दण्डकात्रयमागनशानासां सूर्यनखाया
यः क्लिप्ताथ खनदूषलान्॥ हृत्वा सनाके ससीता पहानिजनीचनम्॥ गवर्णवानूजकस्या नको पूर्या विहीषले॥ वक्षानार्थं नृसंकायाः सुग्रीवहनूमान् मूर्खेऽशानूक्य

[illegible]

कामदेवि विभक्तं सत्तल स्वमभोजनं ॥ हृदये वेदना वास्यमा ॥ अथ परिश्रुयति ॥ भयं तात्पर्यः ॥ शोकाद्विभक्तो जातु वेपथुः ॥ अभिवासाभिषापा मोहं तस्मावजायते ॥ भूलाख्यं ॥ ५६ ॥ गोहृदये रोदनं कथयन् ॥ कामशोकमया हृदयः को धातुः ॥

प्रलयेष विविष कोधही भकामरुश ॥ अहिसृज्जहं भस्मिन्नकस्मादासनादन ॥ डीमधीगन्धमूर्त्ता ॥ जिनात्रुवमथ ॥ नृश ॥ विषान्मूर्त्ता निसानाया ॥ स्थवगादाहृदुमशको
धाकल्य ॥ जिनात्रु कपलापाहृय ॥ भकज ॥ कामानापात्रे विद्वहि ॥ कीनिदाविध ॥ निद्रय ॥ गृहादिसन्निपाग ॥ नृपादोमनृगसुया ॥ कापा ॥ कापिपिरुस्य ॥ योरुभापाहिवात्र
जोसन्निपागहृयोधानो ॥ गाव ॥ सद्य ॥ गमोमनी ॥ गगहिवात्रकेमोले ॥ द्यमानस्यगपार्गे ॥ पूर्व ॥ जेगसुगोदह ॥ रुगाविहृ ॥ टिदिगुमेश ॥ सदाहमूर्त्ते ॥ गस्य ॥ पयहवद्वेगद्व ॥ नृश ॥ नि
हृगोसुधाय ॥ रु ॥ समासादि विधसु ॥ स ॥ भनीनामानस ॥ सोम्य ॥ सुदी ॥ वाकवर्हि ॥ काप्रय ॥ पाक ॥ गोवेक ॥ नृश ॥ सा ॥ सा ॥ सा ॥ निनामका ॥ पूर्व ॥ गत्री ॥ भनी ॥ गयोमसिमाने ॥ १८३
पवनयागवाहितो ॥ कीर्ण ॥ अयुग ॥ रुव ॥ दाह ॥ पिरु ॥ यगमि ॥ मि ॥ लानु ॥ सं ॥ यधन ॥ की ॥ न ॥ धिक ॥ विकाना ॥ नृ ॥ न ॥ को ॥ ह ॥ म ॥ नृ ॥ ग ॥ रु ॥ वा ॥ हि ॥ न ॥ व ॥ वि ॥ व ॥ दा ॥ ग ॥ पा ॥ पि ॥ व ॥ सु ॥ सा ॥ धि ॥ ग
॥ व ॥ र्ग ॥ न ॥ द ॥ स ॥ के ॥ य ॥ वा ॥ ना ॥ य ॥ पा ॥ क ॥ न ॥ क ॥ मा ॥ ग ॥ वे ॥ क ॥ गो ॥ न्य ॥ स ॥ द ॥ स ॥ सा ॥ ध ॥ पा ॥ य ॥ य ॥ पा ॥ क ॥ गो ॥ नि ॥ ला ॥ ग ॥ वि ॥ वि ॥ सा ॥ सु ॥ मा ॥ नृ ॥ ग ॥ द ॥ स ॥ पिरु ॥ रु ॥ सा ॥ को ॥ वा ॥ क ॥ न ॥ रु ॥ य ॥ ग ॥ पि ॥ रु ॥ अ ॥ न ॥ दि ॥ न
स्यवानुवल ॥ क ॥ प ॥ श ॥ न ॥ सु ॥ क ॥ त्या ॥ वि ॥ स ॥ न्ते ॥ च ॥ ग ॥ न ॥ न ॥ ना ॥ रु ॥ य ॥ म ॥ क ॥ हो ॥ व ॥ स ॥ के ॥ न ॥ म ॥ पि ॥ वा ॥ ग ॥ पि ॥ रु ॥ रु ॥ वे ॥ द ॥ नृ ॥ व ॥ ल ॥ व ॥ स ॥ ल ॥ य ॥ दा ॥ ध ॥ य ॥ क ॥ न ॥ रु ॥ सा ॥ नृ ॥ य ॥ द ॥ व ॥ श ॥ स ॥ व ॥ ध ॥ वि ॥ रु ॥ नि ॥ रु ॥ नि ॥ य ॥

आकृतश्चानिलोऽवः २

विज्ञानेऽस्मादि तेऽवरं ॥ कुर्वन्निजं च २

कफपित्तेऽवेधातुं सहेते लघनं महत् १

॥॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥

गसाध्वा उदाहृग ॥ रु ॥ ना ॥ प ॥ द ॥ व ॥ नी ॥ क ॥ ल ॥ म ॥ न्ते ॥ नि ॥ र्द ॥ म ॥ नृ ॥ ग ॥ न ॥ प ॥ द ॥ रु ॥ सु ॥ क ॥ जी ॥ र्मे ॥ द ॥ न ॥ काम ॥ रु ॥ ना ॥ रु ॥ नि ॥ श ॥ क ॥ न ॥ वे ॥ ग ॥ धि ॥ क ॥ सु ॥ प ॥ ला ॥ प ॥ श ॥ व ॥ स ॥ नृ ॥ रु ॥ म ॥ श ॥ म ॥ ल ॥ प ॥ द ॥ रु ॥ नृ ॥ क ॥ र्मे ॥ श ॥ प ॥ च ॥ मा
न ॥ स ॥ ल ॥ क ॥ र्मे ॥ जी ॥ र्मे ॥ म ॥ ना ॥ म ॥ वि ॥ प ॥ या ॥ सा ॥ न ॥ स ॥ य ॥ ना ॥ रु ॥ ल ॥ द ॥ ना ॥ न ॥ द ॥ न ॥ प ॥ श ॥ वि ॥ ध ॥ य ॥ को ॥ म ॥ ल ॥ क ॥ ल ॥ व ॥ ल ॥ म ॥ ला ॥ ग ॥ पा ॥ य ॥ स ॥ स ॥ न्नि ॥ पा ॥ र्गे ॥ न ॥ रु ॥ य ॥ सा ॥ द ॥ प ॥ दि ॥ य ॥ ग ॥ स ॥ न ॥ रु ॥ स ॥ ग ॥ ल ॥ द ॥ रु ॥ नि
नी ॥ य ॥ के ॥ व ॥ रु ॥ थ ॥ की ॥ ध ॥ रु ॥ म ॥ नृ ॥ स ॥ रु ॥ ल ॥ हि ॥ सा ॥ न ॥ सा ॥ वा ॥ पि ॥ ना ॥ मे ॥ ला ॥ श ॥ ना ॥ प ॥ य ॥ न ॥ रु ॥ स ॥ व ॥ नृ ॥ न्य ॥ द ॥ अ ॥ दि ॥ वे ॥ व ॥ दि ॥ गो ॥ श ॥ व ॥ लि ॥ ना ॥ गु ॥ न ॥ व ॥ स ॥ था ॥ वि ॥ ला ॥ ध ॥ ल ॥ व ॥ श ॥ स ॥ रु ॥ ना ॥ श ॥ स ॥ नृ ॥ नि ॥ श ॥ प ॥ नि ॥ द ॥ द ॥
ह ॥ नृ ॥ क ॥ र्मे ॥ स ॥ द ॥ स ॥ ह ॥ म ॥ ल ॥ क ॥ र्मे ॥ ना ॥ ध ॥ रु ॥ ला ॥ स ॥ जी ॥ र्मे ॥ द ॥ प ॥ य ॥ रु ॥ न ॥ श ॥ स ॥ व ॥ को ॥ र्मे ॥ व ॥ श ॥ दी ॥ ना ॥ रु ॥ द ॥ रु ॥ पि ॥ वा ॥ क ॥ मा ॥ ग ॥ वा ॥ ग ॥ पि ॥ रु ॥ क ॥ रु ॥ स ॥ य ॥ द ॥ न ॥ द ॥ द ॥ ना ॥ वा ॥ स ॥ ना ॥ पा ॥ था ॥ नृ ॥ या ॥ नि
म ॥ य ॥ो ॥ दा ॥ मा ॥ क ॥ा ॥ य ॥ च ॥ व ॥ ध ॥ य ॥ वा ॥ रु ॥ य ॥ नि ॥ वे ॥ ल ॥ स ॥ म ॥ र्मे ॥ हा ॥ वि ॥ रु ॥ स ॥ पु ॥ न ॥ स ॥ रु ॥ नि ॥ श ॥ दि ॥ गु ॥ ल ॥ स ॥ य ॥ मी ॥ या ॥ नृ ॥ न ॥ व ॥ ध ॥ का ॥ द ॥ गो ॥ न ॥ था ॥ ण ॥ ध ॥ वि ॥ ध ॥ म ॥ य ॥ो ॥ दा ॥ मा ॥ क ॥ा ॥ य ॥ च ॥ व ॥ ध ॥ य ॥ वा ॥ रु ॥ द ॥ रु ॥
द ॥ रु ॥ न ॥ क ॥ाल ॥ दी ॥ र्मे ॥ म ॥ पा ॥ नृ ॥ व ॥ द ॥ र्मे ॥ रु ॥ बा ॥ ल ॥ वा ॥ धि ॥ म ॥ रु ॥ ना ॥ मि ॥ थ ॥ हा ॥ ना ॥ दि ॥ स ॥ वि ॥ ना ॥ मा ॥ मृ ॥ त्या ॥ पि ॥ दा ॥ बा ॥ द ॥ अ ॥ द ॥ ल ॥ द ॥ वा ॥ नृ ॥ मा ॥ व ॥ ल ॥ मा ॥ स ॥ य ॥ ल ॥ नी ॥ का ॥ वि ॥ ध ॥ म ॥ क ॥ न्या ॥ द ॥ दि ॥ रु
या ॥ नि ॥ रु ॥ श ॥ सा ॥ वि ॥ य ॥ ल ॥ को ॥ र्मे ॥ क ॥ र्मे ॥ य ॥ा ॥ दि ॥ ध ॥ म ॥ क ॥ य ॥ द ॥ दि ॥ रु ॥ का ॥ या ॥ ध ॥ पु ॥ व ॥ रु ॥ न ॥ र्मे ॥ र्मे ॥ र्मे ॥ क ॥ाल ॥ क ॥ न ॥ य ॥ नृ ॥ ली ॥ नि ॥ व ॥ रु ॥ न ॥ पु ॥ न ॥ श ॥ य ॥ प ॥ ल ॥ नी ॥ क ॥ व ॥ ल ॥ा ॥ व ॥ ल ॥ श ॥ की ॥ ल ॥ दा ॥ बा ॥ क ॥ न ॥ रु ॥ स ॥ रु ॥ न ॥ सा ॥ दि

१०४ अहात्ठ

नरोत्तमनाथजी

मिन्कलचसंस्तुत॥ शिवः प्रभुः मिर्मपूर्योः तगाङ्गान्तरादिपनिचादिपनिदादिपीरुहमूचः पाश्चैवपीउयन॥ पुवर्तिगसवकुलहिन्नकांथापमधुनिशदगपाश्चैवः शिवः ११ लु
मोहकाहसनेकेया॥ कनोमिष्टकेकाशः महावशत्रुं यनभासाङ्गहवीशुकदुष्टं कृत्वा नृकल्पगवजं॥ पितागपीगादिकगाः निकाः सुतं नोमुमशीपिहासुगन्धनं कृष्णं
सूर्यो धूमकोमदशा पुनर्गकाशं वैभवाञ्जमिषामिवदगतिभाकहोहोनाल्यनृमूहः ददयति मित्रं गुत्र॥ कलपुलेपमदेन पीनसकृदोवाचैः शिवमहोयनसिन्धुः १२
पुवर्तेनभायुद्धाद्योः साहसैरुहैः सविनयथावलभाउनेस्यनृकृगवायुः पितागवजं गगोवली॥ कृपिगः कृत्रुगकासः कर्तुं ननमः १३
नवद्व॥ श्रीवृत्तकलुननृजगाविहिन्ननवनाजसासूचीहिनिवगीकाहिनिर्निहोवनमालिना॥ पर्वतं दहन्त्यसहस्रावैश्वर्यकमवानापात्रावतकृज्जलपाश्चैवशूलीगता
न्या॥ सकाद्यैर्वेमनं पीकिवलवर्णस्यहीयनं॥ कीलेस्यासासुदुर्गत्मानयष्टकटिग्रहशावायुप्रधानाः कृपिगाधनवावजयद्वलशकृवैनियन्त्यायननेः काशीवीवकदुक
शापूतिपूथापमपीनं विमुहविगलाहिगभालपगं गुयगं वददयपवगीवचा॥ अकस्मादृष्टुगीगं कृत्वा वकागित्वं वलद्वयशसिन्धुपुसन्नवकुलं श्रीमदग्नननं गता॥ गतास्यक

यत्रपालिसर्वोऽप्यविकृवनिर्गुह्येयवकाङ्कः कसः १४
॥ ॥ धन्वन्तरिवाचा॥ अथातः १५
हिमाम्बुना॥ शुद्धकुरुमकश्चिन्तामहानृह्यपश्चमशकहोपनृहमगमन्पवनाविश्वगाहिगशापुलदकानिवाहीनिदूरभुगांसिदूषयनउदवस्तुः १६
समूहवभापाग्रूपगस्यदृष्ट्याश्चैव लंपालविलासगाआनाहः १७
रुभापविगुह्यगिनाग्रीवामन्त्रः पाश्चैवपीउयन॥ कासंयुधुवर्कलोहमन्त्रं पीनसंरुगभाकनोमिष्टकेकाशः १८
सूखी॥ कृत्वा कृयानः सपनिनिषर्णः १९

नेत्रविवर्द्धनं। स्यात्सुवकः साध्या नवावालिनाहवः॥ कनकसुसहागिलायसिनिविद्धि न ममूर्कदन्तुजार्दिनः॥ सस्यदमूर्कः सानाहावनि
दाहविनाधवानाश्रुधृष्टिपुनः कथं मूकनरकं केलीवनशाशुकास्यः पुलपन्दीना नरकायाविचननः महेनामहेनादिना नादनश्चसिनिपृथका॥ उद्धयमानः सन्त्रामेकम्
षरुं वानिगमापनसाकानविह्वाना विह्वाननयनानलः॥ अक्षः समाक्षिपन्नक्ष मूकवर्त्राविशीर्लुवाकाशुषकरः॥ मूकमूर्कः कर्णगोष्ठिगोत्रदकोयादीयेमद्वसित्युद्ध
नवपुत्राहवस्यधः॥ अक्षवागमूखः॥ अक्षवृद्धगन्धवहोदिनः॥ उद्धयिष्मदूरेकान मक्षिणीपत्रिः॥ क्षिपन्ना समक्षिद्धिदयमानेषु पविदवी निवृद्धवाका॥ अर्गसिद्धयुवका २०१॥
कात्यकपालधवाहनम्॥ ॥ ॐ यादिमहापूत्राणां गन्धर्वः सगोत्रनिदानं समाप्तम्॥ ॥ २०१॥ ॥ धन्वन्तविनूवाच॥ हिकानागनिदानं वृक्षसूत्रेणैव कृत्वा श्वसेकह
रुपाग्रूपसंख्यापठनिर्मेयया॥ हिकारुकाहवाकूदायमनामहनीतिवागमूत्राचमनूक्तं लेनयामूकैः सविनेशा नूकनीकू खनासुखे वनपनेवपीतिनः॥ कत्राहिकाम
नूजा मदेनद्यादू धानूगी॥ समसाध्यान्नपानन यूपुया निचसानूजा आयासागुपवनः॥ कूदः॥ हिकोपवर्त्तथा॥ उद्धमूलः॥ पविहगा मल्यदेवमदश्नना वृद्धिमायासगा

जानि कुकमर्तवमार्देवी॥ विप्रलयमनेर्वल्लराहनिष्पवर्त्तन॥ पत्रिभमायुषवृद्धि पत्रिभमवगक्तु नि॥ कस्ययनिजिनायवा माध्यागसाति रुपानः॥ पलायकूडगीसावने
उविपुनरुक्तिगा॥ यमलायाहिणीहिका पत्रिभमवनीचसा॥ धरुदुर्गवयुग्मस्य अगविपुनवदूषः॥ सुकयनीगनूवाच सुनिसंक्षु मूकगामा रुदनीमार्गमनस्य कूर्वगी
मर्मयोगनामा पृष्ठगानमनकीर्य महाहिकापवर्त्तन॥ महामूलोमहागयो महावगमहावला॥ पकागनेर्षावर्त्तन॥ पूर्ववत्सायवर्त्तन॥ दूतपासामहकूया कू मूसङ्गपसा
त्रिलमा॥ गमूत्रिलनिदानं न गमूत्राह मसाधयगा अद्यैवैवर्त्तन॥ सर्वलिङ्गश्चगिला॥ सर्वस्यसङ्गितामस्य सु विप्रस्यायेवायिने॥ वाधिरिः॥ द्वालीदहस्य रैकिङ्कदह
गस्यवे॥ सर्वपित्रागनाभयनवैर्वीयुकोत्रिलेशहिका श्वसोयथगेहि मत्युकालेकगालयो॥ ॥ ॐ यादिमहापूत्राणां गन्धर्वः सगोत्रनिदानं समाप्तम्॥ ॥ २०१॥ ॥ धन्वन्तवि
नूवाच॥ अथगायत्रागस्य निदानं पपदास्यहमा अनकनीगमनूगी वदूनागपूनागमः॥ राजयज्ञादयः॥ अथगागनादिहकथर्ग॥ नदूगोर्षादिजानाश्च वाक्काह
दूर्यपूना॥ यत्रवाजाचयज्ञाच वाजयज्ञागामने॥ दहोषधकयकूक दयसुहृद्वनाचसः॥ वसादिभषणकेष वागनादिववाजवानासानसनागसनाधः॥ उज्ज

[illegible]

निशाशासककुर्द्धिः मुखगन्धद्वयनामदशकदायवाचवर्द्धिः कासावर्द्धिः भवत्रभा॥ पसकपीनसः सः सुत्रहृदा ल्यवर्द्धिः नादधेर्मन्दानिलखनः ॥ भवत्रलेपकहा
ल्विलेशसोने। मुखेषु च द्वेषु वा निषु सत्यकषु वा विदग्गमानसः सः सुत्रहृदा ल्यवर्द्धिः ॥ दाधेर्मन्दानिलखनः सांसारिलानूपदवानाकुकुर्द्धिः श्वद्वेषु ॥ श्विको
द्वेषु पुषावनि ॥ पयगकाष्टुवागुमनोद्वेषु वा पयग। पायाद्वेषु वा पयगानि वानां वानपृष्ठयग ॥ वसाद्ये स्यान्वकायः मोसायकृन्निगुगोउपसहस्रयगृहगाकेव
लवर्द्धिः नखमी ॥ लिङ्गस्य ल्येषु पक्षीणां वा। शेषे मद्रवलाद्वेषु मावर्द्धिः यः साधयदवः सर्वेषु पितृनायथे ॥ दाधेर्मन्दानिलखनः समर्द्धिः द्रव्याः षष्ठमहसा। सुत्रहृदा ल्विलेशसोने।
नूद्वेषु नः सुत्रहृदा ल्विलेशसोने। सुकपूलाङ्गकल्वेषु लिङ्गस्य ल्येषु पक्षीणां वा। शेषे मद्रवलाद्वेषु मावर्द्धिः यः साधयदवः सर्वेषु पितृनायथे ॥ दाधेर्मन्दानिलखनः समर्द्धिः द्रव्याः षष्ठमहसा। सुत्रहृदा ल्विलेशसोने।
वेषु सु। सर्वलिङ्गकयोहवेषु ॥ धूमायगीववायर्थः भेदसाष्टुलक्षलक्षमाकुकुलेकाः द्रव्याः सप्तमहसा। सुत्रहृदा ल्विलेशसोने। सुकपूलाङ्गकल्वेषु लिङ्गस्य ल्येषु पक्षीणां वा। शेषे मद्रवलाद्वेषु मावर्द्धिः यः साधयदवः सर्वेषु पितृनायथे ॥ दाधेर्मन्दानिलखनः समर्द्धिः द्रव्याः षष्ठमहसा। सुत्रहृदा ल्विलेशसोने।
॥ धन्वके विब्रवाच ॥ अत्राचकनिदाने वक्ष्यते सुत्रगोधूना। अत्राचकोहवेषु दाधेर्मन्दानिलखनः सांसारिलानूपदवानाकुकुर्द्धिः श्वद्वेषु ॥ श्विको

[illegible]

नैकामश्चसष्टपुङ्गाग्रशब्देनागिमां विस्मृष्टयथुश्चिन्विमश॥ अथानुष्टुप्तिरुत्तासष्टनिद्रायादवगमेनवमासर्वेनसर्वलिङ्गं मूकामयं पिवहय॥ सहसात्रुधिनवान्य
मधुर्वकावसकिथो। रुवेनामोत्रुगलेक्षदुर्वेनस्यविशेषन॥ सृजकाः अथानिष्टवः कलुषमथागिनिद्रायादवगमेनवमासर्वेनसर्वलिङ्गं मूकामयं पिवहय॥ सहसात्रुधिनवान्य
असहस्रानिमिक्तवशनिद्रायादवगमेनवमासर्वेनसर्वलिङ्गं मूकामयं पिवहय॥ सहसात्रुधिनवान्य
आनावाधसमूहवाशमदमूकपसनासो। अथानुष्टुप्तिरुत्तासष्टनिद्रायादवगमेनवमासर्वेनसर्वलिङ्गं मूकामयं पिवहय॥ सहसात्रुधिनवान्य
नाद्रुवेरुवेनापिलेनकोधनानकः सगारिः कलहपियश। अथानुष्टुप्तिरुत्तासष्टनिद्रायादवगमेनवमासर्वेनसर्वलिङ्गं मूकामयं पिवहय॥ सहसात्रुधिनवान्य
नाद्रुगमाविषकल्यादल्लक्ष्मी। वोगादीन। अथानुष्टुप्तिरुत्तासष्टनिद्रायादवगमेनवमासर्वेनसर्वलिङ्गं मूकामयं पिवहय॥ सहसात्रुधिनवान्य
मात्रुगत्सकाश। पिलेननकं पिलेन। नहयैश्चनविशेषन॥ विवृष्टाग्रवसहदा। दाहल्लक्ष्मीपपीति॥ रिन्नवपीठनीलाहा। नका। लाहा। कल्लक्ष्मी। केरुनमदसकाशपयाका

शमाविज्ञानमधिनात्रवृक्षगदल्लासः सुप्रसक्तवान्। गुनरिक्तिमित्रेनैव नृजधर्मावचनवनासर्वरुक्तिमिहिक्षेपे नयसात्रे वापनशायाययाः निवृत्तं विनावीरुत्तयदि
नैशधायमदमूक्त्याः कृगवजगद्विनामा। स्वयमवोपगम्यके सन्यासनीयधेविनावायदहमनेसाविस्त्रा। माद्विद्यानिनयमलाः काक्याकालनियमिनाः पाण्ड्यातनसंश्रयाः कृ
निगयनृषः कावृत्तमृगोपमः। मिथनजीयेनोयुक् विक्तिमानपमयग। अगमधमरुवद्वल सनिलोयवागट। सन्यासविनिमज्जने नवमाशुनिवर्तयामदवानोषोषपुष्टि
रिनिगिनिजिपनिमज्जः॥ यूकायूकश्चकन युक्तिवियुक्तनमद्यनावनकासदशस्यार्थं पुरुजिसहायामवर्यामि॥ पवित्ररुनेनरूपं पिवनिगः पिवत्यमृगमा॥ ॥००॥ **यादिमहापू** ॥०१॥
॥०१॥ मदाययादिनिदानमा॥ ॥०२॥ ॥ धननविनूवाच॥ अथार्जुनिदानं श्रुत्वा विस्मयं प्रकृतं। अपिवापुलिनीमां स कीलकाश्च पुरुवक्रियन॥ अर्जुनं सिनसादूयनं गुदमा
जमिवाधनागा दोषास्तु द्यामामदां सि सदिश्वविद्विषादगान॥ मांसादूयानपालादो कृवन्त्यर्जुनिका नृगुशसहजमाना नोक्षान रुदंक्षसूमा मगः॥ शुल्कजाविविहदाश्च गुद
स्तूलानसंश्रयाः अर्जुनपक्षः दुल्लसिन्नु निमुद्रादो दुल्लसिगः॥ वाल्येपवाहिनीगामिनुमः अविसेरूनमा वीक्षसमनलगत्या गुदाश्चोवेहिनकुल॥ यावाध्वपुमा लनभा

माध्वगुनः पत्रभागुहः ॥ १॥ वाक्कानां वातावीजायतफगा॥ अर्जुनं वीजं फिष्टमाणापिनापवा नशदवायगायां कापादि सन्निपातस्य वायनः॥ असाध्या नवमाख्यानाः सर्वना
गः ॥ कुलादुवाशोसहज निवृत्तिः लषल नृकेदुर्दना निगु अर्जुनमेवानिपातु निदानं लभयदुवालिवा॥ अटान्योनिपृथग्दाय ससंज्ञलिवया सुगः शुक्लानिवागल्लमाया मा
दालित्वस्यपि नः॥ दाषपुकापहनुमु वागुक्तं वनवसादिना अर्जुनोमलजि निविगः पुनश्च निग्रधयनः॥ पानसंक्षार विषम कोवद्रुदकागना वक्रिन्नगस्यनाधूथी गलेरु
दादियेदनागा रुर्जगानाम्यसंयज्ञ पुनगानिपवाहलगा गनसुगसहद्वगः अत्रल्लहृदीनल्लगः॥ इत्यावाप्यगीसात्रानृगहलीमाप्यपदवशकषल्लद्विषमाल्लयः वृक्षायाया
धिर्गापुनः॥ अर्जुनमगर्कपुपगना दुर्कवृद्धिपुपीठनागे ॥ ॥०॥ लोअपवेक्ष्य नपानः कूपिगामलमा पायावलीषसेद्वर्हि वसुहिः पल्लूमूक्तनः ॥ यनर्जुनं पुष्टं लक्ष्मीव
द्विमन्दगा विरुक्तः ॥ साक्षि सदनं विरुकोद्वर्नं कुमश सा न्योत्यनं गयः ॥ ॥०॥ सहस्रदोथ वोग्रहः मन्त्रः पुनर्गामुदः पायानाह नधश्च वन नसकः पत्रकर्तुः ककु
दिर्गुक्त निश्वसना अमुकं जनमाटा पश्चा विगोज्ञानरुगिगा रुगमनुमलो विरुष्टाधूमकास्तकः॥ निनः पक्षानपांशूल मालस्यरिन्नपर्वगा ॥ ॥०॥ लियार्थेषु लोत्यः

जाकाष्ट. कनपाये गुरुवत् ॥ अथानमदनाविद्या. दल्लासपविर्वहनभावलोचसुगर्वाश्रुला खलु श्वयथुसमूहवशापवनस्थाद्विगमिलं गनश्चुर्द्वीवविद्वन्नाशदडागुगहली
दाय. मू. स. स. पुवाहिकोशावाधिर्योनिनिनश्चसुनिनोत्रकासपीनसाशमनोविकारं हृष्टासु. पिरु. उ. लोदनादयशा. उ. व. व. न. ग. ग. जायकं. रु. दा. न. ल. श. द. न. न. मा. म. ल. य.
दावह. प. न. मा. य. म. य. द. व. श. वा. ना. हि. रु. न. का. द. ना. न. न. वि. ना. पि. वि. जा. य. ग. स. ह. जा. नि. रु. दा. ष. लि. या. नि. वा. य. न. न. व. ली. ॥ मि. ना. नि. ना. न. सा. श्र. नि. या. य. न. नि. व. ना. दि. हि. श. द. द. जा. नि.
दि. गी. या. या. व. ली. या. न. या. श्रि. ना. नि. वा. ॥ अ. र्ध. सि. सु. र. वा. श्र. नि. न. वि. ना. त. य. हि. ना. नि. वा. म. दु. दि. य. पि. व. श्र. न. म. थ. र्थ. ना. हि. ना. नि. रु. ॥ ग. ल. उ. प. द. स. य. न. पा. लि. पि. दि. ला. नि. म. द. नि. व. ॥ १७३
वानागृहीत्वा. श्र. मा. ल. क. ना. य. र्ण. ल. व. हि. शा. की. लो. प. म. हि. न. र. वा. न. य. म. की. ल. श्र. न. दि. द. श. वा. न. न. भा. द. ४. पा. न. य. पि. रु. दा. नि. न. व. क. ना. ॥ अ. र्ध. ल. श. सि. य. ना. न. स. य. ना. नि. न. ल. स. व.
लि. ना. अ. र्ण. ना. पु. र्ण. म. य. ल. मा. शु. क. र्वा. न. य. ल. वा. न. ॥ ग. ल. या. श्रि. दि. गु. द. ध. र्थ. क. र्थ. ध. र्थ. गु. दा. द. न. मा. ॥ ॥ अ. र्ध. वि. म. हा. य. ना. ल. ग. म. न. उ. अ. र्ध. नि. दा. न. स. मा. य. मा. ॥ १७४ ॥ ॥ अ. न. न.
नि. व. वा. या. अ. र्ण. ना. न. ग. र. ह. अ. श्र. नि. दा. न. व. वि. सु. र. ना. दा. ले. द. ले. र्थ. या. क. का. च. ध. दि. ध. शा. अ. र्ण. ना. न. स. व. स. र. ना. जा. य. न. य. म. पा. न. न. श. रु. ष. श्र. का. नि. वा. सा. म. ग. लि. पि. य. वि. न. रु. के. ॥

॥ म. द. न. क. ना. नि. मा. ना. दि. न. सा. नि. स. ह. वि. न. मा. न. ॥ रु. मि. थ. वि. ग. ना. ध. च. न. दि. र्थ. क. पि. ना. नि. ल. शा. श्र. स. न. य. य. ध. वा. ना. रु. वा. न. ने. व. वा. न. ल. मा. या. पा. या. न. स. रु. न. का. रु. पू. री. य. द. व. ना. द. य. श.
प. क. ल. य. के. नि. सा. न. स. ल. के. र्ण. ग. य. हा. वि. न. श. र्थ. दा. रु. द. के. श्रि. म. र. सा. दा. म. ल. ग. र. ह. शा. अ. र्ध. ना. न. म. वि. पा. क. श्र. न. ध. न. न. वि. रु. ल. मा. अ. र्ण. ना. ल. य. न. व. श्र. ना. य. वि. वे. द. म. प. व. श्र. न. ॥ अ. र्ध. स. रु. न.
न. म. रु. ॥ ग. थि. न. म. मा. रु. म. रु. श. न. थ. द. य. गु. दा. हा. स. पि. दि. ले. प. वि. की. र्थ. य. ॥ स. रु. क. रु. क. पा. य. श्र. रु. क. ना. मा. वि. नि. श्र. म. ना. पि. रु. न. पी. न. म. सि. न. ह. वि. र्ध. म. द. ल. पु. रु. मा. स. व. क. म. नि. द. र्ज. र्थ.
ह. ल. म. रु. श्रि. द. दा. रु. वा. ना. स. ल. पा. य. स. ना. प. पा. व. क. श्र. मा. ल. य. न. मा. पि. दि. ले. र्ण. ना. न. पा. ना. मा. ल. य. स. पु. वा. हि. क. मा. स. या. म. रु. श. र्थ. सा. रु. ॥ म. गु. न. वा. सि. गु. ना. द. न. ॥ रु. न. य. रु. न. र्थ. श्र. स. व. ला.
स. व. ल. रु. श. रु. य. न. रु. हि. न. वि. रु. ना. यि. ना. दा. व. य. न. स. रु. ॥ वा. य. रु. ना. नि. सा. र्थ. न. दि. पु. म. रु. द. व. पु. र्वा. वा. न. पि. रु. स. र्मा. लि. रु. वा. य. रु. श्र. म. क. न. शा. अ. र्ण. ना. न. स. मा. स. न. द. ध. मा. ना. नि. वा. म. क.
श. सा. रु. रु. नि. व. स. रु. द. न. ने. व. दा. य. म. रु. नि. ॥ स. रु. द. र्ज. र्थ. मा. टो. प. वि. रु. र्थ. हि. पु. स. कि. ल. श. वि. प. री. ना. नि. वा. म. रु. क. रु. ना. का. पा. पि. म. रु. नि. ॥ अ. र्ण. ना. न. य. य. ना. नि. य. ल. व. रु. ह. ली. ग. द. श.
ग. स. य. मा. द. नि. नि. व. ल. क. ने. न. र्थ. स. वि. न. ॥ स. र्म. स. रु. नि. वा. र्म. वा. जी. र्थ. ना. नि. सा. र्थ. न. यो. नि. सा. ना. नि. स. व. ल. दा. ल. का. नी. न. रु. वा. न. शा. सा. म. शी. ल. म. जी. ल. न. जी. ल. प. क. रु. य. व. वा. अ. क. सा.

दान सर्वधर्ममकसाक्षिलीमूद्रा॥ विनकुहलीदाषः सप्रयवापनयथासचकुहोपथगदधिः सनिपाताञ्जयन॥ पायूपनस्यकदनविनापर्वनमसूकशपमकावकुवेव
 स्यमत्रवित्तुनोहमशाजानदावपनाकुद्विः कर्णकल्पेकूनमाकास्यभेकमसमसासामान्यलकेकनशासूकशिवावृष्टिस्फुः श्रयथः केनपादयोशक्तुलितालुः
 षक्तिमिर्वकेलयास्वनशापाश्वत्रुर्वकनग्रीवाः नूजाश्लेकविस्विकात्रायवृद्धिः सर्वेषुद्रोहप्रापत्रिहलिका॥ जीर्णजीयनिवाधनः कुर्कस्वास्त्रिमममनवागद्वि
 गगुलमाषः प्रीहपोहृत्तुल्यभषका॥ विनादः खड्गवृक्षकारुनावगदरुनवगपूनः पूनः पूनः पूनः दृष्टं पायूपनस्यकदनविनापर्वनमसूकशपमकावकुवेव २१४
 म्नाज्ञोवदत्तकः दाहोत्रिहृत्तुल्यभषका॥ विनादः खड्गवृक्षकारुनावगदरुनवगपूनः पूनः पूनः पूनः दृष्टं पायूपनस्यकदनविनापर्वनमसूकशपमकावकुवेव
 ज्ञोवाहसमधुनः सदनसुपधर्षण॥ हिन्नाश्वमसिद्धिर्गुनवर्द्धयवर्द्धनमाश्रुगस्यापिदोर्वल्यः सर्वजसर्वदर्शनोविहागद्विस्वयथाकाविषमाद्यासुयामयाश्रयस्येग
 हुलीदाषः समस्तस्वास्त्रिकावली॥ द्यागद्याश्वमवीकृष्टमहादेवहगन्धनाश्वमसिद्धिर्गुनवर्द्धयवर्द्धनमाश्रुगस्यापिदोर्वल्यः सर्वजसर्वदर्शनोविहागद्विस्वयथाकाविषमाद्यासुयामयाश्रयस्येग

निदानसमापः॥ २१३॥ ॥ धनकविनुवाच॥ अथगामूनाद्यानिदानंयाव्यास्यामः॥ ॥ वस्तिवस्तिजिनामदुर्वेदीदृषलपायुवानकसमहनाशपाकागुदास्तिविवनाश्याश
 अश्वमूखापिवस्तिहिमूगवाहिजिनामूखेपाज्यश्रुयकेलुक्केश्यन्मनिनेनात्रगमाथिस्त्रिवपुविलम्बेनदाषाः कुर्वन्किर्विगतिमासूगयागपमहाश्रुक्काममसमाश्रया
 शावस्तिर्वदलमदोक्तिः मूकाल्याल्यमूद्रः मूद्रः॥ मूगाल्यत्रजिजदगुपपीठं सदाहृत्क॥ नकंवाकरुजावस्तिमदुजोत्रवकावान्आपश्चसविनुक्कः सर्वेऽसर्वोत्तमकमले॥ य
 दावाकूमुखवर्कः नावहृत्तुल्यभषयनामूर्गसुपिहसकरुः सशुक्वागदकमो॥ सजायगमवीद्यानापिलाङ्गनिविवाचनाश्वमसिद्धिर्गुनवर्द्धयवर्द्धनमाश्रुगस्यापिदोर्वल्यः सर्वजसर्वदर्शनोविहागद्विस्वयथाकाविषमाद्यासुयामयाश्रयस्येग
 ल्याश्वमूर्गदामनः दंशतिपत्रिगहिनुकावहोचमूर्गसिद्धिर्गुनवर्द्धयवर्द्धनमाश्रुगस्यापिदोर्वल्यः सर्वजसर्वदर्शनोविहागद्विस्वयथाकाविषमाद्यासुयामयाश्रयस्येग
 अस्वापामूर्गमहदंशः गमिदकापममागमसिद्धिर्गुनवर्द्धयवर्द्धनमाश्रुगस्यापिदोर्वल्यः सर्वजसर्वदर्शनोविहागद्विस्वयथाकाविषमाद्यासुयामयाश्रयस्येग
 निर्लमूर्गसिद्धिर्गुनवर्द्धयवर्द्धनमाश्रुगस्यापिदोर्वल्यः सर्वजसर्वदर्शनोविहागद्विस्वयथाकाविषमाद्यासुयामयाश्रयस्येग

[illegible]

कूटसुभागसुनरोत्रवमा॥धरुनास्यलोथिल्यामामाऊश्रुगुलकृयशकाल्यभयवकृष्ण।निःसात्रश्यातस्तथन्दियशास्यमानेविवागरेकेमुदुवगादुदयनचाशुलादि
कूटवेदनशमदलिनवालेकुवाह॥अनलिपिलिनिद्वयी।गाल्लामारुगानलशसमगकिहवीश्वेगा।केल्लेलेलीनमीबमी॥पसपश्रुधएथग्याधिःसमसेमलिकायनाश
वायूपमस्यदुदया।स्यन्दनविद्विगतवि॥अनविशपीनमूगल्लेदरावांनममूगगा।सदशसमानिलकुन।माचनूककदनुशाकपूनुकात्रुभाजिवा।नेखविनूगनंगगा।शम
रुलोहास्यवेनाय।विद्वे।षशपाश्वमूकेना॥पिणिपिविगपीगाने।जिवादिहृद्वनसमशखस्वदमूकुदिकोश्व।गीनकुकेदेवकुगा॥ववाहृदाम्नकोयाहःककुाकूके।जिविठिका।
रुल्लोलवणवकुल्लोमरुषेखनकुयाश॥सशुदिश्वनिचयाद।निकूलि।अनिदुशसहशमनकषयासुपिरु।मूषनामधूवाकरुमा॥दूषयित्वाकरोदाश्वगेनाकूकविनूकया
मुनिंसिसयकुर्वे।कय्यादकुधवपूर्वव॥पाशुनागनगासुन।ताहिपादाम्यमहने।यूवीषकुमिवल्लुखे।दिनेमाल्लकरुनवमा॥यशपिरु।नोगीसेवेन।पिरुलनेखकारुलमा
कोश्वभखापागपिरु।दश्वमद्व्यासिमाहनेगा॥होत्रिशमूगनेगल्ले।मुखनकासकरुया।दाहीविपाकरुप्लावान्नेकारुद्वेल्लन्दियशा॥हवपिल्लेखल्ले॥शमथपाशुनागदनेनवाडे

धू. ग्रपयः (भपित) नृशवा न न कृ सं क रू सं. पिरुदादुमन क रू न॥ मलु लार्वी विवृत्रो र्वी. नृष्या श्रवा न पिरुजं। धर्मो क कृ कृ किटि म. सिध्दान सविपादिका॥ वागवृषा द्रवाः १४४
 पिरुददुशगायुषी॥ पूली कं म विमृष्टे. दमवचन न तथा॥ सर्वे स्यात्कावलं पूर्व. सदकं ददु का कलभा पूली क स्याजि द्वाय. महा क रू नि स फु॥ अदि श्वा क रू व न स्या. सिध्दान
 स्रिदे विवृत्ता गादादु क लु विहाये. लाद ४ का. शान नि मु निश॥ नृपा लम पि न क र्वे नि मिहो त्याप की पलमा नो म ह र्वा स्रज ४ क रू. कृ कृ ल क रू म गज मा॥ क रू नृ ल क यो लार्वी
 नृ क सूर्य र्व न ग लभा विमृ. ना स न प र्य न. दू वि न र्म मि हि श्रि न॥ या श म ल्य क क लु क रू. ना यु म पि चा प क रू द म न ग म ल्व गो व र्म गो म पि ना वि न भा व द रू ल र्व क रू ला क रू द र्व क रू दा ह नृ १८४
 जा धि क रू मू क रू न व द व न रू. मि न स्या दू दू ध क रू॥ मि न स्या न रू नृ मि न र्व १४४ न क म ना लु ग म अ न्या न म क मू क रू न. व द रू क लु लु वि कि मि॥ श्रु क रू यो ना न प र्य न. म लु ल य मि
 म लु ल मू स क लु पि ट क स्या म. ना क रू म श्रि वि च चि का॥ पू न र्व न रू क रू. न म ४४ अ म स म न रू. मा मि ना पि दा ह नृ क रू. क रू क रू ४ पि न रू श्रि न॥ वि श्रान्ति द्वा क रू नि यो क रू म
 श्रि क रू व द ४ क रू मि। ह सि च र्म र्व न स्या. च र्म का रू म हा ग या ४॥ अ स्र द म स्या स क रू. स न्ति रू क रू नृ पू न श नृ क रू वि क रू न रू स्या. म लु म ल व रू वा नि न भा॥ मि न र्व नृ क रू व हि मि न र्व

म न र्व र्व नृ ४ कि न रू अ नृ स र्व र्व नृ स द. ना म ला ग्नि क पू य व न॥ पा थ ल वा र्व का र्य स्या न. द लु ४ क लु प मि श्रि न रू न रू व र्व ल रू क रू पा लि पा प द र्यो वि पा दि का॥ गी वा श्रा ग लु ग लु
 धू स वा पि ट का वि न रू दी र्व प रू नो न दू व र्व. द ग रू क रू स म क रू वि ४॥ उ क रू नृ म लु ला द ४ क लु म र्वे स्र स र्वि नी. क रू ल मू ल स दा हा रू. व क रू स र्व व द रू व ल मा॥ स दा नृ क रू द रू ल र्व. पा य न रू
 स र्वे नृ म र्व। व क रू क रू म लु ला पा लु. दा ह नृ ज। कि न॥ सा स र्व म रू न रू क रू ४ प द य नो मि वा मि रू ४। द न रू वि ल रू सी का स्र क. पा य मा लु वि रू दि व॥ पू ली क न रू ल रू. श्रि न रू. स्रु ४
 मि ना नृ ल रू. वि रू ट वि क रू पा मा. क रू क रू द नृ ज। धि क॥ स रू अ म रू ल व द ४ पा य ४ स्रु ४ क पा लि क रू य रू। स रू ४ रू म स र्व रू स रू. क रू न क रू नि दा ह व रू। व क रू द र्व न रू म रू द रू. का
 क रू ल रू व दा ह नृ क रू. ल रू रू पू र्व नृ क रू. का क लु रू लो प म॥ क रू ल रू रू रू रू स र्व. न क रू व रू. ग रू ल रू व रू द रू द य नि हि न रू. नि रू दि. ल रू क रू म रू ४॥ क रू रू द रू धि ल रू
 ना. स र्वे दा श्रा नृ ल रू. वि रू क रू य रू य रू. मि. क रू क रू स मा ल य मा॥ जा य मि दा ग रू क रू. पिरु द दू. नृ स मा स रू. मा अ क रू. क रू वा ना दू. ल रू क रू म क रू म ल रू य रू॥ ग रू ल रू वि रू
 क रू ४. का य रू व रू. नृ क रू य रू. स रू द ना प रू य रू. व ४॥ अ लि न पि श्रि न रू पू न श॥ पा लि रू. दा श्रि ना स्रु. ना ४. क रू म रू स र्वि रू वा धि क रू। को न्य रू. रू क रू य रू ग रू. द ल न स्या. स रू म रू मि॥ ना

साहस्रमहामयः ननु वागसूत्रकयः कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि
दिश्य विविधविशेषां वसुधैव कुटुम्बकम् इति वागसूत्रकयः कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि
वर्तमानवद्वयं कुरु कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि
॥ १० ॥ यादिमहापूजा कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि
यनकं जगद्विर्मलकं सुरुतं ननु दावद्विगच्छा मानवो विविधविशेषां वसुधैव कुटुम्बकम् इति वागसूत्रकयः कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि
यः युक्तानि विनामनं विविधविशेषां वसुधैव कुटुम्बकम् इति वागसूत्रकयः कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि
त्यं पुरुषकाकुरादि विविधविशेषां वसुधैव कुटुम्बकम् इति वागसूत्रकयः कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि

सासावहासाश्च नामनः सफधगुणः प्रत्यादाउदनाथः ददयादासहाकराशा वनवायु कुरु सुमाः सगन्धः वसुधैव कुटुम्बकम् इति वागसूत्रकयः कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि
दिह नानादेवाज्ययथपीनसानानकावादिह जिनासः कानकजानकनोलवशाया कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि
नयदासाया नुराशागदोष्टाः ज्ञानविशेषां वसुधैव कुटुम्बकम् इति वागसूत्रकयः कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि
ललिहाजनयनिवा विद्वद्वलविद्वद्वलः काश्यापात्रपात्राणां गणः नमो भगवते रुद्रकः विनिर्जितः ॥ १० ॥ यादिमहापूजा कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि
ननिर्वाचः वागव्याधिनिदानकं वसुधैव कुटुम्बकम् इति वागसूत्रकयः कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि
सुखाधनाविशेषां वसुधैव कुटुम्बकम् इति वागसूत्रकयः कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि
नाथापात्राणां वसुधैव कुटुम्बकम् इति वागसूत्रकयः कुरुते किमयः सुकः सुदावापत्यवधनमायदापूर्वश्च सर्वो लिखितः स्यादियं कुरु कसम्वर्जितं किल सदानुलक्षणं नि

१२०
प्रादुर्भावविषयाः कृताः कृतिः वानुसंस्कृताः पयःपिनापिदुःसाध्याः सावयन्वामपकमाः विदधाती रुद्राः गुल्मानि सद्यः दनः शरवत्युपदवास्तुमाः मादकाना
मृपक्याः निदानं स्वर्गमयाः अथैवाकसमीविगमासर्वेवागविवकायः नराद्यायुः पदद्वयोः पुर्वविक्रयवागमदीः श्रिकित्तामथवाचनेनाः निरुलासर्ववागदी
मक्षः मिलसंयुगाः मथोषाविदुःलात्रातिः सर्वेवागेपमदनीः गतावनी रुजीः शान्तिः विदुःज्ञानसमायुगाः सोवर्चलाससिद्ध्याः पूर्वसहस्रगादिनाः गुतावनीगु
तीयागिष्ठुलाभूलिकोवलाः पुनर्नवाचवहनीः निर्मुक्तुलिमयगुक्तमार्गः राज्ञामलकः वासकसुदसनवाः राविगिहिरुलावोरः मेवमथथसफकेशपूर्वक १९०
अथथालारुमृकापूर्वः शुभादकमाः वटिकाद्यन्तेलम्बाः कषायाः शेषवागदुताः पलम्पलाद्वैकवापिः कर्षकषाद्वैभववाः ॥ १०० ॥ यादिमहायुगाः लामनू
निदानं समाकृताः ॥ १०३ ॥ ॥ धन्येन विनूवाच ॥ सर्ववागहर्वसिद्धिः यागसार्ववेदाः नम्यहमाः ॥ १०४ ॥ सङ्गसंस्कृताः पातः पालिनाजीवहनेव ॥ निमयोदिहविः ८ का
लः श्रिकोहिः ८ यष्टिः ८ धरुवः ८ कषायकदुगिकाल्यः नूदाहात्रोदहजनाः ॥ यिनावावाययायामः स्यः ८ भकपुजागत्रोः ८ योकोषातिहावाञ्चः कर्मयागमरिमर्ष

१२१
लगाः वायुः ८ कृशपिपर्यन्तः जीर्णः ८ दिनसंस्कृताः ८ कृत्वाः मूलवर्णकाः कदुकाजीर्णः राजानाः ॥ तीक्ष्णपात्रिसंतापः मयः ८ अधनिषवनाः विदाहकालः रुक
स्यः मेः ८ कृत्वाः लदाः स्यः ॥ ग्रीष्मकालः ८ मारुतः ८ पितृकृपानिदहिनः ८ सादः मूलवर्णः ८ मिष्टः ८ गुन्नीगानिरुजनाः ॥ नवान्नविद्विलानूपः मोयागिस्यान्दिभवना
नेः विदाहकालः रुकस्यः मेः ८ कृत्वाः लदाः स्यः ॥ ग्रीष्मकालः ८ मारुतः ८ पितृकृपानिदहिनः ८ अथायामदिवास्वप्नः स्यात्सुनसुखादिरिः ८ कदुः ८ पदाधरुः ८ वसुक्तवपु
कृपानिः पात्रः ८ लसः ८ कषाः ८ दाघाविस्फुराजनाः ॥ खवर्तसुफतादुषः नोदसुमेनः ८ भषलमावायाः ८ निर्येकः ८ वागमार्तलकसदतः ॥ दाहार्मपाकसंकेदका
यनागत्रिविधवाः ८ कदुः ८ मृगवर्गः ८ स्रदसूक्तः ८ हिः ८ समाः ८ हात्रिदहनिगुहः ८ पितृलिङ्गनिर्गन्तवः ८ हापदहमाधुर्यः ८ विनकात्रिवधनम् ॥ सुमित्यहफिसंयानः
८ भथगीतलः ८ भवभागेः ८ निदाहियागः ८ लक्ष्मणः ८ लसः ८ वः ८ हिः ८ लक्ष्मणः ८ सः ८ द्विद्याधिद्विदाषजमाः सर्वहसुसमृत्यन्तः ८ लिङ्गः ८ सान्निपातिकः ८ दाघधरुमलोक्षनाः
दहिनान्दः ८ उच्यते ८ गिर्वासेमलमात्रायः ८ यद्वीविपर्ययः ८ वेसाहः ८ वासमदाः ८ मज्जाः ८ कुलाः ८ लिङ्गः ८ वः ८ वागपितृकेदाघाः ८ विन्मृगाद्याः ८ मलाः ८ मृगाः ८ वायुः ८ गीताः

॥ अथ च नृणां नाम्नां पालं वागनिधवनमागुरुहृदिनाडाग्रहकंदषादयानमानां गमिन्सापादिकाकार्यो लंप्यनं वा विसृज्य न मांशुलान्नगन्ति विमूढ सुमृ विरुषसू
वकाशा विधयश्च दनेन नृपाचनं लवल्भदकं आमममूश्च विरुषं करुपिला निलेश्च मागां अलिपुज ० वं पाशा हि हुगुषणं मेधविशदिवा सूर्यपुक्वीन सवर्जो विना
नी अहिर्गाले गत्राजि नहिगानेन नृस्यज्जयडक्का अन्नपानश्च मादिकस्य नृस्यस्यो कवीनदधिमतेश्च पायश्चक्रो वीनश्च विल्लस्यानाकगमात्री पाटलागलिका
विका ॥ दीपनकरुवागच्यं पश्चमूलमिदं महान्मलयुक्ता पृष्ठिपुक्ती वृहती द्ययग्भद्रे वी वागपिरुह नृवृषा कनीयश्च मूलकं उहयं द्ययमूलं स्यात् सन्निपातकृत्वा १२
पहं ॥ काका वाकचतुर्दया पाश्वर्ष्यं लं वगस्यं पुनश्चैलानि सर्पा विपुलपानानकाश्च ॥ काथा चरुर्गुलं वात्रि पादसं स्याच्चरुर्गुलं ॥ अहश्च नृस्यं द्रोत्रं कल्कश्च
मृदपादिकश्च ॥ समहृत्तोषधश्च पाकावस्त्रोपोनरुवं समेश्च खरोरु ॥ इमं दूतं स्यात् सामान्यं यं कल्पना ॥ कूलदहं दियो विद्या विरुनियो मत्रिषा नो अविद्व मिनिगा
मिद्या दायूषाने मृपाचनं ॥ यागक्रां नीन्द्रिये प्रथमि पत्री नानामृत्पूरा क्राहिषादिगुगुनदधी पियात्रानिश्चयाहवं ॥ तुल्यजानललादी स हनृगलं गालव

[illegible]

नृचाचनलनिर्जुलीनर्कवीकासमादिकाशासुविल्लाःकरुपिरुद्याःकमिद्यालघूदीपिकाः। वर्षाद्वोमार्कः। सोवागकरुद्योवातनागनो॥ गिकाःसुनस्यादन७८३काकमाची
जियाषकृगावाः। नृकीकरुवागध्री। सर्वयसर्वदातेमा। गलेदवहिकोसुर्म। नाजिकायागपिरुला। नाडीवःकरुपिरुद्यः। ववर्मनगीगल॥ सगासं सर्वदाषय्यं। गियूटवा
गकृ०पनभासकात्रः। सर्वदाषय्यो। वा। रुकोप्रोचनः८पन॥ ग०लीया। विषह०। व्याल०। वेदियानथा। मूलकं दीषकृद्वामं। सिनैवोवकलापह॥ सर्वदाषहर्नद
द्यं। क०द्यं। ग०लेथिमिष्यगं। क०कोटकं। स०वा०को०। प०ल०का०। न०व०क०। मा०। क०स०म०ह०क०। न०स०। का०स०पिरु०क०। हा०प०ह०। सर्वदाषहर्नद०। क०षा०। व०सि०। स०धे०न०। क०लि०। न०। १२३
वनीपिरु। ना। जिनीवागकात्रिणी। गि०पू०। व०न०को०। वा०ग०। स०। म०। ल०। पिरु०। वा०। न०। ॥ व०का०। म०। क०। रु०। वा०। न०। ॥ उ०मी०। न०। क०। रु०। वा०। न०। ॥ वा०। न०। ॥ दा०। डि०। म०। ग०। हा०। ना०। ग०। न०। ॥ व०। ल०। गु०। न०। ॥ क०
स०। न०। मा०। रु०। ल०। स०। ॥ दी०। प०। न०। क०। रु०। वा०। न०। ॥ जि०। वा०। न०। पिरु०। रु०। न०। मा०। स०। ल०। क०। स०। म०। धू०। न०। द०। क०। म०। न०। ले०। क०। मा०। रु०। क०। पु०। न०। य०। क०। पू०। थ०। ह०। नी०। क०। म०। ना०। प०। मा०
॥ स०। ग०। नी०। क०। रु०। वा०। न०। ॥ अ०। द०। ग०। द०। कि०। दा०। ष०। जि०। वा०। न०। ॥ स०। म०। ह०। न०। मा०। स०। स०। न०। नि०। कि०। ली०। रु०। ल०। मा०। दा०। ष०। न०। न०। क०। ष०। सा०। द०। व०। क०। ल०। क०। रु०। वा०। न०। जि०। गु०। ल०। वा०। न०। क०। रु०। थ०। स०। का०। ष०। ध०। वी०। ज०

पूवकमा॥ कपिलं ग्राहिदाषय्यं। प०क०। गु०। र०। वि०। षा०। प०। हा०। क०। रु०। पिरु०। क०। न०। वा०। ल०। मा०। पू०। क०। पिरु०। व०। द०। न०। ॥ प०। का०। स०। वा०। न०। न०। मा०। स०। ॥ क०। व०। र्क०। व०। ल०। प०। द०। वा०। न०। ध०। क०। रु०। पिरु०। ध०। ॥ हि०। वि०। रु०। मि०। जा
म०। वी०। ॥ वे०। न०। द०। क०। क०। रु०। वा०। न०। ध०। व०। द०। न०। वा०। न०। पिरु०। क०। ग०। वि०। रु०। मि०। वा०। न०। ल०। पिरु०। धि०। याल०। प०। व०। ना०। प०। ह०। ॥ अ०। न०। ना०। ज०। व०। ल०। मा०। र्क०। ॥ को०। स०। म०। र्क०। वा०। न०। वे०। क०। जि०। ना०। मा०। ग०। नी०। म०। धू०। ना०। प०। का०। ॥ थ०। स०। पिरु०। रु०
नी०। स०। वा०। ॥ अ०। द०। क०। न०। च०। न०। व०। र्क०। ॥ दी०। प०। न०। क०। रु०। वा०। न०। क०। रु०। ॥ गु०। ल०। म०। त्रि०। यो०। पि०। य०। ल०। ॥ क०। रु०। वा०। न०। जि०। ना०। म०। ग०। ॥ अ०। द०। र्क०। म०। त्रि०। व०। वि०। द्या०। दि०। न०। व०। र्क०। स०। म०। ग०। ॥ गु०। ल०। स०। ल०। वि०। व०। न०। ध०। र्क०। हि०। रु०
वा०। न०। क०। रु०। प०। ह०। ॥ रु०। मा०। नी०। क०। न०। य०। का०। जा०। ॥ वा०। न०। ॥ स०। म०। ल०। द०। ॥ प०। न०। मा०। व०। द०। र्क०। स०। म०। ध०। र्क०। ॥ दि०। दा०। ष०। न०। म०। न०। स०। र्क०। ॥ सो०। व०। र्क०। ल०। वि०। व०। न०। ध०। म०। र्क०। रु०। क०। ल०। ना०। न०। मा०। उ०। पू०। नी०। क०। रु०। ल०। रु०। व०। ल०। व०।
न०। ल०। ना०। म०। ल०। ॥ वे०। न०। च०। क०। वा०। न०। रु०। मा०। ॥ दी०। व०। न०। क०। दे०। न०। गु०। ॥ द०। स०। ॥ गु०। ल०। ना०। ग०। द्या०। ॥ ये०। व०। द्या०। ना०। नि०। दी०। प०। न०। ॥ द०। ह०। ना०। दी०। प०। न०। की०। ॥ ८॥ स०। रु०। ॥ द्या०। ना०। वि०। दा०। न०। ल०। ॥ दा०। ष०। र्क०। ना०। व०। स०। वा०। नि०। ल०। य०
द०। र्क०। वि०। षा०। प०। ह०। ॥ ना०। द०। र्क०। वा०। न०। ल०। रु०। ॥ मा०। न०। स०। म०। धू०। ल०। य०। मा०। वा०। न०। ॥ स०। म०। ह०। न०। वा०। र्क०। ना०। ला०। ग०। वा०। न०। ल०। स०। रु०। मा०। ॥ वे०। य०। म०। नि०। क०। न०। र्क०। क०। रु०। ध०। ल०। य०। न०। क०। व०। मा०। दी०। प०। न०। पिरु०। ल०। को०। प०। मो०। दि०
न०। पिरु०। ना०। ग०। न०। ॥ दि०। वा०। क०। ना०। व०। ले०। रु०। ॥ ना०। ग०। ॥ वे०। न०। च०। र्क०। म०। हि०। ॥ स०। र्क०। ॥ दि०। दा०। ष०। वि०। नि०। म०। र्क०। ॥ रु०। ल०। ग०। ग०। ना०। म०। ना०। ॥ उ०। पू०। वा०। वि०। न०। य०। स०। मे०। दा०। नि०। ल०। क०। रु०। प०। ह०। ॥ अ०। न०। ग०। दि०। दा०। ष०। र्क०। म०। धि०। ग०। न०। च०

दाबलमा॥गमदीर्घवागपिरुद्यंमिर्द्यंगुनवसायनमागद्यागुनवसिर्द्यंमाहिर्द्यंवद्विनाशनमा॥कृगंनक्रानिसावर्द्यंकाशस्थसकरापहमा॥चक्रुषंजीवनंस्त्रीर्गनक
पिरुवेनोवनमा॥वर्त्यवागहर्नवर्षा॥पिरुष्यकवन्देधि॥विदाषमनजानकुमकुआगाविष्मधनेमा॥ग्रहप्यर्गोद्विगा॥रुद्यंनवनीर्नवोद्विगमा॥विकाना॥किलहृष्टाद्या
गुनव॥कृष्णहर्नव॥ग्रहलीगव॥रुष्यपा॥गंसावगुलान्गु॥विदाषमननक॥मृदुगुलहमादि॥विपाकुमधुर्नसपि॥वागपिरुकरोपहमागुर्गम॥अवक्र
ष्यसंस्का॥नारु॥विदाषजिगा॥अगसावगदानाद॥मे॥कृद्यंमनवर्द्यंमा॥अजादीना॥सूर्यपि॥विद्यासू॥कीवस॥गुल॥करोवागहर्नमूर्ग॥सर्वकमिविषापहमा॥पो॥२७४
खादेनकृष्ण॥१॥गम॥गुल॥पुम॥हर्न॥वाग॥पुष्य॥हर्न॥वर्त्य॥के॥ल॥के॥ध॥मि॥लो॥ह॥व॥मा॥सा॥वर्त्य॥क॥मि॥या॥लु॥द्यं॥क॥रु॥भ॥दा॥नि॥ला॥प॥ह॥॥दो॥म॥ने॥ल॥म॥व॥द्व॥ष्य॥पिरु॥रु॥दा॥गे॥ना॥ने
मा॥अ॥क॥क॥रु॥पिरु॥द्यं॥क॥ध॥क॥॥म॥क॥न॥य॥ल॥मा॥वि॥दा॥ष॥म॥धु॥प॥क॥वा॥ग॥ल॥प॥को॥ह॥न॥मा॥ह॥का॥ध॥म॥क॥मि॥क॥दि॥मा॥ह॥रु॥प॥क॥रु॥प॥ह॥॥वृ॥क॥वा॥न॥क॥पिरु॥द्या॥व॥न्या
दे॥का॥१॥क॥रु॥प॥दा॥१॥रु॥लि॥न॥पिरु॥ले॥नी॥व॥स॥मा॥वा॥सा॥लि॥का॥ल॥य॥॥ख॥लु॥व॥ष्य॥न॥स॥मि॥रु॥सा॥द॥रु॥क॥न॥क॥वा॥ग॥जि॥गा॥ना॥नि॥पिरु॥ह॥नो॥व॥ष्या॥वा॥ग॥द्य॥१॥क॥रु॥क॥रु॥३॥॥स॥पिरु॥द्य॥ष्य

नपथ॥१॥पु॥ना॥रु॥स॥क॥पु॥सा॥द॥न॥१॥न॥क॥पिरु॥ह॥वा॥द्व॥ष्या॥स॥म॥हा॥गु॥उ॥१॥क॥ना॥॥सर्व॥पिरु॥क॥न॥म॥द्य॥म॥क॥ला॥न॥क॥रु॥वा॥ग॥जि॥गा॥पा॥च॥ना॥दी॥प॥ना॥पर॥थ॥म॥उ॥रु॥या॥द्व॥रु॥न॥लु॥ना॥॥वा॥ग
न॥ला॥म॥नी॥ल॥य॥॥प॥या॥व॥रु॥वि॥रु॥म॥ध॥नी॥म॥न॥का॥दा॥उ॥म॥द्य॥वा॥स॥गु॥ग॥म॥ल॥पि॥पि॥ली॥॥ह॥नी॥रु॥म॥क॥ग॥प॥या॥का॥श॥स्थ॥स॥प॥वा॥हि॥का॥१॥पा॥य॥स॥१॥क॥रु॥व॥रु॥न्य॥१॥रु॥ना॥वी॥न॥ना॥नि
नी॥॥सु॥धी॥न॥१॥पु॥रु॥१॥मि॥ने॥१॥सु॥खा॥धु॥ल॥य॥वा॥न॥१॥क॥न॥य॥मा॥ष॥रु॥ल॥म॥ह॥१॥सा॥धि॥नो॥व॥ह॥रु॥म॥गु॥न॥१॥॥ष॥द॥रु॥ग॥न॥ल॥य॥१॥सु॥ग॥१॥सु॥सा॥धि॥न॥१॥मि॥ने॥१॥पि॥नि॥१॥पि॥नि॥सा॥क॥हि॥न
मि॥हो॥दे॥स॥रु॥न॥मा॥॥दा॥उ॥म॥म॥ने॥के॥रु॥ष्या॥व॥रु॥क॥ला॥न॥पिरु॥हा॥स्थ॥स॥का॥श॥प॥नि॥अ॥य॥क॥रु॥ध्या॥म॥ल॥के॥१॥क॥न॥१॥य॥व॥को॥क॥ल॥क॥ना॥॥यु॥रु॥१॥क॥रु॥नि॥ला॥प॥ह॥१॥म॥का॥म॥ने॥क॥रु॥य॥
ही॥॥पु॥ष्य॥पिरु॥नि॥ला॥प॥ह॥॥मे॥गु॥उ॥ध॥वि॥वा॥न॥के॥१॥क॥वो॥न॥क॥वा॥ग॥ला॥१॥य॥न॥पु॥ना॥मि॥का॥नी॥सा॥॥व॥ष्या॥गु॥वा॥व॥१॥क॥नी॥॥व॥ह॥१॥सा॥मि॥षा॥रु॥१॥य॥रु॥का॥गु॥न॥व॥१॥सु॥ना॥१॥ने॥ल
के॥ना॥१॥य॥रु॥दि॥या॥॥सा॥य॥मि॥ना॥१॥य॥रु॥१॥ना॥१॥अ॥रु॥यु॥क॥म॥लु॥का॥१॥प॥थ॥१॥१॥न॥ला॥गु॥न॥वो॥म॥१॥अ॥न॥पा॥न॥१॥पा॥नी॥रु॥१॥म॥ह॥ष्या॥दि॥ना॥१॥न॥मा॥॥अ॥न॥पा॥ना॥दि॥न॥का॥रु॥न॥सा॥दि॥वा
डा॥ग॥व॥रु॥१॥अ॥नो॥या॥मि॥ने॥क॥रु॥॥वि॥षा॥के॥॥वि॥व॥रु॥१॥॥ग॥म॥स॥रु॥न॥सा॥न॥॥रु॥॥सा॥ना॥न॥मा॥य॥था॥द॥धि॥अ॥मा॥न॥ने॥नी॥ला॥को॥श॥नि॥गु॥क॥सा॥पि॥का॥१॥अ॥या॥॥वा॥दि

रुद्रनाथहशवसायांविद्यमानायांमाभयंजीविनस्यवा॥नकुपिरुद्रवीकाणीकिमर्थआरुवृषकासूक्ष्मकामपथकाथःसःसर्कनः॥कोडाद्यःकोननस्यसुन
कोपिरुनिवर्तलेशवासानसःखलुमधुनसःपीगाथनकजिगा॥नकुवीवदवीजनुपियालासाद्धनधवशपीगाकात्रलमधुद्योःपृथःमलिनवात्रलमधु॥समूलरुल
पगयाःनिर्गुःआसुनस्यगमा॥निर्गुपीलोदयकीरल॥निर्गुधिरुनिदववग॥हवीनकीकलभुलीमविर्गुसंयुगीकासाधामादकपाकःहप्राप्रोचकनो
गकशाकलकात्रीगुजुवीर्यापथकविगनपलादस॥यल्लसिद्धाठगोदानकामनेद्विदीपनः॥हप्राधारीसिगाली॥हिकाधामधुसंयुगाहिकाधामापिवहागी २९६
सविश्वामुषुवात्रिभा॥नलाकेसुनरुंदीवादेवादिर्वधनथनखे॥पथ्यापियलिर्गुकीर्गुसंयुकीर्गुनोगत्रलवा॥विठ्ठलपिरुलाविष्टवृक्षद्विष्टयनधुआमुज
मृकषायमापिवमादिकसंयुनमा॥कृदिसर्वोपुनदनिहृष्टाः॥वापकषेनिहिरुलाजुमसूकोदुन॥पयसामधुनायिवा॥पेष्टगवद्यनपातादपसावग्रहादिनगा
कृष्णलुकनसाडाद्यसज्जकीकैगदयेकगु॥वाक्कीवत्सववाकृष्ट॥नखपूष्पीहित्रववापूगलसंयुमनाद॥ग्रहापसावनद्युगमा॥अथगन्धकषाथवकल्लकीनवगुर्गु

लाद्यर्गपकनुगनय्यवृष्ट्यर्मासायपूगकगु॥लीद्वामुलीनिकाचूर्णमधुसर्पिःसमन्वितमाद्विन्नकार्थपिवनहनि॥वाग्नकसूदुसुनमा॥सुगुताःपञ्चपथ्याश्वकृष्टवागार्थसादृ
नाशगुपूवीसूत्रसंकल्लचूर्णमोकोथमववा॥वाग्नकाककैकालागुपूवीकोथकल्लकैग॥द्यर्गसूदुःखस्यादागाः॥लिनकसूजिगा॥पिरुलागुगुलवीन॥नकुमूत्रोम
गादककशगुत्रसूविनाभय॥गमूर्गलवगुगुलुशा॥गुलीगमद्रुनककाथः॥ममवोनाहिरुलनूगादगमूलो॥नेत्रलु॥नाम्नानोगत्रदात्रिहा॥काथनवगुनेलन॥सामंरु
न्यनिलगुत्रमोवलापूनर्गवेनर्गवृदगीद्वयगमद्रुनेशा॥सहिरुलवर्गपीर्गवगमूलविमदेनमा॥पिरुलालिमयर्गकदकावग्वरधेः॥पावयनमधुसंमिर्गदा
हृष्टलोपभनेथ॥पिरुलाकःसयसर्क॥पत्रिभमाहिरुनमधु॥गमसूगुद्रमलुर्ग॥पिरुलाचूर्णसंयुगमा॥तामहमधुसर्पिः॥लीहनिहिरुदोषजुमा॥हृष्टकृष्टहवीन
क्री॥द्विचगुःपञ्चशिकोशगुठिकागुठकुल्याका॥विद्धिवधगदापहा॥हवीनेकीयवकात्रे॥पियलीहिरुगानथा॥द्यर्गसूदुमिदम्यम॥मूदावर्हविनाशनमा॥हृष्टवी
नकीअमाः॥नृहीकीत्रलराविगाशवटिकामूगपीगासा॥गुष्टाअलहृदिका॥शूषनपिरुलाधन्य॥विरुद्रयनिगुकेशकल्लकीवर्गद्यर्गसिद्धसंस्कारगानगुमेनूग॥मूल

नागवना नीलसुका चंदयारि न सोवर्चल गार्द्धा. जिवानश्च दं हं न॥ कलापाषा हा रुये ला. गिला ऊरु च वूर्क मा गल लादि मुलादि पि. मूक कु जिजीवि॥
 अमृता नागवर्धनी. नाजिगु अगि कलकान। पयि वं दाना मा हं ॥ स० ली मू गे कु वान॥ मिगु लो यव दान ॥ सर्व कु निवात्र लेश निदिग्धे कात्र सावा पि स० द० रुकुना
 शनशा लव ल गिरु ला कल्ले मू गद्या न हं यून मा मू हं विवक्ष कर्पू न. वूर्क लि. इय वे श य॥ को थ गि गू मू ला क० द० पू भा विपा न न० सर्व भ हं थ ध्या. वस० द० रुकुना
 रुकु ना शनशा लव ल गिरु ला कल्ले मू गद्या न हं यून मा ल मि हं मधू स पि य॥ मूल ह नि वि दा म ज मा॥ रु दे न कृष्ण ह नी न क्री. दिव रु षा अ हा गिका ॥ गु ठिका गु १९॥
 उतु ल्या सा. विद्वि व भ गदा प हा शा रु नी न की यव दान. पि यली गिरु ना गथा. यून मू मि द पय. मू दा व हं विना शने मा॥ रु दे द नी न की ध्या मा ॥ मू ही द नी ल हा विना ॥ व दि
 का मू गु पी ना सा ॥ शृङ्गा धन हं रु दिका शा शृ ष ल गिरु ला धाना. का थ ० द० ल मा रु हा अ स प श्र वा वा य श्र. या या मी श्रि क ना नि वा॥ लो ल्या मि कू न य वि य कू. क म ल मि य
 व द्ये न॥ यव श्र मा क हा जी ह्या गू लो ल्या रु नी धू वा पि प शा ॥ उ म न स म लु वा पि व न० रु क न न० रु व न॥ स व द्य की क न था षा. हि रु सो व र्च ल म नो ॥ म धू ना स रु ली ना. भा या द्या ०

सर्व दीप ना ॥ वरु ० ल ज ल मू ग. दि गु ल यि ग का प ल॥ कल्ले सि द्धं य न प र्क स द्दी वं ० नी पि व ० क म र द्वा द श हा नि. द श पे य लि क न्दि न॥ व द्ये थ न प य सा सार्द्ध. ग रे
 वा प ल य त्प न ॥ की न य रि क हा जी ह्या गू. ए व रू कू स ह म की॥ रु ह ल स र्ज मा गु ल्फ. प्री हा द न वि ना न मा यून न र्वा का थ क ल्ले. सि द्धं भा व हं य न म॥ प र मू ग ल स म ध्या.
 पि य ली मी प या नि ग मा गु ठ न वा रु य गु ल्या. वि श्व वा श्र थ ना गि ल म॥ नि म न लु ज पी ला. व ला सि द्धं प था दि न मा श्र धान मू ला प वि ना. म नु द र्दि ज य न न ॥ रु रु
 वू क गे ल न क ल्ले ० य थ म मू रु व श द्धे कू म भ व र्म य कू. रु द्धि ना ग ह न ० प न ॥ नि र्गु ली मू ल न स न. ग ल माला वि न श्र नि. मू ही ग ठि का ल हा. ना श य वा र्द दानि वा॥ रु रु
 कै ल प ला श्र म॥ ग ल ग लु ल प न श धू कू न र लु नि र्गु ली. व र्वा श्र गि गू स र्ध य ॥ य ल य ० शी प र्द ह नि. वि ना क म नि द य ल मा श्र हा श्र न क सि न्धु क. हि रु वि व
 धि ना शन म॥ श व र्म य म वि द्या ना. स्या स र्द व ल प ना प ली. नि म प ग स्या वा ल प श्र म प र्द व कू. श्र ध न ॥ गिरु ला र वि दि ना दा वी न्य. ग्रा ध व ल श्र ध ना श्र स द्य ० रु रु
 ल व द्य ० मू ल प नि ध व थ ॥ य र्मी म धू क य र्क न. कि श्रि दू र्ध न स पि य॥ व द्धा ग ल नु व ल द्धे थ. य न द्दी न स म नि ग न॥ नि र्ग कि य प य ० श्रि न. पि रु व क्री ष ना नि

नी। का। थ। वं। श। त्र। ग। त्र। उ। पृ। दं। द्वा। म। हि। दा। रु। ग॥ सहि। दु॥ ४॥ से। न्ध। व॥ ४॥ पी। न॥ ४॥ का। ४॥ रुं। रुं। का। व। थ। द। रु। का। य। व। का। ल। कृ। ल। कृ। नां। नि॥ ४॥ से। न्ध। न। व। स। न। वा॥ रु॥ ४॥ नी। न्ध। न्ध। य। वा। गृ। म्वा। पि। व। न्ध। से। न्ध।
 व। सं। य। ना। मा। क। न्ध। वि। द्वा। नि। गुं। ली। न्ध। सा। ह। न्ध। द्वा। रुं। सी। ना॥ वि। रुं। ला। वृं। स्युं। को। गुं। न्ध। लृं। वृं। ट। की। रुं। ग॥ नि। यं। के। ना। वि। व। न्ध। द्वा। व। न्ध। म्ध। न। व। प। ल। शा। द्वा। व। य। व। स। सिं। द्वा। मो। न्ध।
 लं। के। म्ध। लं। के। न। वा। दा। वी। व। वं। क। लं। के। न। य। ध। न्ध। व। न्ध। प। ल। मा॥ ॥ ४॥ या। दि। म। हा। य। ना। लं। म्ध। न्ध। द्वा। दि। वि। कि। ल्प॥ ॥ १॥ ग॥ ॥ ॥ ध। न्ध। न। पि। त्र। वा। वा॥ ना। ली। व। ल। दि। वा। गा। लं। वि॥ ॥ १॥
 किं। ल्प॥ ॥ १॥ सुं। ग॥ ना। उ। ग॥ लं। स। म्ध। द। नां। व। ल। व। ना। किं। यी॥ गुं। न्ध। ले। वि। रुं। लां। वा। धे॥ ४॥ स। म्ध। पि। वा। रुं। या। जिं। न्ध। नी। ली। द्वा। वृं। लं। लं। रुं। म्ध। न्ध। व। य। थ। ग॥ य। न्ध। निं। न्ध। ली। व। स। न्ध। ॥ १॥
 नं। नी। ली। द्वा। वृं। लं। प। ह। मा। हिं। न्ध। पा। मा। य। वी। नां। न्ध। पा। नां। य। न्ध। न। लां। व। ले॥ ४॥ वि। रुं। लां। पू। न्ध। रुं। नां। विं। पं। ४॥ क। य। थ। जिं। नां। गुं। टिका॥ ४॥ रुं। गुं। मां। धा। रुं। म्ध। न्ध। व। व। नां। दिं। नां। जिं। वा॥
 द्वा। धे॥ ४॥ म्ध। विं। न्ध। विं। न्ध। पं। दं। क। पा। कां। व। ४॥ य। य। न्ध। नं। जिं। लुं। द्वा। य। क। नां। हिं। से॥ ४॥ पं। ट। लं। लिं। म्ध। विं। रुं। लां। गुं। लुं। वीं। कां। थ। मां। पिं। वं। स। गुं। न्ध। लं। स। व। दिं। वं। म्ध। पं। दं। लं। विं। न्ध। य। निं॥
 दं। रुं। लं। ट। हिं। विं। रुं। लां। सां। म्ध। सीं। म्ध। स्युं। नां। मां। उं। पं। दं। लं। स। लं। पां। यं। स। द्वां। नां। य। न्ध। वं। लं। मां। विं। रुं। लां। निं। म्ध। लं। लिं। म्ध। कं। न्ध। ख। दिं। नां। दिं। हिं। क। लं। ४॥ कां। थे॥ ४॥ कं। पं। र्कं। म्ध। पं। दं। ४॥ रुं।

१९८

पत्रमा॥ अ॥ दो॥ रुं। न्ध। विं। दिं। वां। रुं। म्ध। वं। थ। कीं। न्ध। लां। म्ध। नां। पं। के। नां। लं। पं। न्ध। कार्यं। वं। न्ध। न्ध। कृं। म्ध। निं। म्ध। मीं। स। मां। स। न्ध। स। मां। र्कं। ४॥ द्वां। र्कं। य। स। तीं। न्ध। रुं। वृं। लं। वां। थं। पं। न्ध। द्वां। यं। रुं। म्ध। य। जां। न्ध। ॥
 न्ध। नां। म्ध। नां। यां। रुं। सिं। नां। के। लं। से। म्ध। रुं। मां। विं। न्ध। हिं। न्ध। न्ध। रुं। सीं। नां। स। न्ध। न्ध। म्ध। विं। नां। वं। ॥ अ॥ रुं। दिं। कं। रुं। लां। यां। वां। स। वं। र्कं। हिं। ४॥ सीं। रुं। न्ध। रुं। लां। गुं। न्ध। लं। नां। यां। ॥ रुं। म्ध। स। विं। पं।
 सां। धं। क॥ स। वं। कृं। वृं। वं। मं। न्ध। वं। न्ध। न्ध। कृं। मों। द्वां। लं। मां। वं। वां। वां। स। पं। ट। लां। नां। निं। म्ध। स्युं। रुं। लिं। नीं। द्वां। वं। ४॥ क। वां। थ। म्ध। नां। पीं। नां। वां। न्ध। न्ध। दे। नां। निं। म्ध। विं। वं। न्ध। यं। क। र्कं। विं। रुं। द्वां। नीं। रुं। लं।
 लिं। के॥ मं। न्ध। लिं। लां। म्ध। विं। वां। निं। न्ध। लं। पं। र्कं। पं। थ। हं। वं। स। वं। कृं। नां। लिं। लां। यं। जिं। वां। पं। रुं। न्ध। न्ध। नां। कं। न्ध। न्ध। न्ध। नां। कं। रुं। म्ध। म्ध। लं। पं। लं। पं। न्ध। कं। न्ध। वीं। वां। द्वां। न्ध। न्ध। नीं। लां। कृं। स्युं। वं। कृं। रुं।
 नां। हं। विं। दां। म्ध। यें। न्ध। नां। रुं। गुं। न्ध। न्ध। रुं। रुं। थ। ॥ अ॥ वं। म्ध। क॥ कं। न्ध। लं। पं। कृं। रुं। वं। पं। न्ध। मं। न्ध। जिं। लां। विं। रुं। नां। निं। वां। कृं। वीं। लं। पां। रुं। थ। कं। न्ध। म्ध। नां। यं। लं। पं। कृं। रुं। नां। कं।
 वे॥ विं। रुं। रुं। रुं। गं। जीं। कृं। रुं। निं। म्ध। सिं। न्ध। लं। यं। ४॥ म्ध। नां। म्ध। पिं। रुं। लं। पं। यं। दं। द्वां। कृं। विं। नां। न्ध। ४॥ पं। यं। वां। स। वं। वीं। नां। निं। म्ध। निं। म्ध। न्ध। स। स। हां। सीं। वीं। पिं। रुं। दं। म्ध। मं। न्ध। द्वां। रुं। न्ध।
 न्ध। म्ध। अ॥ वं। म्ध। यं। पं। नां। लां। हां। वं। नां। लं। न्ध। यं। दं। द्वां। कीं। टं। म्ध। नां। रुं। निं। म्ध। नां। म्ध। वं। ॥ उं। पं। पीं। नां। वां। द्वां। वीं। निं। कृं। रुं। नीं। रुं। नां। निं। म्ध। निं। लां। विं। रुं। लां। द्वां। वां। थं। रुं। लां। कं।

सूमेवैतमानविपक्रमसुखाभाया निगधविताशनमासकाश्रिकजवापूर्यपूर्यश्रुतिभगीदलमादुर्वापिषुसंपाया वनिगानार्कवर्लहजाधग्याऊनरुयाचार्कगायपीनंज
हनेशसदुखलक्षणाचोनामस्याद्यापूर्यदरुगोदुग्धेस्योदोदकंवाभूमयगन्धवपूर्यदावभूपूर्यलहंपीलोद्युर्ननयोयकसुनमाकृष्णकाशभरदकालीमूलैर्गोदुनकस्य
वासीर्नदुग्धसिनायूकं गहिष्णुलनूपनमापाभलोदुलिर्मिहास्यमयूकद्वेष्टयथकानाहिवकिहमलेपागसुखनानीयसुयनोसुगायादुकिवावसिष्णुलेमकुन्धसंकिर्न
यवक्रान्तिविरुग्मसुनाप्लादकनवा॥दलमूलीदुर्गकाथेसाष्टेसातिरुजापहशाभलितुलेवूर्लकुसदुग्धेदुग्धरुक्वेगाविदानीकन्यसुनसंमूलैकप्यासुजनथाध २०१
पीरुनविष्णुद्वर्थमूकयूषनसाशनी॥कृष्णवचार्हयावाक्कीमधुर्वक्षोदुसर्पिषावर्णयूकाकिजननलहवालस्यदापथ॥सुन्याहावेपयश्रुगं गव्यवर्गगुलीपिक्व
सुदननार्हिष्णुहाकासुदास्याग्निकया॥लहासुकिविषास्यस्यानमिनासदुवापिक्वामूसुलीविषावालकूटजानिसावनूगाशोषसधुमकुलसंशीकाकृद्निवावर्लीकृष्ण
न्ययवसिद्धार्थनिष्मदुर्वावकृष्णिग॥सहामुर्मुक्तिकादिद्यकोथसार्नग्राहपहमासफकृद्मयनिष्मवन्दनेनानुलेपनमागराकुवीजनूकाकुववालोहादिधनलमूडे

नीटपवेनवेयायनमशङ्कंहांहांशमकुलशमनिर्वालानांमार्कनादलिदानगशङ्कंकीवालग्रहावलिष्टकीनष्टकीनवालमधुगमूश्रुतसाहा॥गल्लादिशीनीषस्यमूलपीनवि
वापहीर्नूल्लादिष्ववर्षाहृष्टुकायासूर्यदंनमू॥दक्षजकलीयेष्टहधूमनिष्मपेहापानकीदुनिष्मकस्यसिन्धुकस्यविश्वानकभाश्रुद्विष्टमूलनिष्कोथेसाष्टपी
गाविश्वानकशेषकुलाद्याधिविष्टसिहृषर्जनदुसायन॥सिन्धुकलेर्कवागुलीकलामधुगुष्टकमाश्रवर्षादिषुहयाश्रयात्रेसायनगुलेखिभायवनोर्कहयालीकोपाकु
कंविहीनकं।कुक्रामधुश्रुधगीर्नवर्षकृष्णपीनोश्वगन्धयसाद्युर्ननाश्रवर्षागनूगमलुकयर्णसुनसोविदार्कश्वदगादुवाशातिलधगीरुदुनाजजम्बू
वर्षगीरुवर्गुनिकदुगिरुलावकिहिगुलीगनावत्री॥विठ्ठलाहवूर्लश्रुमधुश्रुश्वेवनागनूगिदुलावकल्लुलीगुलीवीषगनावत्री॥विठ्ठलरुदुनाजादिहाविर्गस
वर्षागनूगवूर्लविदार्कमधुश्रुनीदादगमियावर्षगावर्षगावत्रीगुर्कदीर्घदगगुलापथगांर्कवापिपलीक्षोदुयूकंवाजीविकविदुशायनिमधुवपीउश्वनस्यपवे
पनंनथा।निवाविवावर्नथनिनसुकमवपश्रमा॥मोसैदिसंरथेमोयाद्येकुमानूषवृत्तवसुथाश्रुनिमवामधुक्षीनेविठ्ठलपविश्वयग॥सुीयूकागिगिनददसकनदिवा

सुधना हज्जद्वय सुसुकादीन, शत्रुदीन्याश्च नमयः॥ पञ्च निष्कलया मुक्ताः सत्रा मू८ कथितमयः शलिमागसी कृमानां। गियुगर्षपथासुथ॥ ३॥ निष्कली मूलकानां नैलानि
विचनक्ति हि। समिकुटपुमहांश्च, वागल्लस्य शिवा नू८॥ दातिमामलकाकोष, कनमदपियालकभाउमी र्वनागवद्भू॥ आसागककपित्त कभा॥ पिरुलो नानिलयानि,
कहाल्लेन केनालिवा। रुलिजी मूकक्या, केउजाकनवेधनभा॥ धमागवश्चसंयाअ॥ सुवथवमनलीमी। पूर्वोक्तवमनाथेन, दमनेन्यवावया॥ मदेकाकुश्चपिरुन, कुवावा
नकहोश्यातामभ्रम॥ समदाष॥ स्या, निवृत्तपिरु विनायनेभा॥ गकैनामधूसंयुक्तं, सैश्वर्यनागवर्णिदृताहनीककीविठङ्गा नि, एममूकविचनभा॥ एवमुक्तं लिलिहलाका २०२
थश्चादिगुलफेथावाताजुलषुदाधेय, हाजियिल्लुवासथेना॥ वंभदिनं कृवीर, यउरुदादभ्रमुलभाकेके, धमसमस्तिर्द, वस्तिरुलानशायिने॥ निरुहदानेपिविधिन
यभवमदीविन॥ अहं विषटपलेमागल यूमध्रुमकमाग॥ पाश्चादध्रुकक, दिवउरुगभ्रुगेदेना॥ गनावयोमगारुह, सिधुवागादिहाविना॥ ॥००॥ यादिम
हापुनालागमरू कुवागवि किरा॥ २०८॥ ॥धननविनेवावा॥ दयालिमधूनादीनि, वश्चवागहनाल्लहमागलिमूकिके, गधूम, कीर्वचुनसामधू॥ मज्जा॥ ॥३॥ ट

कयव, कर्षवीनूकगभ्रुनमागसुानीयोक्त्वंवीर्ज, डाकारवर्नकलला॥ नालिकत्रयामिगुफा, विदानीचपियालकं। मधूकंगालकूषालं मुखीयं मधूनागल॥ मूकदा
हपुमन॥ षडिन्द्रियपुसादेन॥ समिकुटकहृदया, नको, यथे सिधे विन॥ अमसकाभस्यमाधूर्य, सूत्रशगावेदानिवा, गलगलुणीयदानि, गुगलं पादिकात्रय॥ दाति
मामलकामुश्च कपित्त कनमदको। माउल्लुमाचकश्च, वदनीगिल्लिलीरुलभा॥ दधिरुक्का, अकश्च, नकूचश्च, सुर्वगर्भ॥ अश्चादेकगामको, उत्रल॥ पाचनीवस॥ कृदनावा
नकहृदया, विदाहीवानलामन॥ अश्चाह्यथेभ्रमान॥ कुर्याद्वेदनयेषलेमी। गत्रीवस्यचलोथिल्य, मूत्र॥ कल॥ अहृदहृ॥ किन्नरिन्नवलदीनिपावययुगिहोविन॥ लवण
दियवेक्कात्रसर्जिकादिशलावल॥ लभधन॥ पाचन॥ कृदी, विरुल्लस्यसर्पल्लदिहृगु। मार्गवाधीमार्गवदू॥ एकश्चपविमविन॥ गभ्रुकलूकाथल्लध, वेवल्जुनयदुस॥
नकवारपिरुनकं, पूरुं न्रियेनूजादिकभा॥ शोषणिगुमूलकश्च, दवदानूचकृकभा॥ लसुनवल्सजहृलं, मूलागुगुल्लुली, कदकोदीयन॥ लभधी, कृकलूकहृनक
॥॥ ल्यालस्यहमिहृन॥ एकभयाविनाधन॥ एकायथेभ्रमाना, रुमदाहादिहृद्वे॥ रुमाल॥ कवीनालि, रुविदुन्यवासेथास्त्रादूकलूकवेगलि, वृहनीद्वयगहिनी॥

गुरुवीरिहवर्णीव विदुमलुकपक्षिपिकावन्लकवार्लक कववीनकवासकाशावाहिलीशरूप्यीच कर्कोटावेरुयनिकाजानीवनलकलिम्भा. ३॥ निष्पानीषनर्लवा॥ निष्का
वसन्तदपः ४॥ दानदीपनेसुथा. १॥ धनद्विष्टसुधाया. मुक्ताकलुठिकोदिजि॥ विमृष्टकदसंभय. अर्थसंगमविशमन्यासुमृष्टेपवलि. निवः ४॥ लवणदिह
न॥ विदुलागलकीजम्. आमुमनवटादिकमानिन्दैकवदुल्लभलपालेसुमृष्टलिका॥ कस्ययाग्रहकोवापी. सुमृष्टनः ४॥ दक्षमषल४॥ नको. अर्थभयमानो. ददयादन्पी
उकृत् ॥ सुख. १॥ मरुजवाधान. मन्यासुमृष्टादिकोवकेश. विदाकृष्टलवलभषण्डीवलद्वयी॥ कर्कवीनल्यपोद्यादिपूनलुवागनावनी. आममकोवदुदला. स्वदं २०२
वकुकेनथा॥ अग्निमलुवदुदली. स्वदं २०३ वकुकेनथा. यवकालकलकादि. कर्षणीदणमूलक॥ यथु४ समकोवाकोवदु४ पिरुह. नसुथा. गनावनीविदानीव. कोलकडी
वचन्दनमा॥ दूर्वावट४ पिपलीच. वदनीनलकीनथा. कदलीचायलपद्म. मुदुमनपटालकमा. अथ. १॥ मरुजवाधान. विदागुठकृष्टकी. गपूषीचजानीच. द्यावापृथ्वी
झली॥ सविष्णुलवणमज्जा. निहषुपवर्ननभा. धापीसु. निमधानि. काङ्क्षिर्लगास्यनयन॥ केवलपेलेकेसर्वि. वीकिंलवणनिगमादयवदुकरुवापि. द्यावकावसमायुग॥

यन्निनालीकमिष्ठा. मयामात्रनागिषुनेललायवदाद्यायकुनशमा. ४॥ वदहिष॥ वागानपाथरावसी. द्यायामकीलधनुषा. नूको. केनकृयात्यन्तिवागवतपरथयच॥ नथा
दक्षमहावकु. योनिकमिष्ठा. नूजमा. उरुमस्यपलमा. मिहि. अर्थ. मयमभ॥ जयनस्यपला. ४॥ न. निहका. थो. धनव. जलमूर्ध. दू. नदय. वषके. लु. समान॥ निहपी. कु
ह. द्याया. पिपदुष्का. दकन. शवागानेला. मदीपागि. वज्र. ४॥ नि. मसं. दन॥ नू. दस्य. निहल. कार्य. मकि. नि. मस्य. नू. कलमा. मकको. वदु. द्या. न. नकु. पि. लु. कमे. कु. हि. ४॥ वा. ग. ४॥
मालिवा. न. वा. क. रु. वा. स. द. ४॥ ग. न. न. द. य. द. नि. कु. ल. नू. द. दूर्व. ल. मूर्. कि. न. मा॥ ॥ ४॥ द्या. दि. म. हा. पू. न. ४॥ म. नू. ४॥ सि. द. या. ग. सा. न. ४॥ समा. फ. ४॥ ॥ १॥ ॥ ४॥ ध. न. न. वि. नू. वा. च॥ दू. न.
नेला. दि. व. द्या. मि. ४॥ १॥ सु. ४॥ न. ग. न. ग. न. ग. ४॥ पू. ४॥ व. वा. मा. मा. वा. की. व. द. सु. व. ४॥ ॥ अ. रु. या. व. गु. ४॥ वी. च. अ. ट. नू. ल. व. क. वा. क. वी. ॥ न. नू. द. सु. म. को. ग. ॥ य. न. पु. ल. वि. पा. व. य. ॥ क. ल.
कार्य. न. सु. पु. ल. की. न. पु. ल. सु. म. चि. न. मा. ॥ न. द्या. की. य. न. न. मा. ॥ अ. नि. म. ध. क. र. य. न. मा॥ वि. द. ला. वि. न. क. व. ला. नि. गु. ली. लि. म. वा. स. का. ४॥ पू. न. न. वा. गु. ४॥ वी. च. व. द. नी. च. ल. ना. व. नी॥ ॥ १॥
न. दू. न. य. थ. ला. रु. ॥ सर्व. ना. ग. वि. म. द. न. मा. व. मा. ल. न. क. वा. य. ४॥ न. ल. स्या. द्वा. ट. क. प. च. ॥ के. के. म. धू. क. म. ४॥ च. न. न. ल. प. द. क. ४॥ सु. ४॥ ला. पि. य. ली. कृ. ४॥ ल. ला. गु. न. क. स. न. ४॥ ग. न.

मजीननीयेथकीवाचकमहायुगमानुनमृदग्निनापक्वं स्थापयिष्यामि ॥ सर्वव्यापिकावास्तु सर्वव्यापकवास्तु यानि लभन्त पुण्यमर्थः दत्तास्तु वाजवल्गुहमाणावावनीनस्पृहं
 कीवपुष्पं गन्धेववागन्धपूष्यान्धेवदान् समारोहेलंयकमला ॥ वन्दनंरगलं कुर्यं मालावाणु मनीनेथा ॥ १८॥ कल्कसंभेष्टकल्के केलपुष्पं विपाचय ॥ कुर्यात्तमनेपद्मनां वधिवशेन
 कुर्यात्तमनां वायुनाहमगन्धालं यवसीदतिमिथुने ॥ जवाजुर्जवमगन्धालं बोधमानसुखेभमखिनामा त्वमगन्धालं पियेवागन्धालं यो यो गन्धालं ॥ सवस्तिनो जयया ॥ १९॥ एव स्यादसा
 द्भकशनावायमिदमेलं विष्णुनाकं नृगर्भेनमा ॥ एथकुर्येत्तं द्युर्न कुर्यात् समस्तैर्विषये ॥ एथकोणगावयास्तु पूयावा विष्णुकेवाचकस्तन ॥ निगुष्ठावापुसोवी ॥ कलकायि ॥ २०॥
 सादिहिषावर्षावा ललायावापि यासकेनरुल्लिखे ॥ वटिकामादकावापि चूर्णं ॥ स्यात्तु सर्वव्यापकं ॥ द्युर्न नमधुनावापि ॥ अदि ॥ खलु गुणदिहिषालवले ॥ कटुकैर्युक्तं यथा
 हे ॥ भगवन् ॥ विष्णुकाक्का विरुद्यादा नयूहयमात्रकमा सुधयवागन्धालिका सुकपलं सुवर्जिका ॥ २१॥ निष्पत्तिश्चैव सैव ह्येते लक्ष्मीवा विपाचयन् ॥ २२॥ निस्पन्दनं केलं रुडीद
 द्या द्भगवन् ॥ २३॥ भधनं ॥ भधनं ॥ २४॥ सर्ववर्णं कर्तव्यमा विष्णुकाद्यमहागेलं सर्वव्यापकं पुष्टं ॥ २५॥ अजमाद ॥ ससिन्दूरं ॥ २६॥ विगालनिष्पद्यमाकावद्ययैरुनयुगमादुकेषवना

द्वयं ॥ २७॥ द्यावावृथपामार्गं कुदले ॥ कन्दले ॥ समे ॥ २८॥ निहि ॥ सर्वपङ्क्तं गेलं मजामुष्टं यथाजितमा ॥ मृदग्निनापयिष्यामि ॥ कर्कशावलीसंयुगमा ॥ अजमादाविकर्णं गेलं गलुमालां व्यापाहनि
 ॥ विदग्धपयं पक्वं पक्वं चैव विष्णुधयेना वापलं मृदु होवधं ॥ २९॥ नानेनकावयं ॥ अजमादादिकं गेलं महावीर्यं ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ द्यादिमहायुगागन्धालं गेलं लादिकल्प ॥
 समाप ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ द्यावा ॥ ३४॥ वधनं ॥ विविष्णु ॥ ३५॥ गदीनवाचहा ॥ ३६॥ पुनहेनायह ॥ ३७॥ नागयागन्धालं ॥ ३८॥ गेदना ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ विरुवाच ॥ ४१॥ सर्वद्वयं ॥ ४२॥ पुथर्म ॥ ४३॥ कार्य ॥ ४४॥ कर्तव्य ॥ ४५॥
 कथिनादकपा नश्च नथनिर्वागमेवनमा ॥ अग्निसेवा द्वावा ॥ ४६॥ नागमायाकि हो ॥ ४७॥ वागन्धालं ॥ ४८॥ नद्वयं ॥ ४९॥ का ॥ ५०॥ गु ॥ ५१॥ यामुक्तं ॥ ५२॥ कनवा ॥ ५३॥ नाननयेवचकीर्णं ॥ ५४॥ विरुद्वयं ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥
 ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥
 ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥ १०१॥ १०२॥ १०३॥ १०४॥ १०५॥ १०६॥ १०७॥ १०८॥ १०९॥ ११०॥ १११॥ ११२॥ ११३॥ ११४॥ ११५॥ ११६॥ ११७॥ ११८॥ ११९॥ १२०॥
 १२१॥ १२२॥ १२३॥ १२४॥ १२५॥ १२६॥ १२७॥ १२८॥ १२९॥ १३०॥ १३१॥ १३२॥ १३३॥ १३४॥ १३५॥ १३६॥ १३७॥ १३८॥ १३९॥ १४०॥ १४१॥ १४२॥ १४३॥ १४४॥ १४५॥ १४६॥ १४७॥ १४८॥ १४९॥ १५०॥
 १५१॥ १५२॥ १५३॥ १५४॥ १५५॥ १५६॥ १५७॥ १५८॥ १५९॥ १६०॥ १६१॥ १६२॥ १६३॥ १६४॥ १६५॥ १६६॥ १६७॥ १६८॥ १६९॥ १७०॥ १७१॥ १७२॥ १७३॥ १७४॥ १७५॥ १७६॥ १७७॥ १७८॥ १७९॥ १८०॥
 १८१॥ १८२॥ १८३॥ १८४॥ १८५॥ १८६॥ १८७॥ १८८॥ १८९॥ १९०॥ १९१॥ १९२॥ १९३॥ १९४॥ १९५॥ १९६॥ १९७॥ १९८॥ १९९॥ २००॥

मलम्युष्टीचर्वलनायथा॥ मातुलुङ्गदलान्धलाज्जसीमधुवपियली। जागीपुनमथेषा॥ चूर्णलीरुंनथकनमा॥ एहालिकाजटायाध्ववर्चलंगलुणिनूनाशमशितान
क कषो न्नाथकृष्णजिह्वाका॥ नमःशिवीषवजानाहलदलस्याचुर्णुलमाननपकेनरुनंन। नस्यमसकनगनू॥ गलेवागंविनश्चनिनश्चमार्गुलननकेलमकाकज
द्यासूहीनीलीकषायामकचमूलकेभा॥ ननुकार्कदकजंश्वरुमिनाशयनंशिवाद्यसंकर्कटपादनदूग्धमिश्रणसाधितमा॥ ननयस्यङ्गिगादना॥ कथं१कठकटान्निहि
लिफा१ककटपादनकेवलंनथवादिजा॥ शिसफाहंनहिपिसा॥ निस्या१रुलंनहिमज्ञानयाचलुकस्यलेपादकलकनू॥ लोधकृष्णममज्जिहालोहकालीयका१०॥
निवायवगुलभनेश्वयसीमधुसमन्विने॥ वात्रिपिष्टेर्वकुलपशुनी॥ एमहनवकुंरुगुलीवपियलीचूर्णमुचूवीककात्रिका॥ नहिश्चकथिर्नवात्रिपीनयात्रिकवा
निकोवागमूलकयश्चेवाज्ञानकयमथश्चन॥ कनश्चपयटागीनवहनीकदूनाहिली॥ एमद्रवकथिर्नलेहिवात्रिपीनमापहं॥ दाहंपिहंद्रवमथमूक॥ एवद्रवयनयनमध्व
अपियलीचूर्णकथिर्नकीनसंयुगीपीनहं॥ एमकागस्यविषमहनरुदेवाकाथेवधीनासर्वासाकषाद्यस्रभववावथान्नूपनारुयाविशायारुधजदूर्यपीननु

संयुक्तं एमपूवीषवसनवा॥ विषमद्रवनूग्यात्रकाकजंयात्रसक्तथासुष्टुलिकथिर्नकीनमजायाद्रवद्रवगायसीमधुसुक्त॥ सेध्वंरुहीरुलं॥ ननेनस्यपदानात्रनिडा
स्यानूपनूषस्यच॥ मनीषमधुश्वनाना नस्यनिडा रुवाकिवा मूलकुकाकजंयात्रनिडा रुग्याद्रिवल्लिगमा॥ सिद्धेनेलका॥ एकेनगथसुद्रुनसंनवा॥ जीगादकमेमायुक्तं॥ लोपास
नायेनाशनं॥ एमलिगहनदाहंयाजानसकापनूथा॥ एकेसवालसकाश्वष्टुलि१पाषाणरुदकमा॥ एमहा॥ एनंजाद्रवमावतुलकुनभववा॥ एमहा॥ एनस्यमूलकुनने१क
थिर्नवात्रिवा॥ दत्ताहिङ्गुयवद्वानपीनवागविनाशनमापियलीपियलीमूली॥ गथरुल्लानकंशिवा॥ वाथने१कथिर्नपीनवनशूलामावननू॥ अश्वगन्धमूलकास्यासिद्धावलीक
मृलिका॥ एमनयामदेनाद्रुद्रवद्रुद्रु१पमश्वनि॥ देहनीकस्यवेमूलं॥ संपिष्टमूदकनवा॥ पीनका॥ एकेवागस्यविषाचनरुदववापीननेकुलमूल॥ एमद्रुस्यसंगवस्यवा॥ ह
नविष्टिनिवागस्यविषाटनरुदववापीननेकुलमूल॥ एमरुनेसरुवादिगमा॥ पीनमासवसनापिवागनू॥ एमरुनगायनलिप्यसुकु॥ एमकागकीवलसंयुक्तमा॥ रुलेपापाद
थान्ने॥ एमसकापानासंयुक्तमध्वसेध्वसिकं॥ गुठजेविकगुष्टुलं॥ ससुद्रुनसंयुक्तिनकोमलाद्युष्टुलपनागकद्रुनेलनलिफावेविधूमा॥ एमपनापिग॥ मृहिकोखादिगपा

हृदया. नीलासुलसमन्विता॥ वामाङ्गदक्षिणाङ्गव. कुमानूलादुवादि रुद्राचरुषष्टिः कलास्थाका. कामऽभसुवशीक नाशनायनानागपूष्यालि. विन्दुपूर्वापियङ्गवशकूकूमऽश्च
नऽश्च व. तिलकेनेजगदलोडं कुंजो विदविमो हाय्यपुत्रवश्यादिद हिमाडं कुंजो विमो हाय्यसर्वे लाकदहिमं॥ सुगभऽहविडावकूकूमानिवलेयथऽवगयडु वधूपस्यपू
ष्यधूपसुगभर्क॥ दूनालहाववाकूकूकूमऽश्चगावती॥ तिलनेलनस्यकूयातिलपादऽननश॥ निमकासस्यधूपनधूपयि तारुगं क्रियशसु रुमस्योत्सुगुड पमिदोसाहविषा
नि॥ माहिषनवनीतऽश्च कूकूमधूयसिका॥ सोहाय्यऽगलपात्स्यापतिदोसाहवेरुथा॥ मधूयसिऽश्च नैर्दद्याऽज्ञादीर्नकलुकाविकां प्रगति समहागनि पिवेदुधू नवात्रिभा॥ वरुङ्गो २१०
षाषल. गह्वरसु वमरुमम॥ मातुलुङ्गस्यवीजानि. क्षीरलसह हावयगाग लीला लेह न गह्वर नाग कार्याविवात्रभा॥ मातुलुङ्गस्यवीजानि. मूलान्धन लु कस्युतु। दूतनसहस्रं थाङ्ग पा
यथऽपूष्यकाक्षिणी॥ अश्वगन्धद्वयं पायथऽपूष्यकाक्षिणी वलागस्युवीजानि. क्षीरलसह पंथयऽ॥ नजसुलातुपीलास्यातः पूरुमहा विवद्विगा॥ ॥००॥ यादिमहापूना
गमरुते॥ १८४॥ ॥हवित्रवाच॥ हविना लयवकोनं. पल्लुङ्गं नके चन्दनभाजागीहि रुलकलोका. मङ्गले नपंथयऽ॥ हवीर्नकीक नाथल. दृष्टा नूदनानूपलं पंथयऽनादनाऽस्युली

हिमाङ्गपूष्याश्वगात्रुनसंज्ञयश॥ मूलकं सुदमन्दल्लो नमकस्यपूत्रयगाकर्लुयाऽपूत्रल्लन. कर्लुयावाविनश्रिा. अर्कपुर्णहीलातुमन्दालो नापथऽकूनेशानिऽपीशपूत्रयगाक
र्लुकाक्षीर्लविनश्रिा. पियङ्गुमधूकामहो. धागकूतलपाउरिऽमक्षिणालाधुलाकारिऽकपिकुस्यनसंनवा॥ पथलेलं थलीला. दानो हिङ्गुमहोषधभागपूष्याववाकूकूवात्रुगिय
नसायनमा॥ मोवर्चलं यवकोनं. तथाकाक्षिणसेधवभा. रुद्रागि विठं मूकं मधूयकू वरुङ्गुलमा॥ मातुलुङ्गेनससुद न्याश्वरसा॥ हिनेशपक्वलेह नैदाऽगवादीश्चनसंज्ञयश॥ कर्लुया
रुतिनालोस्याऽकदूलेलस्यपूत्रल्ल॥ हविडा निमपयालि. पियल्यामविवा निवा॥ विउङ्गुहउमसुऽश्च सुफर्मविश्वरुषजभा. लमसुगुलवपिङ्गवे. रुलाववटिकाहवा॥ अजीर्णकुहवत्री
र्लु. द्वयं विषुदिकोपहमाह्वनं दनके विष. वात्रिभाति मित्रापहमा॥ यटलं मधूनाहकि. गमसुगुलं थवैदभा. प्रषावणकूवोवर्हिऽसर्वनगुमलापहमा॥ ॥००॥ यादिमहापूना. लमरुते॥
॥१८५॥ ॥हवित्रवाच॥ ववामासीचविल्वऽ. नगरं पद्मके सुत्रभा. नागपूष्यापियङ्गुऽश्च. समहागनि वल्लुथगा॥ अमनधूपिनामह्यऽकामवद्वि चनेमहीमाकपूत्र न्येवदात्रुऽश्च मधू
नासहयऽजयगा॥ लिङ्गलेपाञ्चननेव. वशीकूयात्तुमिर्यकिला॥ मेधुनं पूष्यागकूकू. रुद्रायात्तुसुकमिन्द्रियमा. वामहसुनवामऽश्च हर्षयस्याऽसुयालिपगा॥ अलिफास्तीवर्गयाति नाय

आह वाग्निना पश्चदकनकं अ. सूक्ष्मचूर्णं च कायथगा यूर्यं धूपं पण्यदत्ता ननु कलभनपतनं ध्रुवमहं नभारुगवर्गं हिन्दु हिन्दु न स्यात्तिना स्युक्तलिगपलु पाणिपूषायरुद्रा कटव
वद्वानिर्गुद्याः मूलकं नह नकन ॥ मूलकुल्यनगुक्षयाः रुत्वा ननु सफखलुके माहेरु वद्वे नाशयत्र **अर्ण** स्यव न संशयशा विष्णु का नऊ मूलन. योन आया दिन न भव स्रद योतु
मूलन. सर्वकमा लिकायथगा ॥ दि रु लाया सुचूर्णु नु सधो रुद विनाश रुत्वा अर्ण पून नै वाविले ॥ पिपली हि शसाधितभा **रुध** दिका ससाकाश पीनं श्री लं वगर्ह रुत्वा रुदयत्रेव
मादीनि. पयसा रुन पाविगभा ॥ दगल कं नयायूर्यं **धु** कं स्यादक्यं नगशविउ रु मधुर्क पाभमां सी सूरु न ससुथा ॥ रुविउ दि रु लाये वभू पो मार्ग मन ॥ लिला उदमेन क्षावकी पूर्ण ॥ २१४
मिलने लनपयथगा यानिलिङ्ग मूकं न **सि** यं मा ॥ स्या ॥ पियं महानमसु व्गो लाव न दाय आ कर्षिलिवि कर्षे लिमूखसाह गि। यो निलिङ्ग स्यार्क न. नै लनपु कलभयन ॥ पून लू वा
मृगो दू वी कनक ॥ रुत्वा नूली जीजने साजानिकोयी. नभन न समेदनभा ॥ रुत्वा धमत्र मूषाया. नसमान लमी विगभा मक्षय सहिर्ग दूर्य वली पलिन नाशनभा मक्षय शुउ गमसु
कनना मादिकं नसभा धमना रुवउोर्ण. **सुव** नू कन लं ॥ पीनं धूरु न पूषा रुसी स कश्च रु वामे नभा ला मूलस्य वभखव. मूलमावगना रुवगा नै लं धूरु न रुद कश्च न दीपय

पुदापयगा समाक्षवप विरुक्तु **म** गनलं न पण्यनि ॥ रुषस्य म नयस्येव यूका रुकानरु रु नि। गार्क ना वयवेर्यका धूपं द्यावा वगर्ह नि ॥ विमयं कू नू येव. वषवना रुसंशयशा न
जीव सार्धे ये नै लं. वलू खशा न समुर्व ॥ नदी पश्य कले लम्य. गमिक्ता ला कलापवगा वलू कू कू नदी दहं दग्ध नू ड पले पयगा पन कन रुत्वा **य** दिसम्य कू प ले पयगा स्रु मां जयग
सापि. महाभू न रु जायग ॥ दहं रु न्द रु सयस्य. मुखसं रु रु सार्धे पशु नि रु रु ल मभ्यरु नि वि कर्षे लं यथा ॥ कू मी न न रु दग्ध नि रु रु नि रु धि न रु था व सार्धे ल समायु क म क रु
नेत्रिया ऊयगा ॥ आत्मानं न रु यं रु न रु ल नि रु दि न रु यी कू मी न क सार्धे गालि रु द य रु कू प स्यवा ॥ मूषक स्य वभलू नि. जिगु मा न वभन था पुगार्थे क रु स्रु कानि रु ल नि रु
इथा रु रु ॥ लोह चूर्णं रु कपी र्ण यो रु न गह न रु वं ग रु ली य क रु म रु न. मूलं पीनं पया नि रु भा ॥ कामला दि रु रु यो कं मूख ग गह न रु था जानी मूलं रु कपी र्ण. कामि मूल रु
जीलू रु रु ॥ स रु का का समूल स्या. व रु वी मूल मेव वा। का रु क न व वा कू धू. मूल मे द रु न ग रु न रु थ रु वा नू ली मूल वा नि पीनं **वि** वा दि रु रु स्रु न रु क मूल पाला ल गेला
भरु वं रु व ॥ वला वा नि वला यसी. ल कं न मधु र्ण यगा व **आ** ग रु क रु यो र्ण. न रु का यी वि वा रु ल ॥ रु ग प रु जि ग मूल पिप ली रु रु स्रु न भा प रु जि रु जि ग ले पा रु रु रु

चूर्णसमायुक्तं चिरुलाचूर्णं भवतामधुना सादिनं नूदु पवित्रमाख्यं लनगा कथिनादकनलिनं समुका दानकं तथा मगलं द्रुमं निदग्गं गवाक्षिनसमन्वितमापीनं द्रु
गुह्यं लानां हवेनाशकं नृशिव। हं गुह्यं वृक्षं लं नूदु वृषध्वजमहोषधमा। एहिथ कथिनां विपीनं वे सर्वं लनगा अपामा नृस्यवे मूलं सामुद्रजवलेन चित्तमो आखा
दिनं मजीलं स्य मूलस्य स्यादिमदकं वट्या हाके नानूदु गल्लोदकमर्षिगशा पीनं सनका नीमार्कं द्रुयं नयनिगके वा अट्टमूलं कषाई चिरुनं लुलवा विष्णोसर्वो
सावगुह्यं पीनं हवेनिगके वा मनीविशुलिके टकं लवचूर्णं गुल्मनिगमा कमारुद्रिगुलं पीनं ये ह्ये वाधिनाशनी। एतप नाजिगामूलं ह विडासिकं गल्लं लमा अपामा २१८
गं किंकटं मंथानुगुटिका शिव। विमृगिकमहायाधि हवथवनसंशयशर्किरुला गुनू र्गं गजिला जठु हनीनकी। एके कभकां चूर्णं कुमधुना च विमिश्रिनी पीनं सर्वं पभं हने
द्रुयं नयनिगके वा अर्कं कीचपुल्लं भर्कं निलनं लकष्येव वा मनः शिला मनीधानां सिन्दुव स्य पलपनमा चूर्णं कलागामुपुं दानपं लभयत्तुगशा पीनं द्रुहिगं द्रुयं सैधवं मूल
नूदु वं ग। किंकटं चिरुलानकं पलासुकं सैधवं भामनः शिला निमपुं जागी पूष्यमजापये शागमूर्णं रं खनाहि ३३ चन्दनं चर्षथत्तुगशा एहिथ वटिकां कृया लवकां ३३ थत्तुगशा

नट्यं पटलं काटं पूष्यं यदि निमिगादिकमा विहीनकस्य वे चूर्णं समधुना सनाशनमा। पिप्यली चिरुलाचूर्णं मधुमेधवं युगमा सर्वं नागकं वक्ष्यम। लभपीनस रुद्रकादिव दानाथ
वे चूर्णं मजामूर्णं लहावथं। एकं विगनिवे वा नृशिव। नाथ श्वगापटलेना नथे निनी मेगा तथा पिप्यली के नं नूदु ह विडामलकं वया। सर्वोक्तिनागेन एथयु ३ मकी
नादुर्गं नागुगशा काकजं यागिय मूलं मूरुवनविधनं शिव। स्वर्जिगदकं नीपानां विनाभयत्तु वं नृम। ॥ ३३ ॥ एहिथ महापूना लग्नं नूदु ॥ १९॥ ॥ हवित्रवावा पीनं सारंगुडीयाथ
विधिनाथपुमह नृगापीनं गहा निया मूलं निलदध्मयं युगमा निनूदु मूलं कथिनां पवलेय निगके वा तथा हि कां हवत् पीजं सोवर्जल युगासुत्रा। गेनक कर्कटिका यामूलं मूलं
वास्यादकनवा पीनं दिनयुथलेव नागयदुर्गं नृम। द्विजेयस्याचर्वं मूलं पिष्टं गल्लवा विष्णो कनवी नेमूललेपां लंपातपूग रुलस्यवा। पूष्याधिनाथं नूदु यागमन्यं वदा
न्यहं। दकिमूलं हविडाच चिनुकं नथलेपनात् ॥ रुमन्यव विनाश स्याद न्ययोगं वदामह माज लोका दद्यत्तु रुमन्यव ममापुं ॥ चिरुला जल यत्तु माजो नाहि विलपित
भागानपुसधं नूदु नागकार्यं विवावभा ॥ हविडाने कवा नृत्तु ही कीचपुल्लं लहाविगा मटि एने निपे नृत्तु लंपादु वरध्वज ॥ द्याषा रुलं सैधवं ३३ गलिफार्श ३३ पा ॥ १० ॥ थागवायं साधिगं

पीतं पलाशकावत्रिभा॥ हिरुलनसहिकदू **गुरु** सिद्धयथकिवा विलुप्तचरुलंदयं नका **गुरु** भविता जनभा॥ रुच्यरु घुगिलाभ्रव नवनीतयूगानिवायवकावृष्टिचूर्णयूकं
रुच्ययुगानिभभा॥ लीट मयिकनाथवपुष्येष्टरुधु॥ १७॥ चक्रथिर्नवावि पीतं चान्ति कनातिवे॥ हवीन केमिधवश्च विरु कं नूड पिपलीनाचूर्णमूर्ध्ना दकनेषां पीतं चान्ति क
धकनभा॥ साह्यं शूकनमासवे पीतं **गुरु** धकनभा॥ ॥ **गुरु** आदिमहायुगालभनूठ ॥ १८॥ ॥ **हनि** नूवावे॥ हसिकक स्यवेमूर्ध्ना गहीला चूर्णयुद्धना सर्वनाग विनिर्मक
चूर्णपलनन प॥ सुक्रीनरुकिर्नकूयान् सफाहनरेषधु॥ ॥ नवगुरु निधनं शूत्रमृग न्यग निविकुमभापद्मगोत्रेपुनी काशं यूकं गनगनायुषा॥ **गुरु** भाया रुनिनूड सगनद २१०
गुरुताजिनभामधुसप्येष्टसमायूकं दग्नेमायुः कनरुवग॥ गुरुचं मधुनासाह्यं दग्नावर्षसहसिलीगचको **गुरु** कसं यूकं नवकूयात्ररुकिर्न॥ गनवर्षा दिवादहं वलीपलिनव
हिं नभा दग्ने हिं रुलयायूकं चक्रमार्ककनातिवे॥ **गुरु** धपे **गुरु** चूर्ण स्या साह्यं सवतु रुद्रलभन॥ माहिषक्रीनसं यूकं गल्लेयः **गुरु** कनरुग॥ खलीरु स्यवेकेश्वरवनि
रुधरुधु॥ गेलयूकं नचूर्णन वलीपलिनवहिं नभा गद्वहनमाणे लसर्वनागपमयार्ग सक्कागक्रीनयूकं न **गुरु** १८ स्यान्मासगा **गुरु** ना १०॥ पलाशस्यगुवीजानिभ्रव ल

विदुषालिवा गहीलानवनीननू गं वीचूर्ण नुरुकथे॥ कर्षार्कनखभासं नवा नीर्नरुविपुरुमाखलीपुनालभ्रन्याया दक्षवर्जं रुधधु॥ जीवद्वर्षसहसालि वलीपलिनवहिं
गशरुनेनाजस्यवेचूर्ण पूषाकं रुसमाहना॥ विजालपदमाहनु सहीवीनश्च रुकथे॥ मासमाहपुथा गेलवलीपलिनवहिं नभा गनानिपञ्चजीवन्न नवनागवला रुवे॥ रुवेकु नि
निधनायूड पूषाकं येवरुद्रलभन॥ ॥ **गुरु** आदिमहायुगालभनूठ ॥ १९॥ ॥ **हनि** नूवावे॥ निर्वीलः स्यात्पूयहीनः पुवाहायुगपुवि नः अपामार्ग स्यवेमूर्ध्ना रुसायाश्चि
मादिर्न॥ रुद्रभनपहावस्य नक सावानपूत्रलभन॥ नूडलाहलिकामूर्ध्ना **गुरु** लस्यगयेववा गेनवलमूर्ध्नाक्षिर्न गन्यानिः सनविबल॥ विन कालपुविष्टा पिनेनमा **गुरु** ल
कन॥ वलमूर्ध्नाभषण्डी मूर्ध्नावावा नियचितभा॥ गेनलिफं विवेजार्ग न **गुरु** वलपुलभम्यानि दभ्रमाहिषलयूकं **गुरु** चक्रकादवरुद्रकभा केरुमूलस्यवेचूर्ण दहं नाजीवलापह
भावद्वयसीरु लंपिष्ट वात्रिभननलपगशा गेनदृष्टं नकदाषधपुल ग्यनि नसं गयः यवरुस विरुद्र **गुरु** गंधपाषालमवचा॥ १७॥ विषया **गुरु** वचूर्ण राविर्नूधियलवे रुके
लोसस्यगन्धिफं मेवदं विदुषकिवा॥ लभरा **गुरु** नस्यवीजानि अगसीमहिना सहो लोत्रसर्वरुयूकानि सवो **गुरु** नानिगद्वना पिष्टाग्नपुनं गकेल ग्रन्थिकं नालयदिवी **गुरु** ना

गुवलाचूर्णनवनीतसमन्वितमातन्त्रेपायवनीनाश्च कुर्यान्मनाहर्षसममा विनयेन्दुवावलीमूलयस्यनाम्रासुद्वगशनिःक्रियन्समस्याद्यगस्यहीहाविनश्चक्रि॥ पुन
नैवायाश्चक्राया मूलनलुलवाविभापीर्न विदधित्वगस्याञ्च नागकार्येविवात्रभा॥ कदलीयवकात्रनुपानीयेनपुसाधितभागदाहोदवान्त्रिभुज्यायाधयध्वि
ला॥ कदलीकानलीमूलगुजाश्चनसमन्वितमाग्निनासाधितजम्बू मूदवक्रुमीनद्वग॥ नित्यंनिम्बदलानाश्च वृक्षमामलेकस्यवापयध्वरुक्रयश्चकनस्यकृष्टवि
नश्चक्रि॥ रुत्रीनकीविलेज्जहविडासिगसर्षपेशामनाजस्यवीजानि कनश्चस्यवसेध्व॥ गममूत्रपिष्टान्येनानि कृष्टवागहनागिवापेकश्चक्रिहलाहामेनथरा २१॥
गुदयजिव॥ सामनाजस्यवीजानां दध्नपथ्मवददुनगाश्चमूत्रकृमिगममूत्र कथिर्नलवभाविनमा॥ कांस्यचूर्णस्वर्णलेपागकृष्टद्विनाशनमाद्विदाहविनालश्च
व्री॥ गममूत्रसेध्व॥ अयलपाहनिददु पानपानवेतात्रेकथासामनाजस्यवीजानि नवनीतयुगानिवामधुनासादिनोनिम्बेऽगुक्रुष्टहनागिवापेकानुपाननोदु
नागकार्येविवात्रभा॥ सिनोपनाजिनातिर्नवर्तनवाह्यवाविभागलेपावृद्धमासेन॥ उक्ताकृष्टविनाशनमाहिषन्नवनीतश्च सिन्दूरश्चमवीचकापामाविलेपिगान

रथः ककुलापिवृषश्च॥ विष्णुद्वगम्हाविर्गर्तपर्वदीर्घसंयुतमाहकिर्नगुक्रुविहस्यविनाशकत्रमीश्वरा॥ मूलकस्यचवीजानिअपामार्जवसेनवापिष्टानिगनलपननि
लिकावृद्धनश्चक्रि॥ कदलीकावसंयुक्ताहविडासिनिपापेहा॥ वक्रापापामार्गयाऽकात्रेचकलेविमिश्रिता॥ गदस्यङ्गनाहादेवसद्यःसिधविनश्चक्रि॥ कृष्णाउनालकात्रश्च
स॥ गममूत्रश्चगद्वयशाजलपिष्टाहविडाव॥ सिद्धामन्दनेलेनहि॥ माहिषलपूवीषलवेक्षिगवृषेतेध्वज॥ गस्याउदहर्नक्रुयोदङ्गलोत्रमीश्वरा॥ तिलगर्षपसंयुक्तहविडाद
यकृष्टकमा॥ ननाद्वर्तितदहस्यस्याद्वजलःसुत्रहिःप्रमा॥ मनाहवश्चनदिनं दुर्वर्णकाकजिह्वया॥ अरुनेस्यगुपूष्पाणिजसूययुगानिवागलाधुलिवगलेपादहद्वर्जन्ध
नाह्वन॥ मन्दाधुलाधुनीवम्बेधुल्लुक्तनकस्यवा॥ ननाद्वर्तितदहस्यनस्याङ्गीमपुवासिर्ना॥ त्रय्याषश्चेकमेकश्च॥ यमदाषश्चनश्चक्रि॥ काकज्यादहर्नश्चअङ्गनागकत्र
हव॥ येसीमधुलर्कवाश्च॥ वासकस्यवसामधु॥ पुनस्पीर्नवक्रुपीर्नहवसीनावासकस्यवसामधु॥ स्वापकालेनायपानापीनसंयुहिर्नहव॥ विहीन
कस्यवेचूर्णपिण्णलीसेध्वस्यवापीर्नसकाश्चिकहानिस्ववर्तयमहश्चव॥ मूलमामलकस्यवपीर्नगयपयान्वितमामेनऽजिलावलामूलकीकिपर्वश्चगुगुल॥ जागीपर्णकोलिपर्ण

[illegible]

दक निषवनात् ॥ पीतनुकाष्ठिकं त्रुदः कथितं शत्रुपूषया ॥ हिङ्गुसेनवर्मयुक्तं सुलीलां गायं पसुनिकुम् ॥ मातुलङ्गकं वैमूलं कटिवर्द्धं पसुनिकुम् ॥ अपामार्गस्य वैमूलं यानि
 लुङ्गपसुनिकुम् ॥ अपामार्गस्य वैमूलं गार्ग्यगलु नाम नः ॥ इत्याद्यमाने सकलं पूषया दन्यथासुता ॥ अपामार्गस्य वैमूलं नानावीलां जिवसिद्धिर्नामार्गस्य वैमूलं विनोदनात्
 कोर्याविवात ॥ कर्पूरमदनरुलः मधुकैः पूषिगः जिवः ॥ यानि ॥ रुस्यादृष्टायाः येवत्याः किंपूनर्हन् ॥ यस्य वीलस्यो निलकः रुगो गमनाय नाख्या ॥ गार्ग्यनाकयान् ॥
 दहं सस्याच्च निरुयः ॥ विषरुगग्रहादिभ्योः योधिभ्यो वालकः जिवो गार्ग्यनाकववाकृष्टः लाहानां क्षत्रलंसदा ॥ वाला नाम पसुनिकुम् ॥ त्रुदवकाकं रवेण पलाशवृक्षं
 मधुः गार्ग्यमलोकाचिर्नामफाहं रुद्रिर्न त्रुदः ॥ नूनयनिर्द्वयः ॥ त्रुदामलकं वृक्षं मधुः निलयः नितमजम्भः मासं यूवास्याच्च नवावागीश्वरी रवेः ॥ जिवामलकं
 वृक्षं मधुना उदकेन वा वलानिकुयोन्नामयः पसुषेरुद्रिर्न जियः ॥ वृक्षं माञ्जमधुः पातुर्गुम्भः रुवेन्नवः साक्षात्सुनेहिदहाविजीवध्वसहस्रकम् ॥ माषस्य द्विदला
 येव विरुमानमहं श्वनागकैवायपयादिभ्यः रुद्रयित्वाथकामयः ॥ सुलीलां गार्ग्यमहादेवः त्रुदः लान्तागर्ग्ययः सल्लेखः लनेगक्षकेन सुगो रवेण ॥ रुद्रलोदकसंघे

शा. वलकुरुक (भा. वं. ग. द. ग. वि. रु. व. म. वि. ध. सि. मी. व. ज. वि. सा. धि. न. मा. अ. पा. मा. ज. वि. न. पी. न. मी. न. का. म. क. न. ॥ ॥ ॐ. त्यादिमहापूजा. लग्न. न. ॥ ॥ १. ॥ ॥ ह. वि. न.
 वा. च. ॥ या. जो. द. सि. सु. के. वे. त. न. त्या. द. र्थ. सु. के. प. य. श. ल. व. ल. न. स. मा. य. के. न. त्या. व. ल. ॥ पि. या. र. व. न. ॥ ॥ ॐ. ना. लि. क. ॥ व. द. दि. म. दि. धी. ली. ग. वा. न. था. ॥ रु. मि. ज. ल. पा. न. य. नि. स. क. ल. न. रा. श. र्म. न.
 य. शा. ॥ ग. म. ज. न. ना. रि. या. न. ॥ ॥ ॐ. ना. लि. क. ॥ व. द. दि. म. दि. धी. ली. ग. वा. न. था. ॥ रु. मि. ज. ल. पा. न. य. नि. स. क. ल. न. रा. श. र्म. न.
 रु. थ. ॥ ग. म. ज. न. ना. रि. या. न. ॥ ॥ ॐ. ना. लि. क. ॥ व. द. दि. म. दि. धी. ली. ग. वा. न. था. ॥ रु. मि. ज. ल. पा. न. य. नि. स. क. ल. न. रा. श. र्म. न.
 नि. ॥ वा. नि. रु. ट. रु. या. ना. ॥ ॥ ॐ. ना. लि. क. ॥ व. द. दि. म. दि. धी. ली. ग. वा. न. था. ॥ रु. मि. ज. ल. पा. न. य. नि. स. क. ल. न. रा. श. र्म. न.
 ॥ ॥ ॐ. त्यादिमहापूजा. लग्न. न. ॥ ॥ १. ॥ ॥ ह. वि. न. वा. च. ॥ वि. न. क. त्या. र. व. न. ॥ ॥ ॐ. ना. लि. क. ॥ व. द. दि. म. दि. धी. ली. ग. वा. न. था. ॥ रु. मि. ज. ल. पा. न. य. नि. स. क. ल. न. रा. श. र्म. न.
 वि. न. ना. वि. न. रु. स. य. म. ॥ अ. शा. म. र. वि. न. ॥ ॥ ॐ. ना. लि. क. ॥ व. द. दि. म. दि. धी. ली. ग. वा. न. था. ॥ रु. मि. ज. ल. पा. न. य. नि. स. क. ल. न. रा. श. र्म. न.

ही. ना. ना. ॥ नि. वा. न. थ. ॥ वि. ला. नि. म. क. त्या. ना. क. पा. ट. ला. पा. नि. रु. द. क. मा. ॥ प. सा. ना. थ. श. ग. म. वा. च. रु. ह. नी. क. ल. का. नि. का. ॥ व. ला. वा. नि. व. ला. ना. ॥ म. र्द. डा. व. पू. न. लू. वा. ॥ न. न. ल. उ. म. नि. वा. य. ली. क. रु.
 की. क. पि. क. रु. ना. ॥ ॥ ॐ. ना. लि. क. ॥ व. द. दि. म. दि. धी. ली. ग. वा. न. था. ॥ रु. मि. ज. ल. पा. न. य. नि. स. क. ल. न. रा. श. र्म. न.
 नी. ल. रु. ल. य. दा. प. थ. ॥ ॥ ॐ. ना. लि. क. ॥ व. द. दि. म. दि. धी. ली. ग. वा. न. था. ॥ रु. मि. ज. ल. पा. न. य. नि. स. क. ल. न. रा. श. र्म. न.
 ॥ ॐ. ना. लि. क. ॥ व. द. दि. म. दि. धी. ली. ग. वा. न. था. ॥ रु. मि. ज. ल. पा. न. य. नि. स. क. ल. न. रा. श. र्म. न.
 ना. वा. न. रु. ना. ना. ॥ ॥ ॐ. ना. लि. क. ॥ व. द. दि. म. दि. धी. ली. ग. वा. न. था. ॥ रु. मि. ज. ल. पा. न. य. नि. स. क. ल. न. रा. श. र्म. न.
 ॥ ॐ. ना. लि. क. ॥ व. द. दि. म. दि. धी. ली. ग. वा. न. था. ॥ रु. मि. ज. ल. पा. न. य. नि. स. क. ल. न. रा. श. र्म. न.
 क. ल. या. वि. ला. ॥ ग. म. वा. च. ना. पि. य. रु. ॥ ॥ ॐ. ना. लि. क. ॥ व. द. दि. म. दि. धी. ली. ग. वा. न. था. ॥ रु. मि. ज. ल. पा. न. य. नि. स. क. ल. न. रा. श. र्म. न.

पत्राम्॥ सिद्धार्थकववाहिङ्गु कवञ्जुन्वदात्रयामङ्गिहातिरुलाह्यता जिनीषाधजनीदय॥ पियङ्गु निम्बलिकदुग्धमूर्धुलेवयर्षिमा निम्बकृष्टं हविर्ददं त्रिम्बः सर्वपुत्रम्बन
 ॥ यवदात्रपटालश्च धान्यं कुलधर्षिन्मादहर्कलाकगर्भवे ज्ञेयनादहर्थरुम॥ पामाः कृष्णानितस्थयुः कलुषितकः (भाटिकी) सामुद्रिके श्ववक्त्रा नो वा जिकालवर्ण विउमा कद
 लाहवजः कीट विदुः गूलकं सममादधिलामूर्धुपयसा मन्द पाकयाविगम्॥ एतच्चाग्निवर्लवूर्णं पियदुधूनवाविनाजी (वूर्ण) वूर्णवृक्षीत मासादिय तहाजने मालिगुलमूल
 गूलं गुल्मप्रीहृरवञ्जुन्वदात्रयामङ्गिहातिरुलाह्यता जिनीषाधजनीदय॥ पियङ्गु निम्बलिकदुग्धमूर्धुलेवयर्षिमा निम्बकृष्टं हविर्ददं त्रिम्बः सर्वपुत्रम्बन २२४
 कामं निहन्तिवो ज्ञेयामलकं दाका पाभवेवविहीनके मागर्कं वाचसमर्थेवजश्चवेवहर्नपत्रमातिरुलाह्यता जिनीषाधजनीदय॥ पियङ्गु निम्बलिकदुग्धमूर्धुलेवयर्षिमा निम्बकृष्टं हविर्ददं त्रिम्बः सर्वपुत्रम्बन
 लाह्वाननाशविगलवहिकाकाश्च वनाहालूककृष्णं यथाहस्युषाश्चविमूर्धु मासं वायाम (मेतिग) माधुपदद्याह्वानं ४३ नल्लयश्चभेनथ॥ अथसा नारिकेलगु
 हाह्वयश्चभेनथ॥ एतान्योषधजानि कथितानि वैश्वना निहन्ति यानि वाग्मनि वृक्षमिन्द्रागनिर्यथोऽपि यधरुगवान् विष्णुः ससुतो गान् रुवन् धानाश्चिन् ४ रुनावापिना

उकार्योविवात्रभा ॥ १०२ ॥ ॥ हविर्वाच॥ सर्वथाधिहर्नवञ्जुन्वदात्रयामङ्गिहातिरुलाह्यता जिनीषाधजनीदय॥ पियङ्गु निम्बलिकदुग्धमूर्धुलेवयर्षिमा निम्बकृष्टं हविर्ददं त्रिम्बः सर्वपुत्रम्बन
 मीमन्तमर्जमिह्यमनामयमादेवं सर्वेश्वरेविष्णुः सर्वथाधिनमयमावेभ्रा मर्हपुर्णिमूर्धु नमस्तुत्यजनादेनभामभाद्यापुर्णिमूर्धु सर्वदुष्टनिवात्रलमा विष्णुमा मग्न ४ पातु रुष्णा
 वदुष्टगुणहनिर्मवदुष्टुलिवा ददयश्चजनादेन ४ मनाममदेषीक ४ जिह्वावेदुष्टुकेनवशापातुभेन वासुदव ४ गुणगुणैर्यत्न विरुषापद्युम ४ पातुभेद्यालमनिद्रुक्षयवमे
 वावुनमालीगलस्यार्कं जीवत्मानकामवशा पाथ्यं वदुष्टुभेवके नार्मदेत्य निवात्रलमादक्षिणकुगदादेवी सर्वसुत्रनिवात्रिणी ॥ उदरं वषलपातुष्टुभेपातुलाह्वली ॥ उदरं वदुष्टुभे
 गम्भीरं जेधनदुष्टुनन्दकशापाथी वदुष्टुर्गखश्च पद्मीभवत्तभवृत् ॥ सर्वकार्यार्थसिद्ध्यर्थं पातुमाग्न ४ सदा ॥ वनाहात्रदुष्टुजलं विषमेषु वामनभृष्टानि वसिष्ठसर्व ४ पा
 तुकेनवशा दिवस्यगर्हगवानहित्रर्धमपुयदुष्टु सार्ववायस्सुकेपिला धातुसाम्यकवातुभे ॥ ४४ गदीपनिवासीव ॥ ४५ गदीपनयत्नज ४ सर्वेश्वरु नसुदयतु मधुकोटहसु
 दन ४ ॥ विष्णु ४ सदाविकर्षु किलिषममविग्रहाहं हामस्यसुथा कूर्म ४ पातुमा सर्वेतामखमा विदिकमसुभेदव ४ सर्वेन्पाशमूनिरुक्तु नवनावा लदवा वृद्धिपालयता

लिङ्गमाशिलामनःशिलाङ्गुयाः लपलीकटकीनिवा॥ अलम्बनकश्चपिह विगलं विनिर्दिष्टं गन्धकागन्धपाषाणः वसः पावदउच्यते ॥ गन्धमोदमन्त्रं शुद्धं विद्यान्तं कुर्यात्
नथाशुक्लसावमयनीकं लाहकश्चपिकथं ॥ मादिकं मधुवदोक्तं तत्रपूष्यवसन्तथाशुक्लसावमयनीकं लाहकश्चपिकथं ॥ मादिकं मधुवदोक्तं तत्रपूष्यवसन्तथाशुक्ल
शुक्लसोदकं गन्धः काश्चिकं न सुवीचकम् ॥ सिनासिनापलायवः मत्स्यलुङ्गकं वासनालपत्रकं सुल्लिङ्गसुगन्धकं जातकम् ॥ नागकंसर्वसंयुक्तं वातुक्तं न कमिष्यते ॥ पिप्पली
पिप्पलीमूलं चवीचिकनागवंशं कथितम् ॥ अलक्ष्मणपत्रकं लोकरुद्रया ॥ रुद्रनाक्षमहाभलिः नीवावः ॥ भलिकोऽसृगः ॥ पियङ्गुः ॥ कङ्कः ॥ वाङ्गः ॥ कावदूषः ॥ यकोद्वः ॥ निपूः ॥ २३
पूटर्षः ॥ कपालान्नकामनः ॥ सहीलावर्कः ॥ लोचनं ॥ वंशः ॥ पिप्पली ॥ लिङ्गः ॥ पिङ्गुः ॥ कालिगलं ॥ वाङ्गः ॥ विजालपदकं ॥ कथा ॥ विद्यान्तं कथं नथापि ॥ सुवर्णं ॥ कवलग्रहमापलाङ्गुलि
मिङ्गुलि ॥ नथावाङ्गकमामिना ॥ पलं ॥ विल्वः ॥ मूषः ॥ स्यात् ॥ दधनं ॥ पलं ॥ पलं ॥ मिषदं ॥ गन्धः ॥ लिङ्गः ॥ वंशः ॥ विद्यान्तं ॥ वंशः ॥ यम् ॥ अक्षमो न पलान्यक्षः ॥ तत्रमानीनिगद्यते ॥ वंशः ॥ कृत्
वंशः ॥ पुष्पः ॥ पुष्पाश्चदान्द्रादकशार्कं स पात्रं यस्याका ॥ दालः ॥ वंशः ॥ वाङ्गः ॥ लोलापलः ॥ गन्धः ॥ पाङ्गः ॥ हात्राविङ्गः ॥ यलाः ॥ सृगः ॥ मानमवविधेदहं पलं ॥ दधनं ॥ पलं ॥ गन्धः ॥ दधनं ॥ यस्या

[illegible]

॥ कृमानुवाच ॥ अथ वा कर्तव्यं चैव कात्यायनसमासुतं शिद्धं च विवकायं बालं च त्रयं हि हनवे ॥ सुप्रतिष्ठं न मयि रक्षार्त्तं सुप्रसक्तं विरक्तं यशो जस्य प्रथमं प्राक् सा पाणिपदिका
 थिकं ॥ सभाधनं वृक्षादालिङ्ग कर्मलिकर्तुं विप्रार्थं च योनिपदिकं धारुपुत्रयवर्जितं मा ॥ अमोहं हृदि नीया स्यात्कर्म कियं च न ॥ दिनीया कर्मलिपिका अनेनानेनैव लस्य
 ना ॥ दाह्या हि स हनीया स्यात्कर्मलिकर्तुं विप्रार्थं च योनिपदिकं धारुपुत्रयवर्जितं मा ॥ अमोहं हृदि नीया स्यात्कर्म कियं च न ॥ दिनीया कर्मलिपिका अनेनानेनैव लस्य
 ॥ पञ्चमी स्यादसिद्ध्या चैव कृपादानं च कावकं यनपेति समादहे आपादहे रयं यनशा दसासा मश्रयसी स्यात् स्वामि स मन्धमुखकं ॥ द्योमं सुप्रसक्तं फमी स्यात्सवाधिकत्र ॥ २३४
 हवे ॥ आधनाधिकत्र लभनकार्थनी पुयानशा ॥ योनिं वानी सिर्गयुक्तं दयादानं संकृत्तं स्यात् ॥ पञ्चमी पर्ययो द्योगं नवर्त न्यदक्षरे ॥ अनया डो दिनीया स्यात्कर्म प्रवचनीय
 कैशले कृत्वा वीयुक्तं हनं हि दागवपत्रिकी हिता ॥ अनेनैव सहा र्थे वही न डपे च कथनं ॥ दिनीया च वरुथी स्यात् ॥ अश्या यो ज्ञानिकेर्मलि ॥ अपुमा ॥ विरुकी द्वि मन्धकेर्मलिना दयान
 मश्वे सिद्ध्या साहा लमवपुया गव ॥ विना ॥ चरुथी वेवना दर्थे तुमन्धका ववाचिनं ॥ हनीया सह याग स्यात्कृत्स्नं ॥ विना ॥ काले हावे सफमी स्यात्दने यो गपिष

व्यापि सामीप्येनाधिपतिरिह ॥ साक्षिदायादसूक्तेशा निर्वोत्रेण द्विविरुकी षष्ठी हनुपथागका ॥ अर्थकर्मलिना कर्तव्यं ॥ पुनियत्तना हि सार्थनी पुथा गव रुतिकर्मलिष
 ष्ठी ॥ नकर्तुं कर्मल्लभ्यसी निहोदिषु निगद्यते ॥ या पाणिपदिका चिना ॥ द्विविधं पुनियदिकमज्ञा लने यथा तथा ॥ रुवादि स्य सिद्धे लस्य लको नोद नवे स्यात् ॥ शानि फ डि प्रथमाम
 धर्मिषु हि ॥ तुमश्च मपूत्र षष्ठी ॥ मियुत्तमं ॥ पत्रमोरुप दाना ॥ अमनेयदा नार्त्तं मपुथमाम ॥ अज्ञा साधम ॥ अरु मश्रयसी ॥ द्वहि म हि दौ नीया लिजा दिवधरुन ॥ नाम्निपयुश्र
 माने पिपुथमं ॥ पूत्रधारुवे ॥ मधुमोयुवादिप्राका ॥ उरुमं पूत्रधासुदि ॥ रुवाद्या धनव ॥ प्राका ॥ सनाश्रुता गतानशा रुने न द्यनने लिदा ॥ लाशानि खिवधरुन ॥ विश्रादामन
 मिनी स्यात् ॥ निज्ञा यो मनु लहवे ॥ निमकु लधुसं पुथिनं भूतथा जिषि ॥ उनीन पना र्त्तं स्यात् ॥ लुक् ॥ लुक् विद्यानि ॥ स्यादन द्यनने ह ॥ रुविद्यानि रुधरुन ॥ धाना निद कि
 यानिये हि लिदने लटपुकी हि नशा रुगलिषु पि वरुत्तं ॥ रुवकर्मलिकर्तुं ॥ लकर्तुं कर्तुं कर्मल्लभ्यसी ॥ हन द्यन द्यनीयवह वादयशा ॥ ॥ ॥ द्यादिमहापूत्रा लोमान
 उ कृमानुवाच ॥ २१॥ ॥ कृमानुवाच ॥ सिद्धादाहनल मश्रु संहितादिपूत्र सान्ना विपुसं सागता वीदं मूरुमं पिरुवाधरुशा दूक्षना विप्रना ॥ मयं लाङ्गली

निगा दवनामिधिपूजाचधर्मार्थवनवासिशासुर्वनरूपनिध्यालमहेन्द्राख्यं वषमलगा निधयनिग्रहगदीरु समतासर्वजन्तुषु ॥ पियापियपनिष्ठ (इ. सुषू पुरखापकात्रिगास
वाकास्यनरैर्लोचैवाचयात्माध्यानवात्रिगा ॥ सर्वेन्द्रियसमोहना धीरलध्याननिर्लेया ॥ रावणुद्धिनिधय. पत्रिवाहुर्मंडयन ॥ अहिंसासुखरात्रानि. सुखालोचनमादयावलि
नालिङ्गिना ॥ जेवसामान्याधर्मोडयन ॥ यथकृत्वाविले ॥ सर्वे पुयानियनमाहु निभा ॥ आवावागहर्षयावगृहकर्मवविन ॥ वोक्तेमूकैर्वृक्षेन धर्मा ॥ योवानुचिन्तये
कायेकैर्गंधानमूला. नृगार्थमवया ॥ सर्वेयनसमूहाय. रुगलोचवसमाहितशस्त्रात्मासुधामपासीन. दनक्षवनपूर्विकाभा ॥ उरुमूत्रप्रीधव. दिवाकुर्याद्ददद्वय ॥ २४२
नाहीवेदक्षिणकुर्या. तुरुसुधयथाविधि ॥ कुर्यायामुधकाववा. नागवहेनिवादिजा ॥ यथासुसुख ॥ कुर्यात्पालवाध हयधेव ॥ एभेयाज्ञानवल्मीक. रालकृतेजल
उयो ॥ मास्त्रपजीशकुर्यासु. नमहन्महादिक ॥ हनूलादवगृहा. दूमीका. मूषिककलाना ॥ यत्रयांनिखलोच ॥ ममनाच्चमदकृज ॥ ॥ कीलिङ्गमुदयशा. दामह
सुमदय ॥ उरयाद्ववदानेयो. मूत्रलोचयनिखज ॥ पोश्चयानेदलेकस्मिन्कनया ॥ सफमहिका ॥ अर्धपुरुनिमगाव. प्रथमासहिकासुता ॥ दिगीयावलिगीयावगद

क्षोपनिकीर्तिगा ॥ उपविष्टसुविनमूर्त. कर्तुंयसुनविन्दति ॥ सकुर्यादहलोचनुसुखलोचस्यसर्वदा ॥ दिवालोचस्यरात्राह्वयदापादाविधीयते ॥ सुसुखानुगथादिर्लुआरु ॥
कुर्याद्यथावलमावगमर्तुमसुमजा. मूत्रविदुर्लुविनमूखा ॥ एतस्मात्तुदुषिकावेदा द्वादशोत्तममलाशयावगा ॥ द्विमन्थन. गावकीर्वसमाचनेन ॥ प्रमार्गलोचसर्वो
या. नदिरेनूपोनिषाग ॥ लोचनुद्विविधपाक. वाद्यमोखनरैर्गथा ॥ मूकलायासुर्गवाद्य रावणुद्धिनिधयनभा ॥ निनावाभदप ॥ पूर्वदिश्यमृच्छाकुनामूर्वासुमृच्छाकु ॥ सुल
नलिहिनास्यमूपस्य ॥ अहरेनपुदनिना ॥ घालपय्यदनकर्तु ॥ अहृष्टानामिकाया ॥ वदू ॥ एतन्पुनःपुनः ॥ कनिष्ठाकु ॥ योत्रोहिदुदयनुगलेनवोसर्वोहिमुनिव
॥ यश्च. द्वादुवागुलस्ये ॥ अथायईषिसामानि ॥ क्षिपिवगृपीलयनूकमान ॥ अथवोद्विन्नसोपूर्व. द्विप्रमासुथयनारभा ॥ सुनिहासुपूनालनि. वेदोपनियथालेनमास
मूखनासिकेवार्य. भर्तुसूर्यगुनीद्विगशापालग ॥ निमथनाहि. वाक्केलदुदयस्य ॥ नूदमूर्द्धनिमालस्य. पोभत्यर्थगिरामूर्वीना ॥ नादूयमन्ववन्त. कवनवसुधानला
नामसुखेवत्रलेविष्मिर्द्विष्मकवदयभा ॥ वासुकिप्रमूखानागभन्जलक्षिपनियनूक्षिना ॥ यननाविन्देवायानि. रुगप्रमश्नेद्विज ॥ अग्निवायूसूर्याग्नि. गिनयोहुले

नवमस्तुवापिह नंदवाननृथां सुयोधननशा नहिमाजुल्लसिता विनयदुर्ध्वमानसः आगच्छन्मपि ननु मरुद्रं स्तुवा श्रीलिङ्गं श्रीमूर्तिना श्रीलीनदया दयाकाण्डादिकि लगथा
वसिष्ठो वसुनं शुभं स्नानं वा स्नानं वहिषि ॥ विधिस्तु सुयोधनी किं श्रीरुच्यते पोतु कदाचन आशुनं मलिनयत्र न सर्वं मे पग कुतो गृहीताने नमस्तु ल गाय सत्रानपातिना सकि
यदि लिनेर्ज्यां त्रकोपहनयेद्गर्ग ॥ अमादि ककु यदुर्क पापाद्य प्रकिग्रह मादू ४ ठनं यत्र मे किंश्चिद्वा दान ४ कायक मरि ४ पापना तु मनु दिन्दु वरु ४ सवह स्यति ४ सविगाच
रुगल्येव मूनय ४ सनका दय ४ आवक सुमपयर्क जंगलु यादि किं व ना किं पदया श्रीलीं मुं सु कर्वन्संक्षपण्यो लमा सुगोम मर्वनं कुर्यादुक्ता दीना ममत्तनी वक्रवेष्ट २४७
वनेष्टु साविर्मे नु वानु लेशा गलिङ्ग मर्वय ननु ४ सर्वान्दवान्मस्य वीनमस्तु नलपूषालि विन ४ प्रकु पथ कृ पथ कृ ॥ सर्वदेवमयं विष्णु हास्त नक्ष्त्रा थवा र्वयं दया
पुनश्च सुकन य ४ पूषा ल्यपुनववा ॥ अत्रिं गत्या दू गदिदं न न सुर्वे च वाचन मा अन्ध्या गालि के मीने ४ पूजय च जनार्दन मा आदावये पुदा गद्यं न गद्यश्च दिते पन मा
न ४ पूषा लिधू पा ४ उपहात रु लानिवा ॥ स्नानमं कुं लं वेव मा कुं नाचमन नथ ॥ जला हिम कुं लं यत्र गीर्थ स्य पत्रिक ल्यनी ॥ अयमर्थ ॥ हास्त नक्षि नावर्त न वा पुन ४ स्नानं

वनिगमिथनं सुनिर्दिष्टं महात्मरिशा वक्रकुरु विष्णु ॥ एवमनुवत्तानमिच्छां ॥ हृषी भवतु शुद्धं सनमस्तु नर्क सुगमा गृहीतं कगुणं ऊर्ध्वं नद्यानु दिगुलं सुगमा गवां
॥ मर्दं दगुलं अग्न्या गभं गताधिक ॥ सिद्धं कुरु शुभी ॥ र्वेषु देवनाय नं वृवा ॥ सहस्रगकाटीना मुनर्क विष्णु सन्नि ॥ पश्चिमं वगथा रा ॥ सविहा लमयथ अर्थ ४ पिह
देवमनृथा लां काटीना ॥ अपदि ॥ अश्वा पनं वक्रय ४ पिह य ४ सुगर्पली ॥ हा मा देवा वलि कुं गा नय ४ निधि पूजन मा वाक्र लीत्य ४ पुदा यार्थ ४ सुदुहि ४ सहस्रग
॥ सुपुल्लरु न सुर्ग मन्नदानं समाचन ॥ पूर्व मभूत मस्त्रीया लवले भो व मभूत ४ कदं कि क कषायां पयश्च पिग था न ४ ॥ मे कश्च रा लि रु यि सु म हा म्भु ४ विवर्त यं नं ये क
न स मे वायां पुयुर्ग कदाचन ॥ अन्तं वा क्रु ल स्यान्तं कुरु स्यान्तं पुय ४ सुगमा वंश्च स्यान्तं मवान् शू दान् नृधिर्न सुगं ॥ अमावा सी व स मू ॥ मासं मासां मेव वा ॥ गन्धी ॥ शेवल
द्वी ॥ व स ग नक्ष्त्रं गय ४ उद न गह पया नि ४ सस्य ४ सर्वे व मू ॥ नि ॥ य ४ पश्चि नि नि मा नुद ॥ अहि ता नि ४ सुड च ॥ ॥ गत्री मा पे ४ साम ४ विविध ४ न म्भु ॥ पा ल ४ अग्नि
कथा दि ४ निहा को न क न व ॥ अन्त व नाय म रू ॥ न पा म रू ॥ लि ल स्य वा रु व ल ग्ग प नि लो म मा य वा रु ग्ग सु ख ॥ न म रू प नि मा ॥ कुर्या हा सु ल रु क ली ॥ शेवल ४ अग्नि

[illegible]

यायूकास्तननाः सन्तर्गमिनः शान्तदासुखदुःखानां न च हृत्कालिकश्चन। सुकृता न्यवकुञ्जकः दूश्वानि वसुखानिया। धर्मार्थजीविन्यथा सन्तानार्थमेधुनीवदार्थयः०
नर्थार्थदूषवात्थनित्वनिग ॥ सन्तुषः कोनशक्रानि रूलमूलैश्चवेति कुमासेव नवहिलेत्थनसकृदवगमहर्ग ॥ लोरागूकोधः पुरुवति लोराडाहः पुनोहर्ग। लोराभा
हृश्यामायावमानोमत्सुनवव ॥ नागद्वयान्नकुधः लोहमाहमयाहि नशयशः भुनपर्वलोके यातिपापाविवर्तिनः दवनामूनयानागः गन्धर्वगुप्तकाहव। धर्मा
केपूजयन्तीह धनधन्यनकामिकमा नमनुवलवीथले पुत्रयापोनूषलपु। अलखलखनमेव सुकृतापत्रिदवना ॥ यथा मिषजलेर्मत्स्ये कुंश्चनः पदेकुं वि। आकाश २७०
पक्षिः हिनिह्ये यथा सर्वगुप्तवान्। सर्वसुखदयोर्थत्वं सर्वन्दिनविनिगृहः। सर्वगानिह्यवृद्धिर्त्वं। अयःपत्रमिदं सुतमा पश्यानिवागुना निह्ये याधर्मान्नवन्नवशः पूजाग
लसुनस्यवनेस्यजमनित्रथेकमा। कूलहोवक्रहागमेयः ४ पिरहागुनगल्यगः। हर्मिसेवगु। लपेनादत्तापापेऽप्युच्यते ॥ नज्जदनात्यनदानं किञ्चिदस्ति निभुमनिशा
लोच्योयाहिनादहा। कृत्स्नगानयेन कूलमा। नान्नदानात्यनदानं किञ्चिदस्ति वषधज्जननधायीगसर्वं वनावनमिदं जगत् ॥ कन्यादानं वशात्सन्तः स्यात्सीर्थः प्रकृतथा

हस्त्यथपादानिमलिनत्तवेसुधनाशा अन्नपानस्यसर्वोलिकलान्नाहं निषाजणी। अन्नात्पा। लवलकजः अन्नादीर्यधुनिः १५ निशा। कुपवापीनलागमदि अन्नामालिचका
वथेग। निःसफकूलमूह्य विष्कलेकिमहीयन ॥ साधुनादार्जनं पूर्णगीर्थादपि विनिगृहः। कालवन्तु लेनेगीर्थः सद्यः साधुसमागमः ॥ सख्यं दमरुपः सख्यं सन्ताषश्चक्रमार्ज
वमाः क्लान्तमादयादानमेषधर्मः सनातनः ॥ ॥ कृत्यादिमहायुना। लोमः पूठं धर्मसाधनः ॥ २१ ॥ ॥ वृकोवाच ॥ पोयश्चिरादिवर्द्धं नत्रका मोयमर्दनमामर्किका
विप्रेक्षानानीह मितायं दूताशनः ॥ माः क्लान्तकूलयेव। लुवीनानि निगृहः १४ यः १२ डाकि सुसंयुक्तसमादादुःखं द्विजः ॥ अहो नशाविनारुता पशुगश्चनलुभ्यमि। वि
प्राविशत्संयुक्त उक्तिश्चनकदाचन ॥ स्नानं जपश्च कर्तव्यं दिनस्यान्तवराजनमा अर्त्तं समर्पिकोकेण। लुब्धोददिह्यहमना ॥ यथपालिगलेकुं अहृत्यावायुनावय
१। अहो नशाविनारुता पशुगश्चनलुभ्यमि। विप्रेक्षानानीह मितायं दूताशनः ॥ माः क्लान्तकूलयेव। लुवीनानि निगृहः १४ यः १२ डाकि सुसंयुक्तसमादादुःखं द्विजः ॥ अहो नशाविनारुता पशुगश्चनलुभ्यमि। वि
वैभानोवाः प्रायलीपवाकं वादिजानीता विनिधनमा। पाजापत्यसु १२ उद्य पश्याः क्लान्तपत्रनन। यस्तुर्गुकेपकान्तं कुकुद्धं नस्यदापथेन ॥ गेवामपिवथाः कुंकुटुपा

सुखं शान्तं नृजगत् ॥ नकाहनिर्नवपूषा नरादण्डायायुषागुविष्णुर्धर्मनथः क्रियायाकसानहनादिपादविग्रहधर्मापीतगच्छाद्युगगर्ग ॥ वरुणगयायुधात्माकाः
 द्विजाः क्षेत्रज्ञाः पनाशाः गदादृष्टाल्यवृद्धाः विष्णुयासस्यवृषधकागदकनुयशर्वदः वरुणो विरुजुनपुनः ॥ शिष्टानां अपयामासः नामगैरुत्तानि वोधमः ॥ अष्टदमथपेल
 कुसामवेदसुजैमिनिमा ॥ अथर्वलं सुमनकु पूनालं सुगमववा ॥ असादेन पूनाभनि ॥ येत्रीशोह निववहि ॥ सज्जं प्रतिसर्जं ॥ वंशमन्त्रकनालिवावंशमन्त्रवनिर्देव पूनालय
 अलकली ॥ वाक्पादोर्वैष्णवे ॥ लोर्वैष्णवे वनकथा ॥ रुविषा नानदीयश्च पूनालं वरु विरुनमा ॥ मार्क ॥ १७५ यनं था ॥ अयं वंशवे वरु ॥ एव वंशो कोर्म मास्यं मन्त्रश्चैवायवीयम
 नकरी ॥ असादलं समुद्रिहं ॥ उक्ता ॥ ७५ मिनिर्हं गमा ॥ अथान्यपपूनाभनि ॥ मुनिर्हं कथितानि ॥ आद्यं सुनकुमात्राकां नावसिह मन्त्रपत्रमा ॥ एतीयं नन्दिमुद्रिहं ॥ कुमात्रा ॥ ए
 विर्ग ॥ वरुथं शिवधर्माख्यं ॥ साकान्दीनराधितं मादूर्वासमाकर्मा ॥ अथैनावदनाकुमनयनमा ॥ कपिलं माव ॥ अथैवागनसादिनमावका ॥ ७५ वात्रलश्च ॥ थ ॥ कालिकाक्षय
 भववा ॥ महेश्वरकथा ॥ अथैवागनसादिनमावका ॥ ७५ वात्रलश्च ॥ थ ॥ कालिकाक्षय

लोपंचदसु

विष्णुसंज्ञं २
दृष्टान्तरादि २

२६४ वासना
वाशिष्ठवैष्णव

सुखं ॥ गन्धर्वधनर्वदा ॥ विद्याकृष्णदण्डसुगता ॥ दापनाकनवहनि ॥ कुवाहावमपाहनानुकपादलिङ्गधर्मा ॥ कृष्णगच्छाद्युगगर्ग ॥ जनासुदायवाचा ॥ रुविषा निवनिर्दया ॥
 सुखं नृकुसुमं ॥ निदृष्टकं पूरुषगुणशालस ॥ अदिगासपि ॥ पत्रिवरुनकुसुमनि ॥ एतेष्वयदासुखं मनावृद्धीद्वियालित ॥ गदा रुतयुगं विद्या ॥ दानपसिधुवशयदाकर्मासु
 काश्चासु ॥ अकिर्यं गसिदहिनामा ॥ गदाशुगानकाह ॥ निजिजानी हिमोनकायदालारुहसकाया ॥ मानोदमाथमत्तनशाकर्मा ॥ अथिकाश्यानां दापनं नृकुसुमशयदामाषानिर्गु
 लिनिद्राहिता ॥ विषादनमा ॥ अमेकमाह ॥ यन्दिन्यकाकलिरुमसिह ॥ नृशसिन्जना ॥ कामिनः ॥ अष्टगणेश्वरकदकला ॥ विषा ॥ दस्युरुष्णजनपदा ॥ वेदा ॥ पाषाणदूषिता ॥ राजानश्च
 जाहका ॥ शिष्टादनपनादिजा ॥ अथवावटवा ॥ अथवा ॥ हिक्वश्चकदुश्चिनः ॥ अपहिनाग्रमासा ॥ अथिना ॥ अथला ॥ लपा ॥ ७५ सकायामहाहना ॥ अथैवागनसादिनमावका ॥ ७५ वात्रलश्च ॥ थ ॥ कालिकाक्षय
 रुह्याश्चपनिर्जुनया ॥ अथिलवृत्तमा ॥ अष्टाष्टपनिर्गुहिषा ॥ निपाव ॥ अथपजीविनः ॥ ७५ द्विग्नश्च ॥ नलक्ष ॥ ७५ पिषेव ॥ ७५ अदिजा ॥ अथुत्ताग ॥ ७५ जिना ॥ ७५ नि ॥ ७५ दवगा ॥ ७५ निधिपूजना ॥
 केविषा ॥ निक्लोपाफ ॥ नवोपत्युदकक्रिया ॥ ७५ पना ॥ ७५ जना ॥ ७५ सुखं ॥ ७५ दया ॥ ७५ अथ ॥ ७५ नका ॥ ७५ वदु ॥ ७५ जाल्य ॥ ७५ रागा ॥ ७५ रुविषा ॥ निक्लोपि ॥ ७५ य ॥ ७५ शिव ॥ ७५ क ॥ ७५ यन ॥ ७५ पना ॥ ७५ अ ॥ ७५ नि ॥ ७५

लकमात्रशानामालिजायन केशं ज्येष्ठनयनमा मृदुस्वस्वमूरुवसुत्वा दशमिमासिजायन नरसुवेषुवीमाया समाह्वयनिमाहिनी॥ वालवकुक्रमात्रलं योवनंरुद्र
गोमपिनेनश्चमनलीनदुः सुमवाप्रामिमानवशा प्रवर्तमानवकेमिनः सुमयनयटिचकुवनानवकायुनिमूकसु पापथानिषूजायन॥ पणिनायुनिगुक्राथखनथानिक्कंदुध
शानवकायुनिमूकसु रुमिर्कवनिपावनशाड पाश्चायद्यलीकनु रुलोश्चरुवनिदिजश नद्योयामनसोवायः तदुवापायसंययमा गदरुजायनं जनुषिशा ज्येष्ठामपानरु॥
मागापिनत्रमाकुम्यभ्रिकोर्सपुजायन॥ पिनोपीउयित्वा रु ककुपलनुजायन॥ रुहपिनुमपाश्रन रुद्विष्टानिनिषवर्ग॥ सापिमाहसमास नो जायनवाननामनशान्योसा २०९
पहलोनवकादिमूकाजायन रुमिश्रा सुसुयकश्चनवका नमूका रुवनिवाकसुविश्वसहलवनना मीनयानोपुजायन॥ यवधन्यानिहलारुजायनं मुखिकामनशपनवा
लिमर्वाकु रुकाथानाहिजायन॥ रुहलोर्योपसुजाकु कोकिलजायननवशगुवादिहार्योगमना रुकनाजायननवशा यद्वानविवाहाना विष्णुकलरुवगुरुमिश्रदवना
पिह विष्णुभमदत्तायानमश्न॥ पुयूकोनवकाहापि वायसर्मजायन॥ रुगकाश्चरुहानीन कपनिमोप्रराजन॥ रुहलुकाश्चनंरुह रुमियानोपुजायन कर्पासिकेह

नकोश्वक्रिहलवकसुथामयूनावर्ककंदत्वा भकंपाश्रजायन जीवजीवकर्मायानि नकुवसुपदुन्नवशा कृकृच्यनिशुहानगश्चनर्वर्गदत्तागभरुवगाषष्टकपाल
हवली काखदद्युलकीटकशा पूष्यापदद्विदुसु पदु योनापदन्नवशा भकहलवहानीन रुयहलववगकशा रुहदाननवकानुगला ज्येष्ठवादीनोदानभना हलगुल्ललगा
वल्ली रुकसावन रूर्गवर्जना पुष्यनुवकुभादशा गभसुवभ्रदिहा विभमाविद्यापहानीमूकश्च गलोवनवकान्वदुना असुमिद्धलोदुर्गव मुन्याग्निः समजायन॥ पत्रनिन्यादु
नद्येत्वं पत्रमेर्मापद्यदनमो नेरु योनिर्दुललक्ष पत्रदानी पसेवनमा पत्रसह नभलोवदवगानो रुकुत्सनमा निहे त्यावश्चनं रुकाय्यश्च रुलवधशाडपलकभनि
जानीयान मूकानान्नककादन॥ रुयादुर्गसुसमास पत्रलार्कपुनिक्रिया॥ सूर्यरुगहिनायकि र्वदपामाल्यदर्शनमा गुवृदवर्षि सिद्धि साधनं साधुसंयमशसु क्रियात्य
सर्गभेरीसेर्गिलालक र्णविदुः॥ अस्वाङ्ग यागविरुनाना पाप्रात्यानिकल यमा ॥ ॐ त्यादिमहापुनालीम नूकमेविष्णुकशा २३१॥ ॥ सुमरुवाच॥ वक्ष्येसर्गिमहा
योगं रुकि मूकि कर्पपत्रमा सर्वपापपुणमन रुकामूपविर्गल॥ मर्ग निमूर्लदुःखस्य नमभेगिव निर्वर्गश दलुया द्यनकाय ॐ ममाहमहामर्गिः॥ अहमिह्यदवोत्यनाम

ममिस्तुवानमहानाग्रहकेशावधयपुनदावादिपल्लवशाधनधन्यमहापूजा। नेककालप्रवर्द्धिगः। अथपुष्पपूष्यसुखदुःखमहारुलम्। नमूकिरुलवापीमूढसु
म्यकैभविनः। विधितोहृदमालासाहृदयज्ञानमहानृशासंसावाधयेविष्णुकाथवक्यासमागिताः। नानिज्ञानसमासीनासुखामात्यनिककृगः। थिरुसुतुङ्गपाषाणि
जिगनेमहानृशकिर्तोविद्याकृभनेलगगालयमीष्टवभा। पाप्यवन्नववर्नीसीर्नीवजस्कमेकलकी। पाप्यवन्नियनाष्टपुङ्ग। निर्वेतिर्वहिवर्जिता॥ मूर्हन्दिमयमूर्लनर्त्तना
ऊन्नवायहमा। नगमागदिकवावा। नेवाककवेभत्मको॥ केवापुष्पमिनाज्जुपेधानमिममावयाः। यगपयेहिङ्गुङ्गागर्तवागीयगुणत्मकः। मगकोदुस्ववापीकोमूक्षमत्स्या २४१
मृसागथा। नकेलेपिपृथग्भावसुथर्कशतनान्यप॥ ज्ञानपूर्वधिकायागमज्ञाननसहयागिनशामाकिवृक्षभयेकमेनेकपादनेष्टुले॥ गहृहयवसतिगहृहयनजी
वर्ति। यमूकयगदवार्कज्ञानमज्ञानमन्यथा॥ उपहागनपुष्पानामपुष्पानाश्चपाथिवकरुयानाश्चनित्यानामकामकवलाहथा॥ असुश्चयादपूर्वस्यकयाश्चायाजिगस्य
वाकर्मभमनूमायाकि। गवीनलयूननेवा॥ अहिंसासत्यमर्कयवृक्षवर्गयविग्रहोप्यमाष्टपश्चथनियमाः। णोर्वद्विविधमीविगभा॥ सकोषरुपसजिर्वावास्ववार्त्तनयमः।

असुनपद्मकाङ्कपालयामामनूजयः। अथैकविधिमपि। पूनकृमकवचकेशलद्यूर्वादर्गमागुमुदिगुलसुमश्चमशागिगुलभिरुमागतिवधमः। सुडदाह
गः। ज्ञानयुगागुर्कविपनीगहृगर्कः। प्रथमनजयस्वर्गमधमनववयथ। विपार्थिहृनीयनजायदावाननकुमाग॥ असनरुष्टयूजीनकेलावपुलेवद्वि
पाषि। थालिङ्गवृषालो। सगन्त्रकाग्रमानेसशावजसागसमावृहि। सुलेनवजससुथा। सकाग्रनिष्पलसुले। हितायुङ्गनयागविग॥ नृन्दिथालीन्दिथार्थस्यष्टपोलभदीमननव
वातिगृहसमेवाथन। पुलाहानान्यकुभेग॥ पालयामोदगद्वोवधोनभसुविधीयने। द्वधनलेमृतोयागमथारिस्तुवदलोहिशापोलभ्याद्वदयवागु। जिनीयावगथान
मिकल॥ मुखेनासिकाग्रनेरुम्यद्वैमूर्द्धनि॥ किञ्चिरुसाम्पयसिंध्यधनभयवमाः। सुगशदलेतोधनभः। पाप्यपाप्रात्यकवसाम्पनी॥ यथानिबन्धेसुद्विफलथासा
पेनमात्मनि। वृक्षनूयामहापुष्पमामिथकाद्वर्जयेग॥ अकावश्चनथकाया। मकावश्चनवर्ग्या। नगानवगुयामागः। सुतवाजसगामसाशा। निगुलयाजिगम्यानी। वाद्व
मागुगर्हकिगाशमभवीनिवविर्कया। गभधनस्वनसंशयाः॥ नृन्दिनदद्वैवृक्षपनमाक्षनसंकिगभा। अहवृक्षपर्वशक्तिः। सुलदेहविवर्जिता॥ अहवृक्षपर्वशक्तिः।

पञ्चपुष्पधरुलषुतायापुद्गलस्यसुदवसत्सुल्लेकलस्यपुत्रधयनालमुक्तेकथनक्रियनययत्तं॥आस्तादयनिपिगवपुनत्यनिपितामहावेष्टुवास्तु
कूलजागःसुनःसुनायिषाति॥अल्लानिनःसुनेवसमधिद्वियेनिर्यपाचिनापिलिष्टयालसुयाधनाद्यामकिङ्गताःसुत्रलमागविधूतपापाःकःसुंयःपत्रमरु
किमगाःसुनानामा॥अत्रलंरूपपन्नाथःआनयोगविवर्जितागपिमत्यमतिक्रम्यायानिगदेषुवस्यदं॥गवाकुरुक्लशदभगनाहनःपवित्रमनिन्द्रियनक्षेत्रपथेशानि
यम्यनवेरुविनाषसुदजिनसेकीदृरुकिन्नन्धनं॥विष्णुवर्चपर्ववृक्षःपिहृदमिहपुष्पावदसिद्धान्तमागेषुगन्तजानकिमाहिनाःवसुनिद्रादिसुनागनवतमिन् २१०
वनिपुमानुगतास्यसोम्यनूपशःकिमिनेसमनित्रम्यमात्मनाकःसुथयतिवात्रगयावसालपागः॥००॥आदिमहापुत्रालमात्रुहृदयवदुकिः॥२२३॥॥सुगड
वावा॥मुकिहृदुमनादेत्यःकःमजमकयमययभायानयनसर्वलाकस्यनमस्याजायगेनवः॥विष्णुमानन्दमेदंविद्वानंसर्वगंपुरुषाप्रलामोमिसदाहृक्ताःयतसाहृद
यालयभा॥यानुकिहृदंनलाषस्यपञ्चगीगःगुहागुहमांसवसादिलीसर्वेनमस्यपत्रमंश्वरम्॥साधनापिनमस्कात्रपयूकःअकेमालयासंसात्रकूलवन्धनामूदज

नकत्राहिसशाकृष्णसुत्रकूलधराःमुकिहीनस्यदेवकःआसीनावागयानावाःनिष्ठवायुगुरुवा॥नमानावायुलयनिष्ठल्लेकलस्यपुत्रधयनालमुक्तेकथनक्रियनययत्तं॥आस्तादयनिपिगवपुनत्यनिपितामहावेष्टुवास्तु
गवर्हिनी॥नेथापिनत्रकेथात्रेपनकीति किमदुर्गमाचुम्बुखायेयदिकाटिवकुःहृदयनवःकापिविष्टुद्वयगाः॥सर्वगुलनामयेकदशःवदेनवाधवत्रलस्यविष्णुः॥आसाद्योमू
नयःसर्वःसुवर्कामधूसूदनम्॥मनिक्रयान्निवर्तनंनगमविन्दगुलक्रयागुःअवलीनापियन्तामिःकीर्तिगंसर्वपागके॥प्रमोचिमुच्यनस्यःसिंहगुर्मेनेविवासरुद्वेप्रिगथ
नःहनित्रिष्टकवद्यभा॥वद्वःपविकवर्तनमाक्रायगमनंपुनि॥स्वप्ननिनामस्मृतिनादिर्यसःकयंकनोत्यद्वयपापनाशिभा॥प्रत्यक्षःकिंपूनवगुर्मांसकीर्तिगनामिजनादे
नस्या॥नमःकृष्णायुगानकःवासुदेवत्यदीविगभाथैर्हवहाविगविपुनगेयमयूरययू॥गमायाःलंजलवद्वःसुमहाहोस्तुनादयः॥कानिःकलत्रद्योयस्यनामसंकीर्तनं
हृदं॥कनाकपृष्ठगमनंपूनवाहिलेकलीकजपावोसुदवैमिमुकिवीजमनूरुमा॥गङ्गुर्गद्वमध्वनंहृद्वामूकिगयंगर्भापाथयंपुष्टुनीकार्कनामसंकीर्तनामृतमा॥नाम
००॥एवयाव्याहृकः॥द्वयानिगःगस्याकयाहृवन्नाकः॥पाकस्यापिलोचनका॥संसात्रस्यसन्दहःनिर्विधेकहृषर्जः॥कृष्णनिवेष्टुवमर्जुज्ज्वामूकोहृदयनवः॥॥

मनसायन्त्रागभवमागदयापार्थिनां ध्यानादयानिमधुसूदनशः प्रमादात् कुर्वन् पीसां पृथक् वृत्तधूनकुतः समन्तद्वयद्विष्णुः संपूर्णस्यादिनिष्कृतिः ॥ ध्याननसदृशं नास्ति ॥ ध्या
नम्यापकर्मणां आगमिदहहर्नादाहकायागपावेकः ॥ विनिष्पन्नसेमाधिसु मूक्तिमते देवमनापो प्रोक्तियागीयागमिदस्य कर्मवया विना ॥ यथाग्निवृद्धगतिरवशकं
दहति ॥ भालिनः ॥ अविहृष्टिना विष्णुः योनिनां सर्वकिलिषं ॥ यथाग्नियोगात् कनकं मयदायं यजायन् संप्रिष्टं वासुदेवेन मनसा लभ्यते ॥ गङ्गास्नानसदृशेषु पूज्यते
नकाटिषु ॥ यत्पार्थविलयं याति स्म न नश्यति न हन्यते ॥ पालयामसदृशेषु यत्पार्थनश्यति कुर्वन् ॥ कलमां लोकाप्यं हे भव्यानां तुल्यं ॥ एतस्मिन् यत्किंचित् मूढं ध्यानव
र्जितं ॥ दस्युर्हिर्मयि नैव युक्तं माकुन्दिर्गुरुः ॥ कल्पितवाद्वाक् ॥ किं योषणुनात् ॥ अकृयशान्कर्मयं मनस्य यस्यावतसिकेव ॥ सा निधिसु दहावर्तं स्यात् ॥ सव
न्दे माश्लक्ष्मणं देव विद्यायं यत्पुस्तकं गुरुविशः ॥ साहानिस्तमनश्चिन्तं स्वात्पजगत्सूक्तं ॥ यन्मूर्खं कलं वापि ॥ वासुदेवा न विमनः ॥ कलौ कृत्युगस्य कलिस्तु कृत्युग
द्वययस्य ॥ भविन् ॥ यस्यावतसिना यन्शयस्याग्रं लथापृष्टं गच्छन्ति ॥ यो विवा ॥ भविन् ॥ निलयं विहः ॥ रुतं रुतं ॥ सदेवसः ॥ वासुदेवं मनोयस्य जपहोमोर्चनादिषु ॥ य

202

स्यान्नायामेयं यदवन्दुत्वादिकं रुतं ॥ असमन्तात् वगर्हस्तु मग्न्या च महत्पशुनिरिवेषु वीमायां कलावार्पितमानसः ॥ कर्मा कुर्वन्निदेषु दयां मूर्ध्नि मानवाः ॥ मूढ
धर्मशीलं ॥ भविन् ॥ दयस्ते ॥ ध्यायन्नात्रोयलन्दर्वस्त्रानादिषु च कर्मसु प्रायश्चित्तं हि सर्वं स्यात् ॥ दृष्टं रुतं वविष्णुमिश्रं ॥ लोहं वज्रं यस्मिन् कुरुष्यात् ॥ मारुतं यथा मि
न्दीवनश्च मादयस्तु जनाद्वनः ॥ कीटपक्षगणना ॥ हनो सन्यस्तं गता ॥ दुर्धमवगतिर्मथ ॥ किं पुनस्तानि नानृणम् ॥ वासुदेवगुरुकाया नागिनी नान्यमिदं ॥ न न काङ्क्षा न
मर्त्तं सुकिमर्थं न सुचरं ॥ न वदुर्वा ससः ॥ भवा वजाश्च पिण्डी पण्डितः ॥ हेतुं समर्थं न सखः ॥ दृष्टं रुतं मधुसूदनशः वदन्ति स्म ॥ नृणां स्रक्त्या कर्म कुर्वन् शनापयानियदा विना सि
द्धां मन्त्रां ध्यायन् ॥ यः सदा स विह मलु लमश्च वहीना नायलः ॥ सुत्रे सिद्धासनसन्निविष्टः ॥ कयूत्रवानकनकुलवान् किं वीढी ॥ हात्री हि वलभयवपूर्यगश्च वकुः ॥ किमगुह
हाकनले ॥ युष्माकमधुना हविमा स्मन्तं हन्तिर्न विष्णुः ॥ मल्लिषद्विना पदम् ॥ न हि ध्याननसदृशं पवित्रं मिह विद्यते ॥ यथा कषु पि कुक्षिना ॥ व्यापीने वागलिप्यते ॥ यदा विहं
मासकं ॥ ऊर्जा विषयं भवन् ॥ यदि नायायल्यार्थं कान् मूर्ध्नि वन्दन् ॥ पृथक् मिह हृदयं सुहृत्मा गुमलभवन् ॥ वचसा मात्सवं द्यं ॥ नृणां वृक्षसंक्रिन् ॥ गङ्गा नयानवा

धीनयागिनीयाकियलयीसंसावकर्मलभयनयाकिनिर्वीजनीदिऊ॥ ॥ॐत्यादिमहापूवालगभूठं ध्यानसु नि॥२३॥ ॥सूतउवाच॥विष्णुविष्णुवैष्णवकुरुमाजानं
नमस्तदा॥नमवेष्टानिमैकेवमासानंदनित्यवशातस्त्वनयगुणविन्द॥सकथायुक्तंशर्वशक्तंमयुरुदथयकिमर्थवदुहाविर्ग॥साडिकायाहविष्णोनिर्गच्छितंयुरुदयि
नीगावैवकेवलोल्लस्यो॥योगपूजाकनोको॥प्रणममीशस्यजिन॥रुलंविदूस्सुदर्वेनपालिरुलंदिवीकेस॥केनववेद्यमासाद्यदयाधिविवनश्रियायुक्तिश्चिन्तुनूक
मोपूत्रय॥साधुसोधुवा॥सर्वनावायलन्यस्यकूर्वन्नपिनलियागं॥हृणदिचतुवस्यार्कंरुगभर्मवतुविधमा॥वनाचरंजगत्सर्वपुस्यमाययाविहायसिंहसुसमनिनीयागि २॥२
नवर्कस्वर्गविद्यस्त्रिभुवनविद्यायुनिवलिनात्ममनसावक्त्रपिलाकायक॥मूर्तिवगसिंहसिंहजगन्धिया॥यूसान्दयात्ययय॥किश्चिन्तयदयंप्रयागिविलयंगुशुनकीर्ति
॥महोपायपथनयनकीर्तिखिलंभुवनास्यविष्णु॥पादनं॥निकशिरपुवृद्धागि॥अग्निकार्यंऊर्ध्वस्तानंविष्णुध्यानपूजनं॥गर्भं॥दू॥खादध्यायं॥कुर्यथं॥गवनि
॥॥नाहुस्यजवर्णनाजापिनवावलकस्यवाधर्मस्यसर्वमहार्त्तानां॥सर्वस्यजवर्णहविशायनमनिजगद्यानि॥वासुदेवंसनागनभूानगं॥विद्यमंतीर्थमधिकंमूनिस्सुम॥अनघं

ननुपूजाकुंकुर्यात्साध्यायभववागमवादिभ्यगमविन्दध्याननिह्यमगन्धिर॥॥ॐ॥वागवदुक्तंनिखदिष्यपर्वगथादिज्जानिसर्ममन्त्रनयागिनवर्कनवशाआदयला
यदोक्तोक्तिधनवर्कधनेकयागथावृद्धिथकुरुत्रिकोनखगवधना॥यथाजानवलावक्तिदेहसादमिवधनमागथाविध॥विष्णोविष्णोयोगिनांसर्वकिलिखी॥आदीर्घपर्वयदना
प्रयक्तिनपादयशतद्वत्यापातिसर्वालि॥यागमस्यासवननवमायस्ययावांशविष्णुसगस्यसिद्धिश्चोक्त॥प्रगावातिनिर्वेगस्यपराव॥पत्रमीयगं॥विद्वेषादपिगमविन्दयमयावा
त्मज॥सुनानागिपुपालागगुरुलंकिपूनसुगुपनायल॥अयन्देवोमूर्धन्य॥प्रणवक्त्रारुहस्येति॥ॐ॥त्याखाजायगंतावन्यावन्त्रायगंरुनिभू॥ ॥ॐ॥त्यादिमहापूवालगभ
॥ॐ॥विष्णुमोहा॥२३॥ ॥सूतउवाच॥नावसिंहसर्ववक्षुजिवाकं॥भेनकाधुना॥पूर्वमाहगलभ॥सर्वं॥जकर्तवाक्त्रमकुवन्॥रुगवन्तुद्रियाम॥स॥स॥दे॥वा॥सु॥न॥मान॥व॥ल॥गु
पुसादाहुगत्सर्वं॥नदनुकुरुमहसि॥ ॥ॐ॥सूतउवाच॥रुवगीरि॥पूजा॥सर्वं॥वदलीयानसंशयशतस्माद्यो॥नादहिपायानमन॥गी॥धु॥नि॥व॥ल॥ग॥मा॥ॐ॥त्यवर्णकन॥भके
मनोदसुगुदवशरुदयामासुवद्ये॥मुलाकं॥सवनचनमा॥ललाकुरुमा॥ल॥गु॥द॥मा॥ह॥ग॥ल॥न॥वे॥॥न॥सि॥ह॥व॥पि॥ल॥न॥दे॥व॥सर्व॥रु॥ग॥व॥ह॥व॥मा॥दे॥त्य॥न॥वे॥का॥व॥धिन॥हा॥वि॥गा॥ग्र॥महा॥सु॥व॥मा॥

नमनसा माहिगानसमनस्यपि॥ यदागस्यकृतावनि सुखकिविमिकथाना॥ जगगयस्यनागनीनमाहा मरुमसुथा॥ उत्तयगननजनाकि॥ शब्दादिविषयान्वशी॥ इन्द्रियालिसमाह
 ह्यविषयाशोमनसुथा॥ वृद्धाहक्यनमपिचपुकेत्यावृद्धिभववा॥ मयस्यपुकेनियापि॥ विदुक्काकेवलसिक्कशापथ्यात्तनिवात्मान॥ नात्मानामपुकाशकुमाविदुत्यम
 मूर्तशुद्धि॥ निश्चिन्त्ययापकंशु रुमा॥ तुनीययानवक्ताया॥ माहिगानोमनसंयश॥ शब्दादयागुलभप॥ सेतोद्यासुगुलभसुयशापूर्यसकस्यपद्रस्यपूजायशोशानिवास्या
 म्यावक्तागुलकुतापुकेनिसुवकोलका॥ कर्तुकोयासिक्कजीवा॥ दहविदुपुनवहि॥ पूर्यसकं पवित्यसु॥ पुकेनिसुगुलभनिका॥ यदोयानिनेदाजीवायानिमूर्किनसंश
 यश॥ नीचलवदुक्कीर्णा॥ कर्मवृद्धिन्द्रियालिर्ण॥ विपश्चकंविनस्यन॥ यानिपूर्यसकंसह॥ सन्नाद्यककुजीवनथागमिकं विमूर्किहोका॥ पालयामाजप॥ श्वेव॥ पुत्याहावा
 थक्षत्रिली॥ ध्यानसमाधिविचिन्त्यन॥ षड्गगस्यथसाधकाशा॥ पापद्वयादवगता॥ प्रीतिविचिन्त्यसंशयमा॥ मनसुक्किवगार्गस्य॥ सुगुलाकेश्वसर्वदा॥ गमयग्रापुलवताथ॥ माग
 यापुलासंयमशऊपध्यानगतागको॥ विपरीतहृगकशा॥ षड्गगनाहकश॥ श्वगुर्विगानिमाहकेशम॥ ध्यादशमागसु॥ उकारसंनजप॥ शुद्धायथावगुसस्य॥ श

२८०

कंगेयोनिर्मूखा॥ पुलववकृणं नद्वनपर्ववक्त्रनसंशयशा॥ वावकपुलवकृणं॥ वाचवक्त्रपुमीदनि॥ अह्राकनश्चऊकवागमयगीदादशक्रना॥ सर्वेषामिन्द्रियलभुपुव
 किंविषयमकेया॥ निवृत्तिर्मनसागस्या॥ पुत्यादावपुकीर्तिनशा॥ इन्द्रियालीन्द्रियार्थस्य॥ समोदयसिक्कगीहिसंशमनसासहवृद्धावपुत्याहवसंसिक्कशा॥ पालयामिदोदश
 रि॥ योवगुरुलिकुगोरुवे॥ यस्मावगुकालेपर्यसु॥ मनावक्त्रलिधनय॥ गत्येववक्त्रलभपुकी॥ ध्यानदोदशधनलभ॥ द्वादशध्यानपर्यन्तं॥ कालवक्त्रलियाननशा॥ निवृत्त
 यनायुक्ते॥ समाधि॥ साहिधीयन॥ श्रयान्नवलनयस्य॥ मनाहिश्रयनोरुगी॥ पायावकृधिकुर्नकालं॥ यावत्साधवत्सासुगाशा॥ ध्यानासुकी॥ मनोयस्य॥ श्रयभवानूपश्रमि॥
 नान्ययेदार्थजानाति॥ ध्यानमनस्यकीर्तिनमा॥ श्रयमनानिश्चलगा॥ यानिश्रयविचिन्त्यन॥ गध्यानपवर्मपुकी॥ मूनिहिद्वोनविचिन्त्ये॥ श्रयभवदिसर्वे॥ श्रगान्नय
 नागती॥ पश्चनिद्वेनवहिर्न॥ समाधि॥ साहिधीयन॥ मनसुक्कल्यवहिर्न॥ मिन्द्रियात्मानविचिन्त्यन॥ यस्यवक्त्रलिर्णलीर्ण॥ समाधिसुसुदाच्यन॥ श्रयन॥ पवमात्मान॥ मान
 ह्यस्ययागिनशा॥ मनसुक्कल्ययगायाति॥ समाधिसुपुकीर्तिनशा॥ यिरुत्यासिक्कवगकुनि॥ इमनस्यसमादना॥ यागिनाकथिगादोषायागविद्वपुवर्तकाशा॥ ह्येथमनसु

पूर्वैः कूलवृषै विविक्तयः॥ यत्ननिष्ठैर्लुङ्गैः सुक्ष्मापि क्लिप्तैर्बुद्ध्या न विना यत्र मात्मानं किञ्चिद्गुणविद्युतं॥ विश्ववृषैर्नमवेकं॥ निष्कालानमूकनिष्ठं कारं परं वदन् आथ
यत्नैः क्लिप्तैर्विदुः॥ केचन केचन हि नृजयं मोहनेनानि न माह दिसाञ्चैकं यद्वै पुष्पाननस्य वा यवि॥ न मावज्जुलु आसत्॥ मण्डलनिर्गम्य कमागुरुः पुनरुक्तिं न सि न्युत्सृज्य जीव
संक्लिप्तं॥ नृत्तापविशुलेष्वर्थैः मरुपुत्रं सनातनं॥ क्लान्तं के लूकाग्नौ विह्वलं कज्वरं मृगं विनाशमलितं लूकं॥ वैष्णवाधर्मोऽहं मशकं कर्तुं कार्यं क्लिप्तं नृजयं जीववनिष्ठं लूकं॥
आथ त्वेव सिंसयूकं॥ माकर्तुं मूकं साधकं॥ योकावकं वपुः॥ क्लिप्ता मागश्चकीर्तिनाशा अहं मागपर्ववदन्॥ क्लेयाश्चात्मविदूहं मेशध्वनयदि लयं नृपालनया निवदन्॥ लयं सोल्यं २६१
॥ हविर्मे क्लृप्तं यदहं॥ आयन्यागीव मूकं॥ साकाशात्मानमात्मना केचिन्॥ पञ्चनिष्कानवदूषणं॥ सारवदूषणं॥ यथा जना नृपा यानि नृपा वदन्॥ प्रकाशकं क्लान्तं॥ हववन्धविहं
यकं॥ नृजयं क्लिप्तं॥ नृत्तापविशुलेष्वर्थैः मरुपुत्रं सनातनं॥ क्लान्तं के लूकाग्नौ विह्वलं कज्वरं मृगं विनाशमलितं लूकं॥ वैष्णवाधर्मोऽहं मशकं कर्तुं कार्यं क्लिप्तं नृजयं जीववनिष्ठं लूकं॥
पुसाधकाशा विलम्बजनकाऽसर्वं॥ विलम्बाऽपि कीर्तिनाशा जिह्वा लल्लसिद्धिमायं॥ स्मरन्मह्योऽसंज्ञेन वा॥ अगुमाऽसर्वं॥ पूर्वैर्नृपवतः॥ आगमस्यासं पदं॥

पञ्चन्यात्मानमात्मना॥ सर्वैर्लुङ्गैर्बुक्तावर्णैः विद्वर्षविषयैश्च॥ गुफागिरिभद्रादिभ्यः कूर्चन्यागी विमूढा॥ नृद्विषये विन्दियात्मांश्च॥ नृजनानि नृपा यदा॥ क्रावदुक्ता
लीना॥ यागयूकं रुदा हवेन॥ सर्ववर्णैः॥ म्रियऽसर्वैः॥ कृत्वा पापानि रुम्भसा॥ आनाग्निना मलाऽसना॥ लहर्कं पत्रमाह निभू॥ मथनाद्दृष्टं॥ म्रियः॥ यद्वद्वाननवेह निशवद्वान
लेनायदकलं स्याग॥ अहं मोहमश॥ वाक्केनृपायैर्न मूकं॥ नृत्तापविशुलेष्वर्थैः मरुपुत्रं सनातनं॥ क्लान्तं के लूकाग्नौ विह्वलं कज्वरं मृगं विनाशमलितं लूकं॥ वैष्णवाधर्मोऽहं मशकं कर्तुं कार्यं क्लिप्तं नृजयं जीववनिष्ठं लूकं॥
नात्मन्यात्मनूपत्वं॥ मसगऽसत्सुपना॥ सुखं हवेन थासोर्था॥ मायाविद्याविनाशिनी॥ विपरीतयूकं दास्या॥ नामूकं वदन् वाचं वदन्॥ वदन् गीतं वदादिस्य॥ पुनराह ह निशपुत्रा॥
॥ ॥ नृत्तापविशुलेष्वर्थैः मरुपुत्रं सनातनं॥ क्लान्तं के लूकाग्नौ विह्वलं कज्वरं मृगं विनाशमलितं लूकं॥ वैष्णवाधर्मोऽहं मशकं कर्तुं कार्यं क्लिप्तं नृजयं जीववनिष्ठं लूकं॥ २४२॥ ॥ श्रीरुद्रवामुवाच॥ आत्मज्ञानं पुत्रं शुभं॥ नृत्तापविशुलेष्वर्थैः मरुपुत्रं सनातनं॥ क्लान्तं के लूकाग्नौ विह्वलं कज्वरं मृगं विनाशमलितं लूकं॥ वैष्णवाधर्मोऽहं मशकं कर्तुं कार्यं क्लिप्तं नृजयं जीववनिष्ठं लूकं॥
यागसम्यक्ता॥ क्लृप्तं मूकं॥ निवन्धना॥ सुखदुःखं॥ रागद्वेषऽदिगमनमूकं॥ अग्नीनावद्वमागमि॥ कर्मनश्च मित्राधनं॥ सदिवात्र कृत्वा वि॥ क्लिप्तं सनातनपादपं॥ क्लान्तं के लूकाग्नौ विह्वलं कज्वरं मृगं विनाशमलितं लूकं॥ वैष्णवाधर्मोऽहं मशकं कर्तुं कार्यं क्लिप्तं नृजयं जीववनिष्ठं लूकं॥
नाग्नी॥ र्थेन लेख्यं पत्रमम्यदं॥ रुज्जुं सप्तसप्तं॥ मायाविपुत्रमूकं॥ अग्नीनावद्वमागमि॥ कर्मनश्च मित्राधनं॥ सदिवात्र कृत्वा वि॥ क्लिप्तं सनातनपादपं॥ क्लान्तं के लूकाग्नौ विह्वलं कज्वरं मृगं विनाशमलितं लूकं॥ वैष्णवाधर्मोऽहं मशकं कर्तुं कार्यं क्लिप्तं नृजयं जीववनिष्ठं लूकं॥

भानकः स्वयमनुपविष्टवान्। त्रयद्वयं हनः साधुः पानास्मात्तु गंगा हयमा। वेदाहमर्गपूरुषः विदुषं नमसः पत्रमासाहमस्मीतिमाकायः नान्यः पक्ता विमुक्तः॥ शुवर्गमन
 नं ध्यानं सयमानाः साधनं मायकृदानं नयसीर्थः वेदेमर्कितैल्लयनं॥ व्यापनकेन विद्वान् पुत्राकर्मोदिरिनेवादि विधिवंदवचनं कृत्तकर्मयुजं निवा॥ यज्ञादमा विमुक्ता
 र्थः निष्कामाना विमुक्तः॥ अनेकस्तनलु दार्थः दार्थलेवाकनय॥ एकनजना नाना नृकिनलेन गविना मायागुत्राश्च कथागमश्च विपाथोगीकृत्ता दूवाशा कर्मभव
 धर्मेजनुः कृत्ता नमूकं नवाकं वे॥ अस्मत्कृतमाश्रयं दे॥ अस्मत्कृतं यननयथा॥ यथा सर्वपुमूयानं कामायस्य दे॥ दिक्षिणाशान दामृतमाप्नोति जीवन्नेवेन संशयः॥ वाप
 कलाकं कथयति कायानि कुशया निवा अनकलान्तसदः॥ अस्मि अमूर्तत्वाद्गुणिः कृत्तः॥ अद्यत्वात्तत्कीयास्ति वेधत्वाद्युताकृत्तः॥ अकादिर्देयदार्थस्य मनिवागनि
 संस्तिर्न॥ कथमाकाशकल्पस्य गतिर्वोगनि संस्तिर्न जायते स्वप्नसुषुप्तः॥ मायया पत्रिकलितं मा॥ विषयं जेसकं पार्क यत्तु वीर्यमखलितं॥ यथा न प्रियमात्मानं सु
 र्वेषां॥ अथपियशा वाधमा॥ अथपि वि॥ सर्वेषां अथमने॥ सर्वदा सर्वकृत्तानां सर्वेष्वेव महामने॥ नाहमग्राहमिहानं गत्वा नृपूतं निवक्तव्यमाज्ञादृष्टं स्वप्नदृष्टं

२५२

सोसूर्यसुखमवच॥ सवर्गविस्तारार्थस्य तास्मिन्नस्य जायते सत्यमस्तु नथत्यलुः सुग्रीवपत्रं तथा॥ नास्मिन्नसुखदूखानां सर्वेषां वदनकथमा सदा सर्वं सर्वकृत्तः सर्वस्य
 हृदयनव॥ साक्षिहृत्तः समाश्रित्य को जानाति विवक्षितं मा॥ सत्यकृतं नहिर्न स्यात् न सत्यं जानते पृथक्॥ नानन्या न पृथगननं नखमानन्दः पृथक्॥ त्वमवपत्रमवुक्तः सत्य
 कृतानादिलक्षणं॥ अहं वक्तुं पत्रं न त्वं कृत्वा अखिलं नृवेन॥ यत्थेकमृत्तमयं कृतं कृतं मं न च वाचने मा॥ यत्थेकदेममलिना सर्वहं ममयं हवेन॥ कृतं न केथेवमीरान कृतं
 नान्यखिलं जगत्॥ यथा नृकावदाषलं वक्तुं सत्यं दृष्टं॥ यथा स माहदाषलं अस्मात्सत्यं दृष्टं॥ सत्यं धेवादि हिर्दे वन्यथा वक्तुं कल्पनमाश्रमादिनृपनामाश्र
 वन्यथा सोपकल्पनं॥ पत्यकृमपि मृदुयं दृष्टं मिवहाषनं॥ यदादिनामनृपाश्रं वन्यथा कल्पितं यथा॥ पत्यकृमपि विदुषं दृष्टं मिवहाषनं॥ यामादिनामनृपाश्रं व
 न्यथा कल्पितं यथा॥ तथा हि नृवृत्तं गच्छति कावजं नृकथा मृगहृत्तया यथा कृत्तुं कृत्तुं विदुषेयथा जगत्॥ गृहा विक्षादिजः कश्चि कृत्ताहमिति मन्यते॥ गृहनामत्यूनः
 स्वीयं वक्तुं यमन्यते यथा॥ माया विस्तृतं यथा जीवा दहोहमिति मन्यते॥ माया नाशमत्यूनः स्वीयं वक्तुं वक्तुं वक्तुं वक्तुं॥ गृहनामत्यूनः नान्यं कृतं न वक्तुं॥ स्वप्न

दर्शनाच्चायं मायानाशमरुत्तमविना अनादित्वं समं द्वायां सुवृत्तकदिलक्षणां मानकं सर्वं तथा गीविवाचनं नृमया ॥ अर्द्धादिसंख्यादिः समुवाच्यमायया मध्यक्या
द्विधा सत्यात्पनिष्पत्ती मूर्खदेवगते ॥ अस्मादिना निरुद्धं सुखं गुणविद्यार्थकं विना वदुःखं निलक्ष्यं न वना नीरुगानिव ॥ श्रीबुविर्नृपविना निःखं घटं मायया यथा ॥ अदावने
न सन्त्येनो मनुष्यक्रियादयः ॥ मुनीव कल्पना काले न मुनिपत्रमार्थं गणयथेव यथदयः स्वप्ने मुनीवनेव सन्ति ॥ तथा जगदवच्छायां लूगानिव सन्ति वेदेन च मायया
हा निजाग्रहसुप्रपदद्वयं ॥ एकमेव परं वदन् स्वप्ने तु यं पदद्वयं ॥ सुषुप्तमवलं रूपं तु नीर्यं शुद्धमयम् ॥ माया विवाचसिद्धेव विवाचं विविलीयन् ॥ अत्यन्तं हि नासायिक २६३
त्यना कालवेहिनी ॥ एवं द्वाया मनादित्वा सिद्धं मेकस्य सिद्धना संगतिं त्वं साक्षि त्वा दक्षि त्वा त्रसत्यगं गण ॥ ज्ञानकं नायनकानं ॥ पूर्णं न ॥ सुखमात्मनः ॥ नित्यं
वोदजा गेहं मज्जं त्वादमृगं कुरु ॥ दीपवद्वयं यथा निःवहं वद्वयं मूकनाम ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहापूना ॥ गण ॥ सुखं ज्ञानं समाप्य मा ॥ २४३ ॥ ॥ ह्यगवान्वा
व ॥ गीता सार्थपुवश्चामि ॥ अर्द्धं नाथा दिर्नपूना ॥ अस्माद्विद्योगयुक्तं सर्वं वेदान्तमानं ॥ अस्मादहं यथाना न्य ॥ अस्मादहं दिवर्जितं नृपादि मा न्येहं न ॥ कन ॥

दिलाचनी ॥ कवभावा मनाधीन नृपा लभ्येन नृगण विज्ञानवहि नृपा ॥ सुषुप्तं हि प्रतीयन् ॥ नाहमात्मा वदुःखादिः सीमा नाहिसमन्वित्या लूलाया दिधर्मविशिष्टा
हवेदितं नृपत्रं मा ॥ विधूमं वदी फाञ्चि वादित्यं वदी किमा नृविद्युनाग्निविवाको ॥ दृष्टं कुरु यथा तमि ॥ एतद्वादी निन पश्यति ॥ सर्वमात्मानमात्मना ॥ सर्वं नृप
दर्शान्विदं नृपला मोनि पश्यति ॥ खाना नृमनसा रग्मी ॥ नृदासम्यद्वियुक्ति ॥ यदा पुका गेहं द्वात्मा ॥ यद्वदीया हेलनिव ॥ ज्ञानमूत्ययं नृपसा ॥ ये द्वात्मा पश्य कर्म ॥ यदा दर्श
न लपरं पश्यत्यात्मानमात्मनि ॥ ॐ नृियाली नृियाथं ॥ महा रूगानि पश्य क ॥ मना वृद्धि वहे कान ॥ मद्यकूप नृषकथा ॥ पश्यंस्वयापना वाफो ॥ विमूर्खे वं नृना हवन् ॥ ॐ नृि
यग्रममखिलं ॥ मेन स्यादि निवेद्यं ॥ मनस्येवा ग्राहकं नृपनिष्ठा ॥ यवपा लुव ॥ अहं कथं नृथा वृद्धो ॥ वृद्धिश्च पुरुषा वपि ॥ पुरुर्निपू नृषकाया ॥ पूनृषवृद्धि निनृषं ॥ अ
हं वद्वयं पश्यति ॥ पश्यंस्वयाय दिमृयं ॥ दिदोद ॥ नृय ॥ स्वानां य ॥ पूनृष ॥ पश्य विनृष क ॥ विवका नृक वली रूग ॥ यद्विज्ञानमनृपश्यति ॥ न वद्वयं मिर्मगह ॥ मित्रा ॥ पश्य
साक्षिकं ॥ कुरु रूगानि विद्वान् ॥ यविदसपत्र ॥ कवि ॥ अश्वमेध सह मा ॥ लि ॥ वाजपयसा निवो ॥ ज्ञानयकस्य सर्वाणि कला नाहं निषा ॥ ॥ ॐ ह्यादिमहा

[illegible][illegible]

१९/१२/२२
१/१/१
२/२/२

आशा सरकाथ

2056 J

ASHA ARCHIVES

आविष्कारपत्र २२ ३

१४ सर्वनामादिविचारण ३०

४ वास्तुसंघ ४२

आहुतिके ५७

१. रुद्रपुराणस्य	२. आशुकोष्टं	३. वेस्त्रवर्षेत्तरं	४. विषहरमंत्रः	५. त्रिपुरापूजा	६. श्रीधूरपूजा	७. दुर्गापूजावर्ति	८. विष्णुपवित्रारो	९. अष्टौगयोगः
१०. प्रश्नकथा	११. दीक्षाविधिः	१२. योगः	१३. मंत्रचन्द्रम	१४. आसनपूजा	१५. पंचतार्चनं	१६. सूर्यविष्णुपूजा	१७. ब्रह्मचाननं	१८. गायत्रीविधिः
१९. विष्णुनोक्तं	२०. श्रीपूजा	२१. विष्णुसहस्रनाम	२२. विष्णुसहस्रनाम	२३. कुडिकापूजा	२४. सुदर्शनपूजा	२५. माहेश्वरीपूजा	२६. वामदेवमूर्तिपूजा	२७. दानधर्मः
२८. महादेवप्रश्नः	२९. भासः	३०. सूर्यपूजा	३१. पंचवेवङ्गपूजा	३२. मंत्रविधिः	३३. हयग्रीवपूजा	३४. कालरात्रिपूजा	३५. विष्णुपूजा	३६. ग्रामाश्रितं
३७. मन्त्रपत्र	३८. मुद्रा	३९. मृगंजयपूजा	४०. शिवपूजा	४१. गोपालपूजा	४२. भासगायत्री	४३. पवित्रारो	४४. देवव्रतिका	४५. अष्टनिधिः
४६. मृष्टिः	४७. प्लानुक्रमः	४८. कालविचारः	४९. गंगापूजा	५०. त्रैलोक्यामोहनं	५१. सिद्धा	५२. विष्णुपूजा	५३. वारधर्मः	५४. भूगोलः
५५. वंशावलिः	५६. प्लानुक्रमः	५७. कालविचारः	५८. गंगापूजा	५९. त्रैलोक्यामोहनं	६०. सिद्धा	६१. विष्णुपूजा	६२. वारधर्मः	६३. भूगोलः
६४. सूर्यादिमंत्रः	६५. प्लानुक्रमः	६६. कालविचारः	६७. गंगापूजा	६८. त्रैलोक्यामोहनं	६९. सिद्धा	७०. विष्णुपूजा	७१. वारधर्मः	७२. भूगोलः

१०१ ज्योतिष्यक्रीडा १०२ पवनविज्ञयः १०३ ईदनीलपः १०४ स्फटिकाः १०५ चतुर्देशमनुविचारः १०६ वर्णधर्मः १०७ दानविधिः १०८ मिश्राधर्मः
 १०९ श्रुतीलक्षणम् ११० वज्रपरीक्षा १११ पुष्परागयः ११२ रुधिराक्षयः ११३ पितृसंवादः ११४ गर्भाधानं ११५ श्राद्धविधिः ११६ कर्मविपाकः
 ११७ पुष्पफलपः ११८ वेदार्थमणिपः ११९ विद्रुमपः १२० पितृस्तोत्रं १२१ ग्रहस्थधर्मः १२२ दुःखप्रदर्शनम् १२३ प्रायश्चित्तं
 १२४ श्राद्धादि १२५ नवग्रहशान्तिः १२६ प्रेतशौचं १२७ पात्रादिशुद्धिः १२८ बाणप्रस्थाश्रमः १२९ पराशरश्रुतधर्मः
 १३० श्राद्धादि १३१ पितृस्तोत्रं १३२ हरेर्ध्यानं १३३ गयामाहात्म्यम् १३४ सर्वतीर्थमाहात्म्यं १३५ विराट्स्थानविधिः

१३६ नीलसारः १३७ ब्रतविधिः १३८ अनेगत्रयोदशी १३९ अखंडवा दशी १४० अगस्त्यार्घ्यः १४१ रत्नतीयात्रतं
 १४२ एकादशी १४३ व्रतपरिभाषा १४४ दमनकादिपूजा १४५ दंष्ट्राप्रहरणपंचमी १४६ मरीचिसप्तमी १४७ गङ्गाधरपूजा
 १४८ मासोपवासः १४९ मीषपंचकं १५० शिवरात्रिः १५१ एकादशी १५२ गङ्गाधरपूजा
 १५३ पंचम्यादिब्रतम् १५४ शोहिण्यष्टमी १५५ अशोकाष्टमी १५६ महानवमी १५७ वीरनवमी १५८ दमनकादिपूजा १५९ दंष्ट्राप्रहरणपंचमी १६० मरीचिसप्तमी १६१ गङ्गाधरपूजा
 १६२ दिग्दशमी १६३ राजवैशाखः १६४ वीरनवमी १६५ सोमवैशाखः १६६ श्रवणवा दशी १६७ सीतामाहात्म्यं १६८ दमनत्रयोदशी १६९ रामायणं १७० सर्वतीर्थब्रतानि १७१ हरिवैशाखः १७२ भारतं

१७५ मूत्राधालः १७४ कुष्ठचित्रादिनि. १७६ स्वरादिविकिसा २०५ डेव रविशोधन २०० गाढीकस्यो २१० नाडीव्रण
 १७६ प्रमेहः १७५ क्षमिति. १७६ कुष्ठादिचि. २०५ कौतुकादि २१० लोमशातनादि २१० कौतुक
 १७७ विदग्धगुल्म १७६ वानव्याधिनि. २०१ स्त्रीरोगचि. २०६ कौतुकं २ २१० विरिचवादि २१० गडिमात
 १७८ उदरनिदान १७६ वातरक्तनि. २०२ सिद्धयोगसारः २०६ स्त्रीवशीकरण २१० अर्शनाशः २२० सर्पव
 १७९ पांडुनि. १७६ योगसारः २०६ स्त्रीवशीकरण २१० अर्शनाशः २२० सर्पव
 १८० विसर्पनि. १८३ अन्नपानादिविधिः २४० तैलादि कल्पः २१० गणपति मंत्रः २२० वरंग
 १८३ विसर्पनि. १८३ अन्नपानादिविधिः २४० तैलादि कल्पः २१० गणपति मंत्रः २२० वरंग

औषधिनामानि २३३ समेकानि २४१ तर्पणविधिः २५० सर्पिणीकरण २५० कर्मविपाकः २६६ ध्यानस्तुति २२२ अर्चनसौत्रः २२२ गीतासारः २८५
 व्याकरणम् २३६ विषमाक्षराणि २४१ वैश्वदेवः २५१ धर्मसारः २६० अष्टांगयोगः २६२ विष्णोर्माहात्म्ये २२३ ब्रह्मज्ञानम् २८० पुराणमाहात्म्यम् २८६
 सिद्धोदाहरणी २३७ प्रस्तावादि २४१ संध्याविधिः २५२ प्रायश्चित्तानि २६० भगवद्भक्तिः २६६ नरसिंहस्तवः २२४ आत्मज्ञानं २८२ गरुडपुराणपदार्थाः २८६
 छंदः आर्यो २३६ स्तोत्राचारः २४१ पार्वणश्राद्ध २५३ युगधर्माः २६६ हरिमस्कारः २७० ज्ञानामृतः २७५ गीतासारं २८३
 विंगलः २३६ स्तोत्रविधिः २४१ नित्यश्राद्ध २५३ नैमित्तिकैष्वपि २६५ राजास्तुतिः २७१ मृत्पुष्पक २८६ ब्रह्मगीता २८५
 विंगलः २३६ स्तोत्रविधिः २४१ नित्यश्राद्ध २५३ नैमित्तिकैष्वपि २६५ राजास्तुतिः २७१ मृत्पुष्पक २८६ ब्रह्मगीता २८५
 विंगलः २३६ स्तोत्रविधिः २४१ नित्यश्राद्ध २५३ नैमित्तिकैष्वपि २६५ राजास्तुतिः २७१ मृत्पुष्पक २८६ ब्रह्मगीता २८५

350
337
13
—
367



2056 I